सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 155, नई दिल्ली, बुधवार 13 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 दिल्ली भाजपा द्वारा निकाली गई तिरंगा यात्रा से पूरी दिल्ली तिरंगामय हुई
06 आजादी के बाद से भारतीय संगीत की 78 साल की यात्रा
08 रेलवे की गैरजिम्मेदारी: लोहे का खंभा गिरने से छात्र की मौत

खबर का असर

एम.ए. मनोविज्ञान की पूर्णतया फर्जी मार्कशीट पर सहायक रोजगार अधिकारी (व्यावसायिक मार्गदर्शन) की नौकरी हासिल करने वाली आरोपी महिला सुनील कुमारी की रोजगार विभाग हरियाणा ने सेवाएं की समाप्त- विनोद कुमार

परिवहन विशेष न्यूज़ पेपर में प्रकाशित न्यूज़ रंग लाई।

परिवहन विशेष न्यूज़ पेपर में 17 मार्च 2025 को न्यूज प्रकाशित होने के बाद हरियाणा सरकार एवं रोजगार विभाग हरियाणा के उच्च अधिकारियों की खुली आँखे।

आरोपी महिला सुनील कुमारी के खिलाफ धोखाधड़ी से नौकरी हासिल करने के मामले में रोजगार विभाग हरियाणा द्वारा आज तक किसी प्रकार की कोई भी प्राथमिकी दर्ज नहीं करवाई गई ।

टोहाना/फतेहाबाद

आरटीआई कार्यकर्त्ता विनोद कुमार ने आरोप लगाया कि मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार में आरोपी महिला सुनील कुमारी द्वारा एम ए मनोविज्ञान की पूर्णतया फर्जी मार्कशीट पर सहायक रोजगार अधिकारी (व्यावसायिक मार्गदर्शन) की धोखाधड़ी से नौकरी हासिल करने के मामले में की अंजू चौधरी स्पेशल सचिव हरियाणा सरकार युवा अधिकारिता एवं उद्यमिता विभाग रोजगार निदेशालय हरियाणा द्वारा पत्र क्रमांक ए-15(184)/9826 दिनांकः-02 .07.2025 के तहत सेवाएं समाप्त कर दी गई। तथा आज तक किसी प्रकार की कोई भी प्राथमिकी दर्ज़ नहीं करवाई गई है। इससे स्पष्ट है कि रोजगार विभाग हरियाणा के उच्च अधिकारी भी आरोपी महिला के साथ मिले हुए है, इसलिए आरोपी महिला के खिलाफ धोखाधड़ी से नौकरी हासिल करने के मामले में आज तक किसी प्रकार की कोई भी प्राथमिकी दर्ज़ नहीं करवाई गई है।

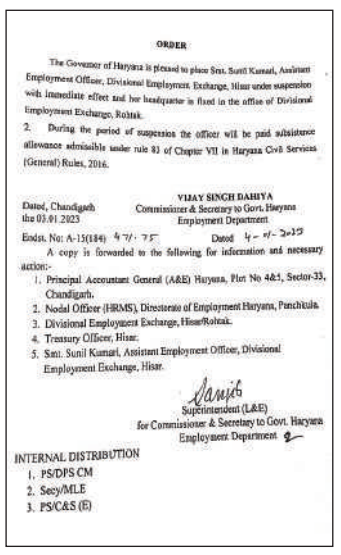

झूठा एवं तथ्यों को छिपाकर दिया घोषणा पत्र।

आरोपी महिला सुनील कुमारी द्वारा धोखाधड़ी करके, विभाग को गुमराह करने फर्जी दस्तावेज तैयार कर सहायक रोजगार अधिकारी व्यावसायिक मार्गदर्शन की नौकरी हासिल की गई है, नौकरी के दौरान दिए जाने वाले घोषणा पत्र में दावा किया है कि उसके सभी प्रमाण पत्र और दस्तावेज जानकारी व विश्वास के अनुसार सही, सत्य और पूर्ण है। लेकिन जिस एमए मनोविज्ञान के प्रमाण पत्र पर नौकरी हासिल की वही फर्जी है।

रोजगार विभाग हरियाणा में नियुक्ति।

हरियाणा लोक सेवा आयोग (एचपीएससी) की ओर से सहायक रोजगार अधिकारी व्यावसायिक मार्गदर्शन की पोस्ट के लिए वैकेंसी निकाली गई थी। उस समय आरोपी महिला सुनील कुमारी ने भी इस पद के लिए दिनांक 06.03.2012 को आवेदन किया था। विभाग की ओर से उस दौरान मास्टर डिग्री की क्वालिफिकेशन मांगी गई थी। जिस पर आरोपी महिला सुनील कुमारी की ओर से यहां एमए (साईक्लॉजी) दूरवर्ती मोड की सत्र 2009-2011 की मार्कशीट को दिया गया था। इसके बाद आरोपी महिला सुनील कुमारी का सिलेक्शन हो गया। एचपीएससी की तरफ से वाईड नंबर आर.जी.-1 /2011/11108 दिनांक 04.12.2013 के तहत नियुक्ति पत्र जारी कर दिया गया तथा उसके बाद आरोपी महिला सुनील कुमारी ने रोजगार विभाग हरियाणा के मंडल रोजगार कार्यालय हिसार में 18.02.2014 को ड्यूटी ज्वाइन की थी।

आरोपी महिला सुनील कुमारी को आयुक्त एवं सचिव हरियाणा सरकार रोजगार विभाग हरियाणा द्वारा किया जा चुका है निलंबित

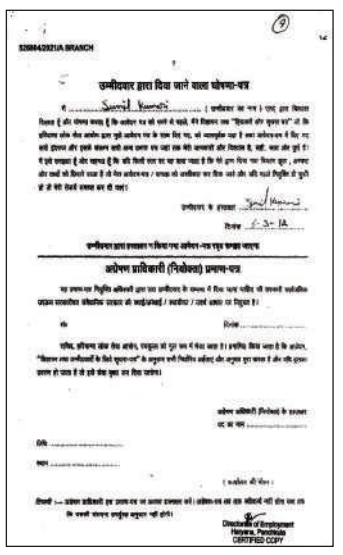

फर्जी मार्कशीट के आधार पर नौकरी हासिल करने के मामले में आरोपी महिला सुनील कुमारी को इंक्वायरी रिपोर्ट के आधार पर डिपार्टमेंट की ओर से को आयुक्त एवं सचिव हरियाणा सरकार रोजगार विभाग हरियाणा द्वारा पत्र क्रमांक ए-15(184) 471-75 दिनांकः-04.01.2023 के तहत निलंबित किया जा चुका है तथा हरियाणा सिविल सेवा (दण्ड तथा अपील) नियम, 2016 के अंतर्गत नियम-7 अधीन चार्जशीट जारी की जा चुकी है तथा शिकायत पर नियमानुसार अभीष्ट कार्यवाही प्रशस्त की जा चुकी है।

हरियाणा की राज्य सरकार को उचित कानूनी कार्यवाही करनी चाहिए।

फर्जी दस्तावेज के आधार पर धोखाधड़ी से नौकरी हासिल करने के मामले में हरियाणा सरकार द्वारा आरोपी महिला सुनील कुमारी के खिलाफ एफ़आईआर दर्ज करवाके लिए गए सभी लाभों की रिकवरी करनी चाहिए।

विनोद कुमार आरटीआई कार्यकर्ता

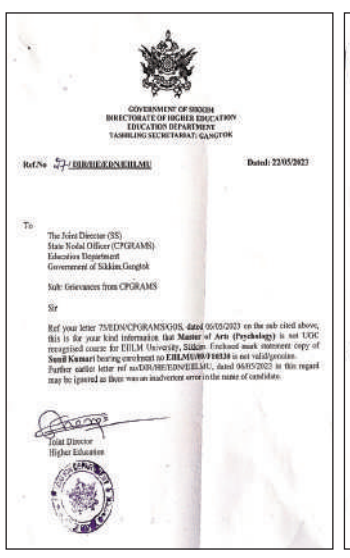

दिल्ली-एनसीआर में 10 साल पुरानी डीजल और 15 साल पुरानी पेट्रोल गाड़ी के खिलाफ फिलहाल कार्रवाई नहीं होगी: सुप्रीम कोर्ट

दिल्ली-एनसीआर में 10 साल पुरानी डीजल और 15 साल पुरानी पेट्रोल गाड़ी के खिलाफ फिलहाल कार्रवाई नहीं होगी। सुप्रीम कोर्ट ने एक बड़ा फैसला सुनाते हुए ऐसी गाड़ियों के खिलाफ एक्शन लेने से मना किया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि दिल्ली-एनसीआर में 10 साल पुरानी डीजल और 15 साल पुरानी पेट्रोल गाड़ियों के खिलाफ कोई एक्शन नहीं लिया जाएगा। हालांकि, इस मामले में 4 हफ्ते बाद सुप्रीम कोर्ट में

दिल्ली में 61 लाख से ज्यादा वाहनों का पंजीकरण रद

परिवहन विशेष न्यूज

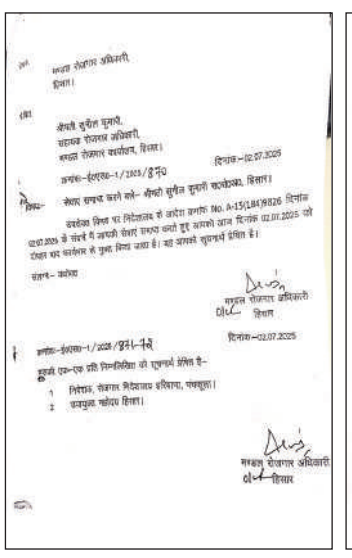

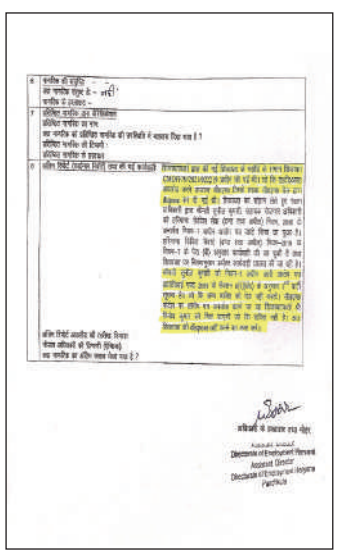

नई दिल्ली। करोलबाग निवासी कारोबारी अशोक गुप्ता के पास आज कई महंगी कारें हैं, मगर 2008 में खरीदी गई मारुति 800 को वह आज तक नहीं भूल पाए हैं। उनका परिवार इस कार को लकी कार मानता था, उनकी मानें तो इस कार के आने के बाद ही उनके दिन बदले थे। 2023 में 15 साल पूरे होने पर जब परिवहन विभाग की टीम घर के बाहर खड़ी कर को उठा ले गई तो उनके परिवार के लोग फूट फूट कर रो पड़े थे। यह कहानी केवल अशोक गुप्ता की नहीं है दिल्ली में रह रहे ऐसे तमाम लोगों की है जो अपनी कार को लकी मानते थे और अच्छी कंडीशन में रख रहे थे। मगर 2018 के बाद सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर जिस तरह से परिवहन विभाग ने दिल्ली में कार्रवाई की कई लोग इससे आहत हुए और ना चाहते हुए भी उन्हें अपने वाहन को स्क्रैप कराना पड़ा। सुप्रीम कोर्ट ने ऐसे तमाम लोगों को राहत देने के संकेत दे दिए हैं जो अपने वाहन को अच्छे हालात में रखते हैं। बता दें कि वायु प्रदूषण के खिलाफ अभियान के तहत 2018 से 10 साल पुराने डीजल व 15 साल पुराने पेट्रोल के वाहनों का पंजीकरण रद करना शुरू हुआ था। अभी तक 61,14,728 वाहनों का पंजीकरण रद हो चुका है। इनमें सबसे अधिक 41 लाख दो पहिया व 20 लाख चार पहिया वाहन शामिल हैं। 2018 से अब तक 80 हजार वाहनों को स्क्रैप किया जा चुका है। इस साल ही जनवरी से जून तक 18000 वाहन जब्त कर स्क्रैप किए गए। अब दिल्ली की सड़कों पर 82 लाख वाहन ही चलने लायक हैं। पूर्व की आप ने उम्र पूरी कर चुके वाहन मालिकों को तीन विकल्प दिए थे। वाहन मालिक परिवहन विभाग से अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) लेकर अपने वाहन को अन्य राज्यों में पंजीकृत करा लें, इन वाहनों को इलेक्ट्रिक में बदलवा लें या फिर इन्हें स्क्रैप (समाप्त) करा लें। हालांकि पूर्व की आप सरकार वाहनों को इलेक्ट्रिक में बदलाने के विकल्प को पूरा नहीं कर सकी। परिवहन विशेषज्ञ व परिवहन विभाग के पूर्व उपायुक्त अनिल छिकारा कहते हैं कि कोई अपना पुराना वाहन चलाना चाहता है, तो उसे अपना पुराना वाहन अपने जोखिम पर घर से निकालना होगा।

वह कहते हैं कि जिन वाहनों का पंजीकरण रद कर दिया गया है, उन्हें चलने की अनुमति नहीं दी गई है, क्योंकि उनके पास वैध पंजीकरण, पीयूसी और बीमा नहीं है। केवल स्क्रैप की कार्रवाई रोक दी गई है।

कृषि ट्रैक्टरों के अवैध व्यावसायिक दुरुपयोग के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग

चंद परिवहन अधिकारीयों व पुलिस विभाग के कर्मचारियों के शह के कारण ट्रक मालिक लोड मिलने से वँचित

परिवहन विशेष न्यूज

'उफ्तत्सा' राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा - ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी, परिवहन क्षेत्र में कार्यरत ट्रक चालकों, सिंगल मोटर मालिकों, और स्वरोजगार से जुड़े लोगों के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। संगठन ने हाल ही में कृषि कार्यों के लिए सब्सिडी पर दिए गए ट्रैक्टरों के अवैध व्यावसायिक उपयोग, विशेष रूप से रेत, बजरी, चीनी, दाल, साबुन,तेल, गेहूं, चावल और अन्य सामग्रियों की ढुलाई को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त की है। मुख्यतः हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, ओड़िशा, झारखण्ड, बिहार, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व अन्य राज्यों में सरकारी सब्सिडी व अन्य लाभ के तहत निकाले गए क़ृषि कार्य हेतु ट्रेक्टर से व्यवसायिक परिवहन सरकारी तंत्र के शह व फेलूअर के कारण आम बात है यह प्रेस नोट इस समस्या के तथ्यात्मक विवरण और संगठन की मांगों को रेखांकित करता है।

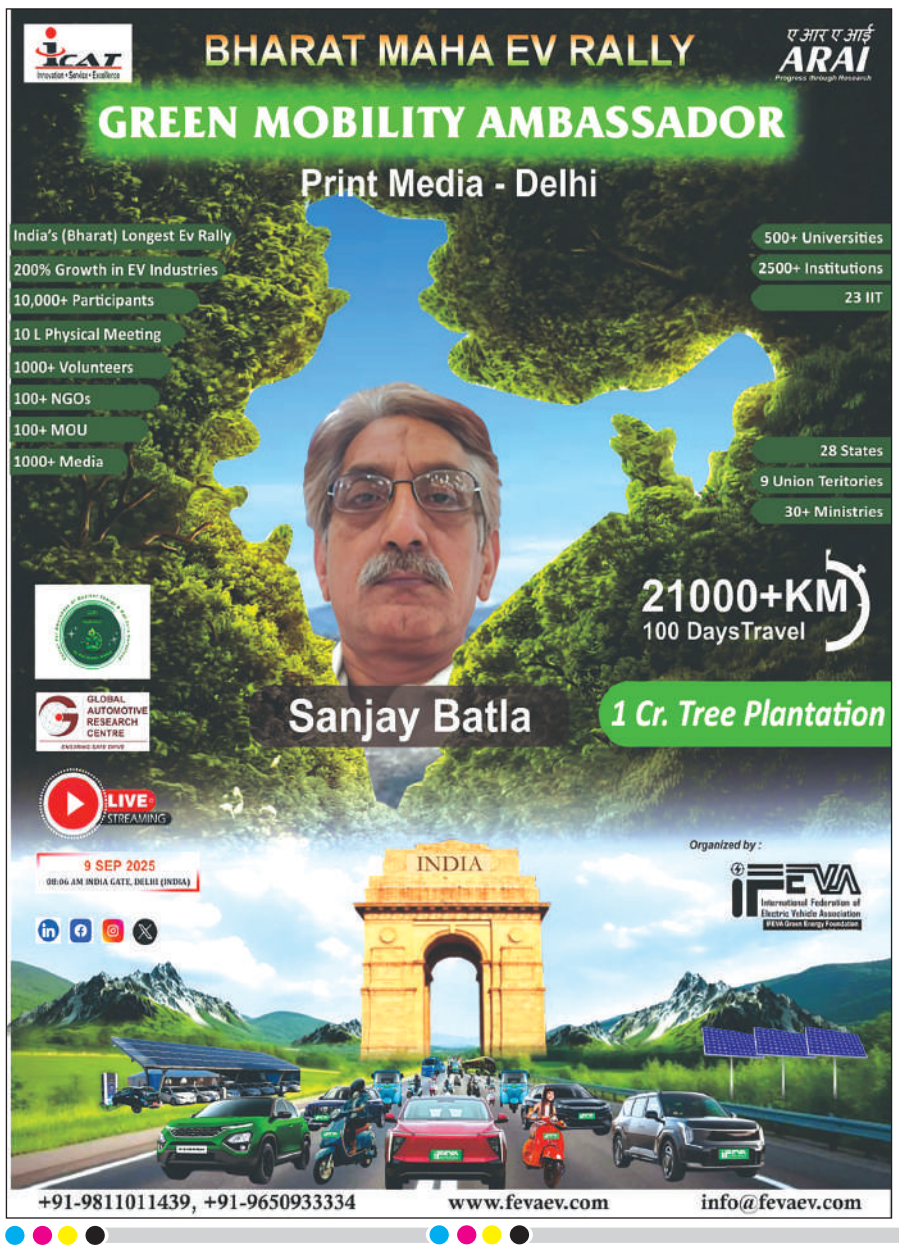

कृषि ट्रैक्टरों का व्यावसायिक दुरुपयोगः सरकार द्वारा किसानों को दी जाने वाली सब्सिडी और टोल टैक्स छूट, सिमित रोड़ टैक्स, कम दर पर बीमा व अन्य अवांछित सुविधाओं का लाभ उठाकर ट्रैक्टरों का उपयोग अवैध रूप से चंद परिवहन अधिकारीयों व पुलिस विभाग के कर्मचारियों के शह पर व्यावसायिक ढुलाई के लिए लगातार किया जा रहा है।

यमुनानगर, हरियाणाः यमुना नदी के किनारे अवैध रेत खनन में ट्रैक्टरों का बड़े पैमाने पर उपयोग हो रहा है। स्थानीय प्रशासन ने हाल ही में 10 ट्रैक्टर जब्त किए, जो बिना परमिट के रेत और बजरी ढो रहे थे किन्तु कोई दृस्टिगोचर कार्रवाई नहीं हो पाई।यह गतिविधि न केवल पर्यावरण को नुकसान पहुंचाती है, बल्कि वैध ट्रक ट्रांसपोर्टरों के व्यवसाय को भी सीधे तौर पर प्रभावित करती है।

मेरठ, उत्तर प्रदेशः ट्रैक्टरों का उपयोग चीनी और दाल जैसी खाद्य सामग्रियों की अवैध ढुलाई और काले बाजार में बिक्री के लिए दर्ज किया गया है। 2024 में मेरठ पुलिस ने एक ट्रैक्टर से 50 बोरी चीनी जब्त की, जो स्थानीय गोदामों से अवैध रूप से ले जाई जा रही थी।

टोल टैक्स छूट का दुरुपयोगः कृषि कार्यों के लिए ट्रैक्टरों को टोल टैक्स से छूट प्राप्त है, जिसका गलत फायदा उठाया जा रहा है। टोल नाकों पर ट्रैक्टरों की जांच नहीं की जाती, जिससे अवैध सामग्रियों की ढुलाई आसान हो जाती है।

दिल्ली-हरियाणा सीमाः राष्ट्रीय राजमार्ग-44 पर ट्रैक्टरों द्वारा साबुन, गत्ते, प्लाई और अन्य उपभोक्ता सामग्रियों की ढुलाई की शिकायतें मिली हैं, जो टोल टैक्स बचाने के लिए की जा रही हैं। इससे टोल राजस्व को प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये का नुकसान हो रहा है।

आर्थिक प्रभावः अवैध ढुलाई से वैध ट्रक ट्रांसपोर्टरों का व्यवसाय प्रभावित हो रहा है, क्योंकि ट्रैक्टरों का परिवहन लागत कम होने से व पांच से छः गुना ओवरलोड से ग्राहक उनकी ओर आकर्षित होते हैं।

पर्यावरणीय क्षतिः रेत और बजरी का अवैध खनन नदियों के पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट कर रहा है, जिससे बाढ़ और मिट्टी का कटाव बढ़ रहा है। उदाहरण के लिए, यमुना और गंगा नदी के किनारे अवैध खनन के कारण नदी तटों का क्षरण तेजी से हुआ है।

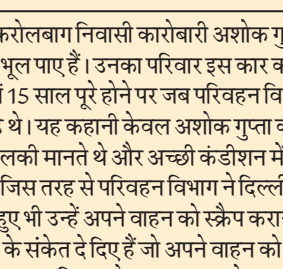

संगठन की मांगें -'उफ्तत्सा' राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा इस गंभीर समस्या के समाधान के लिए निम्नलिखित मांग करता हैः

सख्त निगरानी तंत्रः ट्रैक्टरों के उपयोग की निगरानी के लिए जीपीएस ट्रैकिंग और डिजिटल रजिस्ट्रेशन सिस्टम लागू किया जाए।

टोल नाकों पर जांचः टोल प्लाजा पर ट्रैक्टरों की लोडिंग और उपयोग की नियमित जांच के लिए विशेष टीमें गठित की जाएं।

कानूनी कार्रवाईः अवैध ढुलाई और खनन में शामिल व्यक्तियों और संगठनों के खिलाफ मोटर वाहन अधिनियम और पर्यावरण संरक्षण अधिनियम के तहत कठोर कार्रवाई की जाए।

सब्सिडी में पारदर्शिताः कृषि सब्सिडी केवल वास्तविक किसानों तक पहुंचे, इसके लिए डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) और आधार-लिंक्ड सत्यापन लागू किया जाए। सब्सिडी प्राप्त ट्रेक्टरों द्वारा व्यवसायिक परिवहन करते हुए पकड़े जाने पर ट्रेक्टर मालिकों पर भारी जुर्माना करते हुए सब्सिडी की राशि वापस लेकर उस राशि पर भी भारी जुर्माने का प्रावधान हो एंव उस ट्रेक्टर को स्क्रैप करने हेतु अनुसंशा किया जाये।

जागरूकता अभियानः किसानों और ट्रांसपोर्टरों को सब्सिडी और सुविधाओं के सही उपयोग के बारे में जागरूक करने के लिए अभियान चलाए जाएं।

आगामी कदम -संगठन ने इस मुद्दे को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता अभियान और आंदोलन शुरू करने का फैसला किया है।जिसमें देशभर के ट्रक ट्रांसपोर्टर और छोटे वाहन मालिक हिस्सा लेकर अपने अपने तालुका,प्रमंडल, जिले, कमीस्नरी व राज्य में इसे प्रसारित व प्रचारित कर इस पर रोक लगाने का कार्य करेंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने कहा, "कृषि ट्रैक्टरों का दुरुपयोग न केवल सरकारी संसाधनों का अपव्यय है, बल्कि यह छोटे ट्रांसपोर्टरों की आजीविका पर भी सीधा सीधा हमला है। हम इस अन्याय के खिलाफ लड़ाई मजबूती से जारी रखेंगे व इसे खत्म करेंगे"

डॉ. राजकुमार यादव, राष्ट्रीय अध्यक्ष
ईमेल:RASHTRIYAsanyukta morcha@gmail.com
'उफ्तत्सा' राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा - ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी, परिवहन क्षेत्र में पारदर्शिता, निष्पक्षता, और समानता के लिए प्रतिबद्ध है।
हम सरकार और प्रशासन से इस गंभीर मुद्दे पर तत्काल कार्रवाई की अपेक्षा करते हैं।

खुलेआम शांतिप्रिय देश में वोट चोरी हो रही हैं और ये विदेशी गुलाम ऊछल-कूद के, हंस-हंस के, ताली बजा बजा के, अपने बंग्लादेशी घुसपैथियों को सपोर्ट कर रहें हैं।

देशहित में मजदूर दलित बोलें -- पुरे देश में अबैध बंग्लादेशी घुसपैथियों पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाएं तभी हमारा देश सुरक्षित रहेगा।

देश में बंग्लादेशी घुसपैथियों द्वारा वोट चोरी हो रही हैं - सरकार से हमारी अपील हैं कि इस चोरी को पुरे देश में तत्काल रोका जाएं - देश अब ये चोरी किसी भी हालत में बर्दास्त नहीं करेगा।

भारत देश के खिलाफ़ सांस लें रहें जिन गुलाम तत्वों को बंग्लादेशी घुसपैथियों से प्रेम हैं, वो इन सभी को अपने घर लें जाएं खिलाएं - पिलायें लेक़नि हमारे देश के कमजोर गरीब लोगों को बेरोजगार ना बनाएं।

ना नहीं, देश के संसाधनों एवं सरकारी सुबिधाओं की चोरी इनसे करबाएँ और ना नहीं, इनसे हमारे देश के गरीबों के हक़-अधिकार छीनबाएँ और ना ही वोट चोरी कराएं।

क्युकी घुसपैथियों के द्वारा कमजोर ग़रीब वर्ग के हक़ - अधिकारों की चोरी की जा रही हैं, ये देश हमारा हैं, इसे हम घुसपैथियों के लिए धर्मशाला नहीं बनने देंगे।

आगरा, संजय साग़र सिंह। आज़ हर घर तिरंगा यात्रा के बाद बंगलादेशी घुसपैथियों द्वारा की जारही वोट चोरी की चर्चा में दलित मजदूर वर्ग के वोटरों ने बताया कि अबैध शरणार्थीयों एवं बांग्लादेशी घुसपैठियों और फर्जी तत्वों के द्वारा कमजोर, ग़रीब दलित वर्ग के वोट चोरी की सच्चाई सबके सामने आ गई है,और ये सभी ऊछल-कूद के हंस-हंस के ताली बजा के घुसपैथियों को सपोर्ट कर रहें हैं। घुसपैठियों और फर्जी तत्वों के लिए इनके दर्द को देखकर लगता हैं कि ये इनके गुलाम है, और इनके लिए घुसपैठिये कितने ज़रूरी हैं, लगता है, इनका पूरा चुनावी गणित एवं समीकरण इन्हीं पर टिका हुआ हैं, उनके वोटर लिस्ट से नाम हटने पर तभी इनको डर हो रहा हैं। लेक़नि ये अब देशहित में, बाबा साहब के बनाएं संविधान को बचाने की गंभीर लड़ाई है, क्युकी कमजोर ग़रीब वर्गों का खुलेआम वोट चुरा रहें अबैध शरणार्थीयों एवं बांग्लादेशी घुसपैठियों और फर्जी तत्वों के खिलाफ़ अपने हक़ और अधिकार बचाने एवं देश को सुरक्षित रखने की सीधी लड़ाई हैं। हम गरीबों के हक़, अधिकार और देश के संसाधनों को घुसपैथियों को चोरी नहीं करने देंगे। ये देश हमारा हैं, अपने देश को हम घुसपैथियों के लिए धर्मशाला नहीं बनने देंगे। अपने देश में घुसपैथियों द्वारा वोट चोरी नहीं होने देंगे। हमें साफ वोटर लिस्ट चाहिए। हमें घुसपैथियों को वोटर लिस्ट से हटाए जाने बाली साफ सुथरी वोटर लिस्ट चाहिए।

उन्होंने आगे बताया कि भारत देश के खिलाफ़ सांस लें रहें जिन गुलाम तत्वों को अपने प्रिय घुसपैथियों से प्रेम हैं, वो इन सभी को अपने घर लें जाएं खिलाएं पिलायें लेक़नि हमारे देश के कमजोर, गरीब लोगों को बेरोजगार ना बनाएं। ना नहीं, देश के संसाधनों एवं सरकारी सुबिधाओं की चोरी करबाएँ और ना नहीं, हमारे देश के गरीबों के हक़-अधिकार छीनबाएँ और ना ही वोट चोरी कराएं। देश में बंग्लादेशी घुसपैथियों द्वारा खुलेआम वोट चोरी हो रही हैं, और

बंग्लादेशी घुसपैथियों के गुलाम भी इस चोरी में शामिल हैं। देशहित में सरकार से हमारी अपील हैं कि इस चोरी को पुरे देश में तत्काल रोका जाएं। देश अब ये चोरी किसी भी हालत में बर्दास्त नहीं करेगा। इसलिए देशहित में पुरे देश में बंग्लादेशी घुसपैथियों और इनके गुलामों पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाएं तभी हमारा देश सुरक्षित रहेगा।

जिन विदेशी गुलामों को बंगलादेशी घुसपैठियों से लगाव है, तो उन्हें अपने घर क्यों नहीं लें जाते?

मजदूर दलित वर्ग के वोटरों ने भारत देश के खिलाफ़ सांस लें रहें गुलाम तत्वों पर घुसपैठियों को नयी पहचान देने की कोशिश करने का आरोप लगाया और कहा कि अगर बंगलादेशी घुसपैठियों के गुलाम नेताओं और पार्टी को अपने घुसपैठियों से इतना ही लगाव है, तो उन्हें अपने घर और पार्टी दफ्तर क्यों नहीं भेज देते और इनको अपने घर-परिवार में उन्हें जगह देनी चाहिए, क्योंकि हमारे देश में घुसपैठियों के लिए कोई जगह नहीं। उन्होंने यह भी बताया कि कही कही इनके कारण मूल निवासीयों के लिए पर्याप्त संसाधन या जगह नहीं है, तो नए घुसपैठियों को कैसे समायोजित किया जा सकता है। इनके कारण अब तो स्थिति ऐसी हैं कि कई जगह न तो जमीन है, न जगह, न घर, न रोज़गार हैं। जो सुबिधायें देश में रह रहें कमजोर ग़रीब वर्ग के लिए हैं, वो हम इनको पर्याप्त सुविधाएं नहीं दे सकते। ये संबिधान के खिलाफ़ हैं। ऐसे में हम इन बांग्लादेशी घुसपैथियों को ग़रीब कमजोर दलित वर्ग को दी जाने बाली ये सुविधाएं कैसे दे सकते हैं?

साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि लेक़नि संबिधान विरोधी नेता और पार्टियां एवं उनके सहयोगी ईको सिस्टम 19 चाहता हैं कि हम घुसपैठियों को वोट देने का अधिकार दें। इनको देश और देश के संविधान पर भरोसा नहीं है। ये हमारे भारत में खाते कमाते हैं, सभी सुबिधायें लेते हैं, यही राजनीति भी करते हैं लेक़नि साथ देते हैं हमारे देश के दुश्मन पाकिस्तान और बांग्लादेश का। ऐसे धोखेबाज, मक्कारों और गद्दार गुलामों को तो शर्म से डूबकर मर जाना चाहिए। अगर उनकी यही विदेशी ग़ुलामी की आदत रही तो ये सभी देश के अंदर ही देशविरोधी कहलाएंगे। इनको बाबा साहब के संविधान का ज्ञान नहीं है। तभी पागल गुलामों की तरह बेबुनियाद और गैर जिम्मेदार बात करते हैं। ये विदेशी गुलाम क्या कहना चाहते हैं कि हमें अपने देश में बांग्लादेशी घुसपैठियों को वोट का अधिकार देना चाहिए, जो संबिधान में अवैध हैं, उन्हें वोट देने का अधिकार कभी नहीं मिलना चाहिए।

उन्होंने बताया कि अगर इन विदेशी गुलामों में हिम्मत और ताकत है, तो चुनाव आयोग और माननीय उच्च न्यायालय को ये बांग्लादेशी घुसपैठियों के गुलाम सूची क्यों नहीं दे रहे? जिसमें इन गुलामों ने दावा किया है। क्या ये सब गुलाम मिलकर ये सोचते हैं कि रोज़ रोज़ झूठ बोलते रहेंगे, तो सफ़ेद झूठ सच हो जाएगा? लेकिन सफ़ेद झूठ तो हमेशा झूठ ही रहेगा। जबकि मतदाता सूची से सही लोगों को नहीं, बल्कि जिनका दो दो बार नाम था, सिर्फ उन्हीं का नाम हटाया गया है। क्योंकि ये बंगलादेशियों के गुलाम, घुसपैठियों को वोट का अधिकार दिलाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते है। इसीलिए पुरे भारत देश में छुपे 6 करोड़ से ज्यादा अबैध शरणार्थीयों एवं बांग्लादेशी घुसपैठियों और फर्जी तत्वों के बंगाल सहित अन्य जगाहों से फ़र्ज़ी राशन कार्ड, ड्राइविंग कार्ड, वोटर कार्ड और आधार कार्ड व अन्य कागजात बनबा के बांग्लादेशी घुसपैठियों के गुलाम खुलेआम वोट चोरी करा रहें हैं।

आखिर में उन्होंने बताया कि लेक़नि भारत देश के खिलाफ़ सांस लें रहें ये विदेशी गुलाम नेता कहा तक गिरेगें? ये ग़रीब जनता की समझ में आ गया हैं। क्युकी ये गुलाम अपनी पार्टी में स्थान सुरक्षित करने के लिए अब अबैध शरणार्थीयों एवं बांग्लादेशी घुसपैठियों और फर्जी तत्वों पक्ष में संबिधान विरोधी बयान दे रहे हैं। आज इन गुलामों की हालात ऐसी हो गई है, उन्हें चुनावी जीत के लिए बांग्लादेशी घुसपैठियों और फर्जी तत्वों को अपनी प्रतिबद्धता दिखानी पड़ रही है और इनको बचाने के लिए सोशल मीडिया पर अमर्यादित शब्दों का इस्तेमाल कर बेमतलब का देश विरोधी ज्ञान दें रहें हैं। आज घुसपैठियों को बचाने वाली इन सभी विदेशी गुलाम पार्टी और नेताओं का स्तर इतना गिर गया है कि ये पूरी तरह से देश के क़ानून की सीमाओं को लांघ चुके है। अब आगे देखना ये हैं कि इन विदेशी गुलामों की निम्न स्तर की गिरी राजनीति इन्हें कहा तक लेकर जाएगी। भारत देश के खिलाफ़ सांस लें रहें ये गुलाम नेता कहा तक गिरेंगे ये देश की ग़रीब जनता रोज़ ध्यान से इनके कारनामें देख रही हैं और इन सभी विदेशी गुलामों को आने बाले चुनावों में बहुत बुरी हराकर इस मक्कारी और गद्दारी का करारा जबाब देगी, तब जाके इन गुलामों की अक्ल ठिकाने आएगी।

#हार्टअटैक_और_विट्ठल_नाम-

पूरे महाराष्ट्र में ₹श्रीविठ्ठल₹ की पूजा होती है।

विठ्ठल के हाथ कमर पर होते हैं। पंढरपुर की विठ्ठल की मूर्ति को ध्यान से देखने पर हाथ की अंगुलियाँ ऊपर की ओर होती हैं। यदि इसे वैद्यकीय दृष्टिकोण से देखा जाए, तो दायाँ तला लिवर पर और बायाँ तला स्प्लीन पर होता है। शरीर के चुंबकीय विज्ञान को ध्यान में रखते हुए दायाँ तला दक्षिण ध्रुव और बायाँ तला उत्तर ध्रुव होता है।

पेट में गैस होने पर वह छाती में जाने लगती है, जिससे छाती में दर्द होता है और इसी से हार्टअटैक का खतरा होता है। इस समय विठ्ठल की तरह दोनों पसलियों के नीचे हाथ रखने पर गैस लिवर की तरफ जाती है और बाहर निकलती है। वह छाती में नहीं जाती।

इसी प्रकार ₹वर्ड वाइब्रेशन थेरेपी₹ का विचार करते समय 'ट' और 'ठ' अक्षरों को अनुस्वार के साथ बोलने पर हार्ट की सुरक्षा होती है। विठ्ठल बोलते समय ₹ठ₹ डबल होता है। इसलिए जब छाती में दर्द हो या प्रेशर हो, तो ₹विठ्ठल विठ्ठल₹ कहना चाहिए। इससे 5-10 मिनट में राहत मिलती है।

ये सब श्री. वैद्य से चर्चा करते समय समझ आया। पिछला ही अनुभव बता रहा हूँ। परसों रात 11 बजे छाती में बहुत दर्द हो रहा था। (वैद्य की 5-7 साल पहले ओपन हार्ट सर्जरी हुई थी)। यदि पत्नी या माँ को बताया होता, तो उन्होंने मुझे अस्पताल ले गए होते। कुछ नहीं, उठकर बालकनी में गया और आपके कहे अनुसार विठ्ठल की तरह दोनों पसलियों के नीचे हाथ रखकर खड़ा हो गया और 'जयहरी विठ्ठल' कहने लगा। पाँच मिनट में दो जोरदार गैस निकली और छाती का दर्द खत्म हो गया। फिर कभी छाती में दर्द नहीं हुआ, धन्यवाद।

मैंने सातार की एक महिला को छाती में दर्द होने पर ₹ठ₹ और ₹ठ₹ अक्षरों को अनुस्वार के साथ बोलने को कहा। वह बोलीं, यह अक्षर याद कैसे रहेंगे? मैंने कहा, ₹विठ्ठल₹ कहो। चर्चा वहीं खत्म हो गई।

दो ही दिन बाद उस महिला की छाती में दर्द हुआ। उस समय उन्हें उस चर्चा का विठ्ठल याद आया! और वह बस ₹विठ्ठल विठ्ठल₹ कहने लगीं। और छाती का दर्द बंद हो गया। उन्होंने मेरी बेटी को (वह सातार में रहती है) फोन करके यह अनुभव बताया। सासूजी को रात 1:30 बजे हार्टअटैक हुआ। सासूजी ने हमें उठाया और बताया कि छाती में बहुत दर्द हो रहा है। उन्हें पूरे शरीर में पसीना आ रहा था, इसलिए पंखा जोर से चलाया था। हमें वह पंखा परेशान कर रहा था। उनका बायाँ हाथ भी दर्द कर रहा था (यह हार्टअटैक के लक्षण हैं)। मैंने उनके लिवर पर चुंबक का दक्षिण ध्रुव और स्प्लीन पर उत्तर ध्रुव रखा। उन्हें अपानवायुमुद्रा करने को कहा और मुँह से ₹जय हरी विठ्ठल₹ जोर से कहने को कहा। 15-20 मिनट में पसीना रुक गया और उन्होंने पंखा बंद करने को कहा। बायाँ हाथ और छाती का दर्द खत्म हो गया। रात 2 बजे हम सब सो गए। उन्हें डर न लगे इसलिए यह हार्टअटैक था यह उन्हें चार दिन बाद बताया।

महाराष्ट्र में आषाढ़ मास में भारी बारिश होती है, जिससे पाचन शक्ति मंद होती है और गैस होती है। इसलिए पंढरी की वारी होती है। इसका मतलब विठ्ठल नाम का जप। हमारे पूर्वज कितने बुद्धिमान थे देखो - राम, कृष्ण, विठ्ठल, व्यंकटेश ये सभी विष्णु के रूप हैं, लेकिन महाराष्ट्र के मौसम के अनुसार हमारा देवता विठ्ठल है - आम जनता का सहज आरोग्य।

सिर्फ इस जानकारी से उन्होंने समाज का हित देखा, खुद पैसा नहीं कमाया, इसलिए वे अज्ञानी थे क्या? यदि सच में आप इस कथन पर 100% विश्वास रखते हैं, तो निर्भीकता से ₹विठ्ठल !!! विठ्ठल !!! विठ्ठल !!!₹ 108 बार रोज तीन बार कहें और 45 दिनों में अपने कोलेस्ट्रॉल / हृदय के सभी विकार गायब देखें। दवा बिन पैसे की है लेकिन बहुत गुणकारी है। और हाँ, यदि आप नास्तिक भी हैं, तो भी इसे आजमाएं। आखिरकार, जीवन की रक्षा महत्वपूर्ण है,

है ना... !!!

जब कभी भी किसी जरूरतमंद पर ऐसी परिस्थिति आए, तो इस ₹विठ्ठल₹ जप को याद करके जरूर आजमाएं।

बोलो जय हरी विठ्ठल

सनातन_हिन्दू_काल_गणना;

प्राचीन हिन्दू धार्मिक और पौराणिक वर्णित समय चक्र आश्चर्यजनक रूप से एक समान हैं।

प्राचीन भारतीय मापन पद्धतियां, अभी भी प्रयोग में हैं।
(मुख्यतः मूल सनातन हिन्दू धर्म के धार्मिक उद्देश्यों में)।

इसके साथ साथ ही हिन्दू वैदिक ग्रन्थों में लम्बाई-क्षेत्र-भार मापन की भी इकाइयाँ परिमाण सहित उल्लेखित हैं।
यह सभी योग में भी प्रयोग में हैं।

हिन्दू समय चक्र सूर्य सिद्धांत के पहले अध्याय के श्लोक 11–23 में आते हैं।

(श्लोक 11) वह जो कि श्वास (प्राण) से आरम्भ होता है, यथार्थ कहलाता है;
और वह जो त्रुटि से आरम्भ होता है, अवास्तविक कहलाता है।

छः श्वास से एक विनाड़ी बनती है।
साठ श्वासों से एक नाड़ी बनती है।

(श्लोक 12) और साठ नाड़ियों से एक दिवस (दिन और रात्रि) बनते हैं।
तीस दिवसों से एक मास (महीना) बनता है।
एक नागरिक (सावन) मास सूर्योदयों की संख्याओं के बराबर होता है।

(श्लोक 13) एक चंद्र मास, उतनी चंद्र तिथियों से बनता है।
एक सौर मास सूर्य के राशि में प्रवेश से निश्चित होता है।
बारह मास एक वर्ष बनाते हैं।
एक वर्ष को देवताओं का एक दिवस कहते हैं।

(श्लोक 14) देवताओं और दैत्यों के दिन और रात्रि पारस्परिक उलटे होते हैं।
उनके छः गुणा साठ देवताओं के (दिव्य) वर्ष होते हैं।
ऐसे ही दैत्यों के भी होते हैं।

(श्लोक 15) बारह सहस्र (हज़ार) दिव्य वर्षों को एक चतुर्युग कहते हैं।
यह तैंतालीस लाख बीस हज़ार सौर वर्षों का होता है।

(श्लोक 16) चतुर्युगी की उषा और संध्या काल होते हैं।
कृतयुग या सतयुग और अन्य युगों का अन्तर, जैसे मापा जाता है, वह इस प्रकार है,

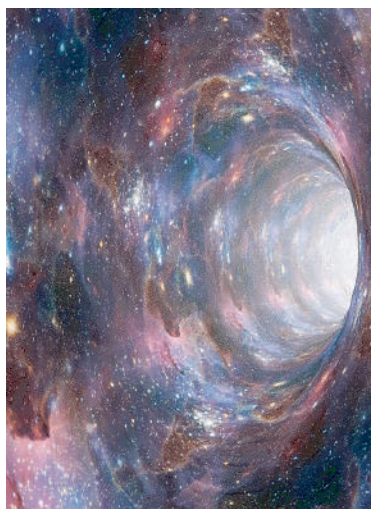

जो कि चरणों में होता है:

(श्लोक 17) एक चतुर्युगी का दशांश को क्रमशः चार, तीन, दो और एक से गुणा करने पर कृतयुग और अन्य युगों की अवधि मिलती है।
इन सभी का छठा भाग इनकी उषा और संध्या होता है।

(श्लोक 18) इकहत्तर चतुर्युगी एक मन्वन्तर या एक मनु की आयु होती हैं।
इसके अन्त पर संध्या होती है, जिसकी अवधि एक सतयुग के बराबर होती है और यह प्रलय होती है।

(श्लोक 19) एक कल्प में चौदह मन्वन्तर होते हैं, अपनी संध्याओं के साथ; प्रत्येक कल्प के आरम्भ में पंद्रहवीं संध्या/उषा होती है।
यह भी सतयुग के बराबर ही होती है।

(श्लोक 20) एक कल्प में, एक हज़ार चतुर्युगी होते हैं और फ़िर एक प्रलय होती है।
यह ब्रह्मा का एक दिन होता है।
इसके बाद इतनी ही लम्बी रात्रि भी होती है।

(श्लोक 21) इस दिन और रात्रि के आकलन से उनकी आयु एक सौ वर्ष होती है; उनकी आधी आयु निकल चुकी है और शेष में से यह प्रथम कल्प है।

(श्लोक 22) इस कल्प में, छः मनु अपनी संध्याओं समेत निकल चुके, अब सातवें मनु (वैवस्वतः विवस्वान (सूर्य) के पुत्र) की सत्ताईसवीं चतुर्युगी बीत चुकी है।

(श्लोक 23) वर्तमान में, अट्ठाईसवीं चतुर्युगी का द्वापर युग बीत चुका है तथा भगवान कृष्ण के अवतार समाप्ति से ५१२४वाँ वर्ष (ईस्वी सन २०२२ में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से) प्रगतिशील है।
कलियुग की कुल अवधि ४,३२,००० वर्ष है।

वर्तमान_तिथि;
हम वर्तमान में वर्तमान ब्रह्मा के इक्यावनवें वर्ष में सातवें मनु, वैवस्वत मनु के शासन में श्वेतवाराह कल्प के द्वितीय परार्ध में, अट्ठाईसवें कलियुग के प्रथम वर्ष के प्रथम दिवस में विक्रम संवत 2082 में हैं।

इस प्रकार अबतक १५ नील, ५५ खरब, २१ अरब, ९७ करोड़, १९ लाख, ६१ हज़ार, ६२६ वर्ष इस ब्रह्मा को सृजित हुए हो गये हैं।

ग्रेगोरियन कैलेण्डर के अनुसार वर्तमान कलियुग दिनाँक 17 फरवरी / 18 फरवरी को 3102 ई० पू० में हुआ था।

इस बात को वेदांग ज्योतिष के व्याख्याकार नहीं मानते।

उनका कहना है कि यह समय महाभारत के युद्ध का है।

इसके ३६ साल बाद यदुवंश का विनाश हुआ और उसी दिन से वास्तविक कलियुग प्रारम्भ हुआ।

इस गणित से आज (इस पोस्ट लेखन के दिन) वि० सं० २०७९।४।१५ दिनांक को कलिसंवत ५०८१।८वें मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि चल रही है।

ब्रह्मा जी के एक दिन में १४ इन्द्र मर जाते हैं और इनकी जगह नए देवता इन्द्र का स्थान लेते हैं।

इतनी ही बड़ी ब्रह्मा की रात्रि होती है।
दिन की इस गणना के आधार पर ब्रह्मा की आयु १०० वर्ष होती है फिर ब्रह्मा मर जाते है और दूसरा देवता ब्रह्मा का स्थान ग्रहण करते हैं। ब्रह्मा की आयु के बराबर विष्णु का एक दिन होता है।

इस आधार पर विष्णु जी की आयु १०० वर्ष है।
विष्णु जी १०० वर्ष का शंकर जी का एक दिन होता है।

इस दिन और रात के अनुसार शंकर जी की आयु १०० वर्ष होती है।

जयति पुण्य सनातन संस्कृति

सूखे और फटे होंठ का घरेलू उपचार

सूखे और फटे होंठ आज एक आम समस्या है और यह काफी अनाकर्षक एवं दर्दनाक होते हैं। फटे होंठों के मुख्य लक्षण होते हैं सूखापन, होंठ लाल होना एवं होंठों में जलन। सूखे होंठों के कई कारक होते हैं जैसे धूप में ज़्यादा देर तक रहना, होंठों को जीभ से चाटना, खानपान या दवा की एलर्जी, अतिरिक्त ठण्ड एवं विटामिन की कमी आदि।

बाज़ार में फटे होंठों को ठीक करने की कई क्रीम्स और दवाइयाँ मौजूद हैं। कुछ सस्ते और असरदार घरेलू नुस्खे भी हैं जिनसे आप अपने फटे होंठों का इलाज कर सकते हैं।

1. छाछ से निकले मक्खन में केसर मिलाकर होंठो पर लगाने से होंठ गुलाबी और मुलायम होते हैं और फटना बंद हो जाते हैं।

२. सर्दी में होंठ फटने की समस्या बच्चों और बड़ों सभी में आम होती है। इसके कई कारण हो सकते हैं जैसे शरीर में पानी की कमी, एलर्जी या विटामिन-बी और आयरन की कमी हो सकती है। विशेषज्ञ को दिखाने के अलावा आप कुछ घरेलू नुस्खे अपना सकते हैं। कुछ बातों का ख्याल रख होठों को फटने से बचाया जा सकता है-

घी में थोड़ा नमक मिलाइए और इसे दिन में दो बार होंठो और नाभि पर आहिस्ता से लगाइए।

४. बादाम का तेल रोजाना होंठो पर लगाने से भी आपके होंठ नहीं फटेंगे। इस तेल की मालिश होंठो पर हल्के हाथों से कीजिए।

५. दूध की मलाई लें और इसमें थोड़ हल्दी पाउडर मिलाइए। दिन में दो बार इस पेस्ट की मालिश अपने होंठो पर कीजिए।

६. आपकी त्वचा की तरह आपके होठों को भी नमी की जरूरत होती है, इसलिए पानी, फल और सब्जियों का खूब सेवन करें।

७. होंठ बेजान हो गए हैं तो गुलाब के फूल की पत्तियां पीस कर इसमें ग्लिसरीन मिला लें। इस मिश्रण को होंठो पर लगाएं।

८. छाछ से निकले मक्खन में केसर मिलाकर होंठो पर लगाने से होंठ गुलाबी और मुलायम होते हैं और फटना बंद हो जाते हैं।

९. सरसों के तेल में हल्दी पाउडर मिलाकर होंठो और नाभि में लगाने से फटे होंठ नहीं फटते हैं।

१०. दिन में भी होठों पर शिया बटर लगाएं। यह एसपीएफ के गुणों से समृद्ध होता है और होठों को पोषण देता है।

११. बाहर जाते समय एसपीएफ युक्त लिप ग्लॉस लगाएं क्योंकि आपकी त्वचा की तरह धूप आपके होठों को भी नुकसान पहुंचा सकते हैं। होंठ काले पड़ सकते हैं।

१२. आपकी त्वचा की तरह आपके होठों को भी नमी की जरूरत होती है, इसलिए पानी, फल और सब्जियों का खूब सेवन करें।

१३. रूखे व फटे होठों पर शहद और चीनी से बना स्क्रब लगाएं। यह मिश्रण सौम्यता से रूखापन दूर कर देगा। शहद होठों की कोमलता बरकरार रखता है।

१४. शहद (Honey) शहद में काफी एंटी बैक्टीरियल तत्त्व होते हैं जो फटे होंठों को असरदार तरीके से ठीक कर सकते हैं। अपने होंठों पर रोज़ाना कई बार शहद का लेप लगाएं। सोने से पहले शहद और ग्लिसरीन का पेस्ट बनाकर होंठों पर लगाएं।

१५. गुलाब की पंखुड़ी (Rose Petals) फटे होंठ ठीक करने के बेहतरीन नुस्खे गुलाब की पंखुड़ियों को दूध या ग्लिसरीन में भिगोएं एवं इसका पेस्ट बनाकर होंठों पर दिन में तीन बार लगाएं। होंठों की खूबसूरती, इससे होंठों में नमी रहेगी एवं उनका रंग भी निखरेगा।

१६. नारियल का तेल (Coconut oil) नारियल का तेल प्राकृतिक रूप से त्वचा को नमी प्रदान करता है और ठन्डे मौसम की वजह से फटे होंठों का उपचार करने में भी काफी सहायता करता है। आप वैकल्पिक तौर पर जैतून के तेल (olive oil) का भी प्रयोग कर सकते हैं।

१७. कैस्टर ऑइल (Castor oil) कैस्टर ऑइल भी रूखे और फ़टे होंठों को ठीक करने का काफी बेहतरीन कारक साबित होता है। आप सिर्फ इसका प्रयोग दिन में 2 से 3 बार आराम से कर सकते हैं। वैकल्पिक तौर पर कैस्टर ऑइल, शहद तथा नीम्बू के रस का एक मिश्रण तैयार करें और सोने से पहले इसका प्रयोग अपने होंठों पर करें। सुबह इसे गर्म पानी में डुबोये हुए रुई के गोले की मदद से अच्छे से धो लें।

१८. मिल्क क्रीम (Milk cream) ताज़ा मिल्क क्रीम को फटे होंठों पर लगाएं एवं 10 मिनट तक रखें। होंठों की खूबसूरती, इसके बाद गुनगुने पानी में डुबोये हुए कॉटन बॉल से इसे धीरे धीरे धो दें।

१९. प्राकृतिक तेल (Natural oils) सूखे या ठन्डे मौसम की वजह से फटे या पपड़ीदार बने होंठों को ठीक करने के लिए नारियल का तेल, जैतून का तेल या सरसों का तेल काफी कारगर साबित होता है।

२०. खीरा (Cucumber) होठों का फटना, खीरे के टुकड़े सूखे होंठों पर रगड़ने से तुरंत आराम मिलता है।

२१. एलोवेरा (Aloe vera) एलो वेरा के पौधे की पत्तियों से निकाले गए शुद्ध एलो वेरा जेल को लेकर होंठों पर रगड़ने से फटे होंठ काफी तेज़ी से ठीक होते हैं।

२२. पानी (Water) काफी मात्रा में पानी पीकर शरीर को हाइड्रेटेड (hydrated) बनाए रखने से शरीर को ऐसा माहौल मिलता है, जिससे रूखे और फ़टे होंठ काफी तेज़ी से ठीक होने लगते हैं।

२३. पेट्रोलियम जेली (Petroleum jelly) यह फ़टे और पपड़ीदार होंठों से राहत दिलाने का एक काफी असरदार विकल्प साबित होता है। आप इसका होंठों पर सीधे ही प्रयोग कर सकते हैं। अगर इसका प्रयोग करने से आपके होंठों में जलन होती है, तो आप होंठों पर शहद की एक परत लगाकर भी इसका प्रयोग कर सकते हैं।

२४. शे मक्खन (Shea butter) शे मक्खन प्राकृतिक रुप से आपको सूरज की रोशनी से बचाता है और इसमें त्वचा की मरम्मत करने के गुण होते हैं। यह लिप बाम (lip balm) का मुख्य तत्व होता है। यह फ़टे और पपड़ीदार होंठों को तुरंत राहत प्रदान करता है।

२५. बीज़वैक्स (Beeswax) यह एलर्जी (allergy) से रहित त्वचा को नरमाहट प्रदान करने वाला तत्व है, जो होंठों की नरम त्वचा को नमी देकर पोषण प्रदान करता है।

२६. घी (Ghee) दिन में 3 बार फ़टे होंठों पर गर्म घी का प्रयोग करने से ये एक दिन में ठीक हो जाते हैं और इनमें नरमाहट भी आती है।

२७. विटामिन ए और डी (Vitamin A and D) ये प्रो एक्टिव विटामिन कॉम्प्लेक्स (pro-active vitamin complexes) होते हैं जो त्वचा को फायदा पहुंचाने वाले पूरक पदार्थ होते हैं। अगर विटामिन की कमी की वजह से आपके होंठ फट रहे हैं तो ये काफी प्रभावी साबित होते हैं।

होंठों के देखभाल लिए घरेलू स्क्रब

ग्रीन टी बैग्स (Green tea bags) ग्रीन टी बैग्स को होंठों पर लगाकर रखने से फटे होंठों को राहत मिलती है होठों का फटना के लिए इस तरीके को सालों से प्रयोग किया जाता रहा है।

*नीम्बू का रस (Lemon juice) नीम्बू होंठों की संवेदनशील त्वचा को पोषण प्रदान करता है और उन्हें पहले से कहीं ज़्यादा नरम और मुलायम बनाता है। नीम्बू के रस और दूध की मलाई को आपस में मिश्रित करें और रात में सोने जाने से पहले इसका प्रयोग होंठों पर करें।

जोजोबा का तेल (Jojoba oil) जोजोबा के तेल की कुछ बूँदें प्रभावित भाग पर लगा लेने से गंभीर रूप से फ़टे हुए होंठों को काफी राहत प्राप्त होती है। जोजोबा का तेल फ़टे होंठों को तेज़ी से ठीक करने का काम करता है। यह होंठों की त्वचा की कोशिकाओं को पोषण प्रदान करके इनपर नमी को वापस लेकर आता है।

गुलाबजल और शहद (Rose water and Honey) गुलाबजल और शहद में मौजूद सारे गुण होंठों की त्वचा को जोड़कर रखते हैं। गुलाबजल और शहद के मिश्रण का प्रयोग अपने होंठों पर करें और इसे 15 मिनट के लिए छोड़कर पानी से धो लें।

निष्कर्ष (Conclusion)

रूखे पपड़ीदार होंठों को ठीक करने का सबसे प्रभावी उपाय उन्हें नमी प्रदान करना होता है। होंठों को ठीक करने की प्रक्रिया में तेज़ी लाने के लिए उस चीज़ से परहेज करें, जिसकी वजह से आपके होंठ फट रहे हैं। त्वचा में नमी बरकरार रखने के लिए पानी पिएं, रस भरे फलों का सेवन करें, सूरज की किरणों से बचकर रहें और ठण्ड की रातों में खुद को गर्म रखें।

सोने से पहले डेली रात मे नाभी मे सरसो का तेल लगाये

"एक भारत, एक भावना, एक तिरंगा"
दिल्ली यातायात पुलिस ने देशभक्ति के जोश के साथ 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाया

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: 79वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के एक भाग के रूप में, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त सत्यवीर कटारा के मार्गदर्शन में, दिल्ली यातायात पुलिस ने नागरिकों में देशभक्ति का गौरव पुनः जगाने के लिए एक सप्ताह तक चलने वाला 'हर घर तिरंगा' अभियान चलाया। इस पहल का उद्देश्य भारत की संप्रभुता और गौरव के शाश्वत प्रतीक तिरंगे के साथ लोगों के भावनात्मक बंधन को मजबूत करना और संविधान में निहित मूल्यों के प्रति सम्मान को प्रेरित करना था।

रचनात्मक और संवादात्मक गतिविधियों की एक श्रृंखला के माध्यम से, इस अभियान ने नागरिकों को राष्ट्रीय ध्वज को सम्मानपूर्वक फहराने के लिए प्रोत्साहित किया, साथ ही देश की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने वाले अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को भी याद किया।तिरंगा यात्रा - राष्ट्रीय गौरव के लिए मार्च इस समारोह का मुख्य आकर्षण जोशीली तिरंगा यात्रा थी, जिसमें दिल्ली के विभिन्न स्कूलों के लगभग 250 छात्रों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। रैली को शशांक जायसवाल (यातायात मुख्यालय-I) ने बाबा खड़क सिंह मार्ग स्थित यातायात प्रशिक्षण पार्क से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया और टीटी पार्क बाबा खड़क सिंह मार्ग से बीकेएस रोड होते हुए पार्क में वापस लौटी।

छात्रों ने अदम्य ऊर्जा के साथ तिरंगा झंडा लेकर मार्च किया और देशभक्ति के नारे लगाए जो सड़कों पर गूंजते रहे। इस रैली ने शहर के मुख्य मार्गों को एक भावुक उत्सव में बदल दिया, जिससे दर्शकों में उत्साह भर गया और राष्ट्रीय गौरव और एकजुटता से भरा माहौल बना यातायात प्रहरी - सुरक्षित सड़कों के लिए नागरिकों का एकीकरण इस विशेष अवसर पर, दिल्ली यातायात पुलिस ने यातायात प्रहरी के योगदान को भी सम्मानित किया - समर्पित नागरिक-स्वयंसेवक जो सड़क सुरक्षा और अनुशासन सुनिश्चित करने के लिए यातायात पुलिस के साथ मिलकर काम करते हैं। दिल्ली यातायात पुलिस की ₹आँखें और कानर कहे जाने वाले ये सतर्क लोग उल्लंघनों की पहचान करने और उनकी रिपोर्ट करने, सुरक्षित ड्राइविंग की आदतों को प्रोत्साहित करने और कानून प्रवर्तन प्रयासों में सहयोग करने में मदद करते हैं।

60 से अधिक यातायात प्रहरी ने पंजाबी बाग यातायात प्रशिक्षण पार्क में एक विशेष कार्यक्रम में भाग लिया, जहाँ अनिल तोमर, सहायक पुलिस आयुक्त/सड़क सुरक्षा प्रकोष्ठ यातायात ने उन्हें एक संवादात्मक सत्र में शामिल किया। इस कार्यक्रम में यातायात प्रहरी मोबाइल एप्लिकेशन पर भी प्रकाश डाला गया, जो एक ऐसा प्लेटफ़ॉर्म है जिसके माध्यम से कोई भी नागरिक वास्तविक समय में यातायात उल्लंघनों को दर्ज और रिपोर्ट कर सकता है। सड़क सुरक्षा में सुधार में जनभागीदारी की महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देते हुए, प्रवर्तन कार्रवाई हेतु प्रेरित करने वाली रिपोर्टों को पुरस्कृत किया जाता है।

वरिष्ठ अधिकारी - जिनमें विशेष पुलिस आयुक्त (यातायात) अजय चौधरी, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (यातायात) सत्यवीर कटारा, और पुलिस उपायुक्त शशांक (यातायात मुख्यालय-I) और एस.के. सिंह (यातायात मुख्यालय-II) — ने छात्रों और प्रहरी दोनों की उनके समर्पण, रचनात्मकता और देशभक्ति की भावना की सराहना की। उन्होंने कहा कि जिस तरह हर घर तिरंगा अभियान नागरिकों को एक झंडे तले एकजुट करता है, उसी तरह यातायात प्रहरी पहल दिल्ली की सड़कों को अधिक सुरक्षित, अधिक अनुशासित और कानून के प्रति

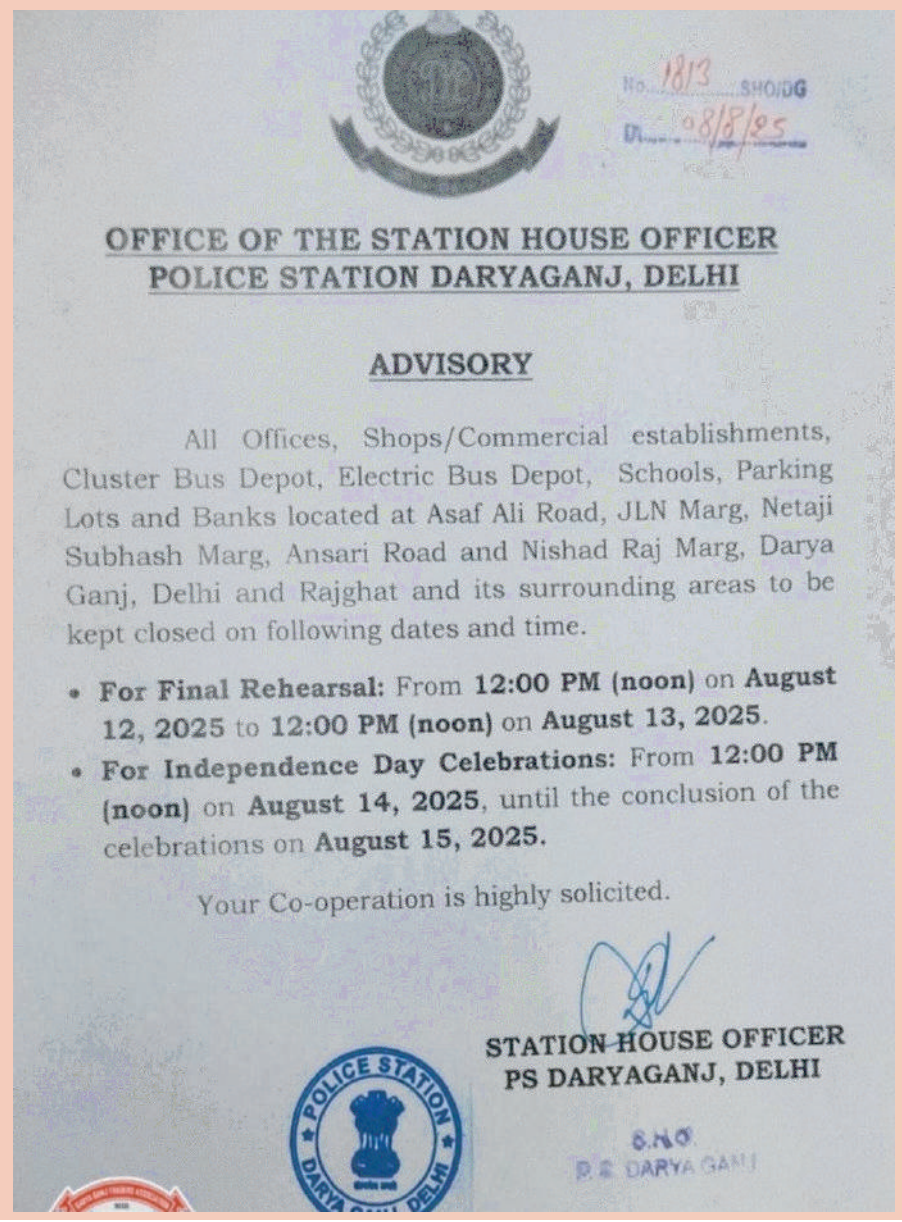

No. 1813 SHO/DG
Dt. 08/8/25

OFFICE OF THE STATION HOUSE OFFICER
POLICE STATION DARYAGANJ, DELHI

ADVISORY

All Offices, Shops/Commercial establishments, Cluster Bus Depot, Electric Bus Depot, Schools, Parking Lots and Banks located at Asaf Ali Road, JLN Marg, Netaji Subhash Marg, Ansari Road and Nishad Raj Marg, Darya Ganj, Delhi and Rajghat and its surrounding areas to be kept closed on following dates and time.

- **For Final Rehearsal:** From **12:00 PM (noon)** on **August 12, 2025** to **12:00 PM (noon)** on **August 13, 2025**.
- **For Independence Day Celebrations:** From **12:00 PM (noon)** on **August 14, 2025**, until the conclusion of the celebrations on **August 15, 2025.**

Your Co-operation is highly solicited.

STATION HOUSE OFFICER
PS DARYAGANJ, DELHI

S.H.O.
P.S. DARYA GANJ

दिल्ली के ओके मॉडल स्कूल में सुल्तानपुर के विकास मिश्र ने किया शानदार काव्य पाठ

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

दिल्ली। उत्तम नगर-मोहन गार्डन क्षेत्र स्थित ओके मॉडल स्कूल में सुर साहित्य परिषद और हिंदी साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में विशाल कवि सम्मेलन का आयोजन स्कूल के प्रबंधक डॉ. रवि कुमार और वरिष्ठ कवयित्री सीमा रंगा के संयोजन में आयोजित किया गया। जिसके अंतर्गत मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व निदेशक आकाशवाणी, लक्ष्मी शंकर बाजपेई शामिल हुए।कवि सम्मेलन में अनुराधा पाण्डेय, उर्मि ऊदल, रामेश्वर देव, खुशबू जैन, डॉ. नाथूलाल आदि के अलावा देश भर के अनेक कवियों ने अपनी प्रस्तुति से सभी को आनंदित किया।

विकास मिश्र ₹सागर₹ ने अपने गांव पर कविता सुनाई, जिसे सभी ने खूब सराहा। कार्यक्रम के अंतर्गत अशोक दुबे और विक्की रंगा को शौर्य सम्मान से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर स्कूल की प्राचार्या डॉ. निर्मल, डायरेक्टर योगी पुंडीर मौजूद रहे। संचालन डॉ. संजय जैन ने किया।

इंडिया एक्सपो शॉप 2025 का शानदार शुभारंभ

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: इंडियन एग्जीबिशन, कॉन्फ्रेंस एंड इवेंट्स सर्विसेज एसोसिएशन (आईईसएए/IESA) द्वारा आयोजित इंडिया एक्सपो शॉप २०२५ का 5वां संस्करण आज यशोभूमि, द्वारका में शुरू हुआ।12-13 अगस्त तक चलने वाले इस कार्यक्रम में देश के शीर्ष इवेंट सर्विस प्रोवाइडर, नीति-निर्माता और वैश्विक उद्योग जगत के नेता एक साथ आए। 100 से अधिक प्रदर्शक, 300 से अधिक निर्णय-निर्माता, और १,000 से अधिक पेशेवर मीटिंग्स, इंसेंटिव्स, कॉन्फ्रेंसेज और एग्जीबिशन्स (एमआईसीई/MICE) सेक्टर में नवाचार, स्थिरता और भविष्य के अवसरों पर चर्चा करने के लिए एकत्र हुए।

भव्य उद्घाटन प्रदर्शकों और आगंतुकों के आगमन के साथ शुरू हुआ, जिसके बाद 'इवेंटफुल भारत' का आधिकारिक शुभारंभ हुआ, जो इवेंट्स इकोसिस्टम में उभरते और छोटे खिलाड़ियों को मंच देने के लिए बनाया गया एक अनूठा प्लेटफॉर्म है। उद्घाटन समारोह में आईईएसए की महासचिव उमा मेनन, कोषाध्यक्ष सुरिंदर वशिष्ठ के साथ इंडियन एग्जीबिशन इंडस्ट्री एसोसिएशन के अध्यक्ष सूरज धवन, किनेक्विसन आईसीसी (यशोभूमि) ऑपरेटिंग कंपनी के सीईओ फिल चुंग, नूर्नबर्गमेस्से इंडिया की प्रबंध निदेशक और चेयरपर्सन सुश्री सोनिया प्रशार, इंडियन पॉल्यूशन कंट्रोल एसोसिएशन के संस्थापक आशीष जैन, इवेंट एंड एंटरटेनमेंट मैनेजमेंट एसोसिएशन (ईईएमए) के कार्यकारी उपाध्यक्ष सागर पिंगली और मीडिया एंड एंटरटेनमेंट स्किल काउंसिल की सीओओ पूजा अरोड़ा ने मंच पर मिलकर इसका अनावरण किया।

इंडियन एग्जीबिशन इंडस्ट्री एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री सूरज धवन ने कहा, "भारतीय प्रदर्शनी उद्योग अभूतपूर्व विकास के कगार पर है, जिसके राजस्व में अगले तीन वर्षों में दोगुना होने

का अनुमान है। इस अवसर का लाभ उठाने के लिए हमारी आपूर्ति श्रृंखला को गति और नवाचार के साथ आगे बढ़ना होगा। इंडिया एक्सपो शॉप २०२५ शीर्ष आपूर्तिकर्ताओं से जुड़ने, शानदार समाधानों की खोज करने, और हमारे उद्योग के भविष्य को आकार देने का एक शानदार मंच है।"

"वैश्विक MICE उद्योग, जिसका मूल्य 870 बिलियन डॉलर है, के २०३० तक 1.5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचने का अनुमान है, और भारत के पास इस बाज़ार का 5% से भी कम हिस्सा होने के कारण, हमारी विकास क्षमताएँ अपार हैं। लेकिन यह विकास पाँच आवश्यक बातों पर आधारित होना चाहिए: मानवीय रचनात्मकता को खोए बिना दस गुना तेज़ी से काम करने के लिए तकनीक को अपनाना, टिकाऊ और नवोन्मेषी बुनियादी ढाँचे का निर्माण, महानगरों से परे स्थानों का विकास, हमारे कार्यबल को वैश्विक दक्षता स्तरों तक उन्नत बनाना, और स्थिरता को एक अनिवार्य शर्त के रूप में अपनाना।" धवन ने कहा।

आईईएसए के अध्यक्ष जतिंदर कपूर ने कहा, "इंडिया एक्सपो शॉप २०२५ भारत के MICE सेक्टर की क्षमता और महत्वाकांक्षा को दर्शाता है, जो २०३० तक $100 बिलियन को पार करने के लिए तैयार है।

किनेक्विसन आईसीसी (यशोभूमि) ऑपरेटिंग कंपनी के सीईओ/सीएमओ, फिल चुंग ने कहा, "आज के वैश्विक निवेशक गंतव्यों का मूल्यांकन केवल बुनियादी ढांचे के लिए नहीं, बल्कि स्थिरता के प्रमाण-पत्रों के लिए भी करते हैं, यहां तक कि प्रति आयोजन उत्पन्न होने वाले कार्बन डाइऑक्साइड के किलोग्राम तक के लिए भी। भारत में इस क्षेत्र में नेतृत्व करने की अपार संभावनाएं हैं, और हम यशोभूमि को उस बदलाव के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में देखते हैं।

किनेक्विसन आईसीसी में, हमारी प्रतिबद्धता उन ईएसजी नीतियों को लागू करना है जो वैश्विक केपीआई के अनुरूप हों, जिससे भारत अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के लिए एक और भी अधिक आकर्षक विकल्प बन सके।"

भारतीय प्रदूषण नियंत्रण एसोसिएशन के संस्थापक, आशीष जैन ने कहा, हमारे इवेंट्स में कचरा प्रबंधन, कार्बन कठौती, और टिकाऊ सामग्रियों को शामिल करके, हम एक स्थायी पर्यावरणीय विरासत बना सकते हैं। भारतीय प्रदूषण नियंत्रण एसोसिएशन हमारे उद्योग भागीदारों के सहयोग से इस बदलाव का नेतृत्व करने के लिए प्रतिबद्ध है।"

मेरोफॉर्म इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक, अश्विन बीनू ने कहा, "वॉकिंग टुगेदर' सिर्फ एक थीम नहीं है, बल्कि सेमिनार, कौशल विकास, नीतिगत संवाद और सामूहिक विकास के माध्यम से उद्योग के साथ हमारी यात्रा का प्रतिबिंब है। इंडिया एक्सपो शॉप हमारे सदस्यों की ताकत दिखाने और उनकी पहुंच बढ़ाने की एक सशक्त पहल है। एमआईसीई के 13% चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि की दर से बढ़ने और सरकार द्वारा पर्यटन और बड़े पैमाने पर सम्मेलनों को बढ़ावा देने के साथ, हमारा मानना है कि उद्योग एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है। यह मंच सहयोग, नवाचार और प्रदर्शनियों के भविष्य का उत्सव है।"

इस आयोजन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा इंडियन एग्जीबिशन, कॉन्फ्रेंस एंड इवेंट्स सर्विसेज एसोसिएशन और मीडिया एंड एंटरटेनमेंट स्किल काउंसिल के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन (MoU) था, जिसका उद्देश्य भारत के इवेंट्स उद्योग में प्रतिभा को कुशल और उन्नत बनाना है। समारोह में सेक्टर के जाने-माने नेताओं ने भाग लिया।

इंडिया एक्सपो शॉप २०२५ में एन.के. कपूर एंड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, मेरोफॉर्म इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, वशिष्ठ एजेंसीज प्राइवेट लिमिटेड, आर्क कॉन्सेप्ट प्राइवेट लिमिटेड, लकी-टेक मेम्ब्रेन्स प्राइवेट लिमिटेड, शिवोम एंटरप्राइजेज, पद्मावती ग्रुप ऑफ कंपनीज, पविलियंस एंड इंटिरियर्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, नामधारी इवेंट्स एन प्रमोशंस (पी) लिमिटेड, स्कोब्स ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड, लल्लूजी एंड संस, जेस आइडियाज प्राइवेट लिमिटेड, जीकेएस प्रोजेक्ट्स एंड इवेंट्स, एक्सिस डिजाइनर्स प्राइवेट लिमिटेड जैसे कई प्रतिष्ठित प्रदर्शक शामिल हुए। ये कंपनियाँ इवेंट इंफ्रास्ट्रक्चर, डिज़ाइन, एवी टेक्नोलॉजी, लॉजिस्टिक्स और स्थायी इवेंट प्रथाओं में अत्याधुनिक समाधानों का प्रदर्शन कर रही हैं।

दिल्ली भाजपा द्वारा निकाली गई तिरंगा यात्रा से पूरी दिल्ली लगातार तीसरे दिन भी तिरंगामय हुई

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा द्वारा आयोजित तिरंगा यात्रा आज तीसरे दिन भी जारी रहीं।

बड़ी तिरंगा यात्राओं के अलावा दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा के आवाहन पर दिल्ली भर में आज 57 मंडलों में तिरंगा यात्रा निकाली गई। लगातार तीसरे दिन निकाली गई तिरंगा यात्रा से पूरी, दिल्ली तिरंगामय हो गई।

आज सभी 14 जिलों में निकाली गई तिरंगा यात्रा में केशवपुरम जिले के 5 मंडलो में, चाँदनी चौक जिले के 2 मंडलों में, उत्तर पूर्व जिले के 4 मंडलों में, नवीन शाहदरा जिले के 5 मंडलों में, मयूर विहार जिले के 9 मंडलों में, शाहदरा जिले के 5 मंडलों में, करोल बाग जिले के 3 मंडलों में, नई दिल्ली जिले के एक मंडल में, उत्तर पश्चिम के 4 मंडलों में, बाहरी दिल्ली जिले के 3 मंडलों में, पश्चिम दिल्ली जिले के 5 मंडलों में, नजफगढ़ जिले के 2 मंडलों में, महरौली जिले के 4 मंडलों में और दक्षिणी जिले के 5 मंडलों में तिरंगा यात्रा निकाली गई।

वीरेंद्र सचदेवा आज स्वंय भारत मंडपम से नेशनल स्टेडियम तक निकाली गई तिरंगा यात्रा में सम्मिलित हुए

सचदेवा ने बताया कि दिल्ली

में पिछले तीन दिनों से लगातार दिल्ली भाजपा तिरंगा यात्रा निकाल रही है और उसका परिणाम है कि जैसे जैसे तिरंगा यात्रा आगे बढ़ रही है वैसे वैसे लोगों के अंदर स्वतंत्रता दिवस को लेकर उत्साह बढ़ता जा रहा है। खासकर युवा वर्ग इसमें शामिल हो रहे हैं।

उन्होंने कहा कि सेना के शौर्य के सम्मान में निकाली जा रही तिरंगा यात्रा का कल अंतिम दिन होगा। पूरे 256 मंडलों में निकलने वाली यह तिरंगा यात्रा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर देश भर में तिरंगा यात्रा निकाली जा रही है। यह यात्रा हमारे सशस्त्र बलों के सम्मान में है जिन्होंने अपनी वीरता और साहस से पाकिस्तान को सबक सिखाया।

डीबी आरआरटीएस का स्मार्ट मेंटेनेंस के लिए W rth से करार

मुख्य संवाददाता

डीबी आरआरटीएस ऑपरेशंस इंडिया प्रा. लि., जो डीबी इंटरनेशनल ऑपरेशंस (DB IO) की सहायक कंपनी है, आज अहम घोषणा कर रही है, जिनका उद्देश्य भारत की पहली सेमी-हाई-स्पीड रीजनल रेल प्रणाली—नमो भारत कॉरिडोर—के रखरखाव कार्यों की दक्षता और स्थिरता में सुधार करना है।

नेशनल कैपिटल रीजन ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन (एनसीआरटीसी) द्वारा संचालित नमो भारत परियोजना के ऑपरेटर और मेंटेनर के रूप में, डीबी आरआरटीएस ने Wrth इंडस्ट्रियल सर्विसेज इंडिया के साथ साझेदारी की है जिससे रेल संचालन और अधिक स्मार्ट, सुरक्षित व टिकाऊ बन सके।

W rth के साथ टिकाऊ रखरखाव

यह इंडो-जर्मन सहयोग पर्यावरण-हितैषी प्रक्रिया के माध्यम से डिपो-स्तरीय रखरखाव को बेहतर बनाने के लंबे प्रयास की शुरुआत है। डीबी आरआरटीएस ने दुहाई डिपो में Wrth का REFILLO®mat एरोसोल रिफिल सिस्टम अपनाया है—ऐसा करने वाला यह भारत का पहला रेल ऑपरेटर है। यह प्रणाली हानिकारक कचरे और पैकेजिंग को कम करने में मदद करती है, साथ ही कार्यस्थल की सुरक्षा में सुधार करती

है।

REFILLO®mat प्रणाली के अलावा, Wrth डीबी आरआरटीएस को स्वचालित इन्वेंट्री प्रबंधन, मॉड्यूलर स्टोरेज समाधान (ORSY®mat) और बेहतर सप्लाई चेन समन्वय के माध्यम से सहयोग करेगा। लॉन्च के हिस्से के रूप में Wrth "सिस्टम बस"—ऑन-साइट प्रोडक्ट डेमोंस्ट्रेशन के लिए एक मोबाइल शो-रूम—का भी प्रदर्शन किया गया।

"Wrth के साथ यह सहयोग सिर्फ उपकरणों के बारे में नहीं है—यह भविष्य के लिए तैयार रेलवे के लिए स्मार्ट, टिकाऊ सिस्टम बनाने के बारे में है," डॉयचे बान ई.सी.ओ. ग्रुप और डॉयचे बान इंटरनेशनल ऑपरेशंस के सीईओ, निको वारबानॉफ ने कहा। "यह हमारे साझा जर्मन इंजीनियरिंग उत्कृष्टता की विरासत और भारत के 'मेक-इन-इंडिया' और स्थिरता लक्ष्यों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इसलिए, मैं इस साझेदारी को लेकर बहुत खुश और गौरव की अनुभूति कर रहा हूं।"

मीडिया की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम में निको वारबानॉफ, सीईओ, डॉयचे बान ई.सी.ओ. ग्रुप एवं डॉयचे बान इंटरनेशनल ऑपरेशंस; राहुल गुप्ता, एमडी, Wrth इंडस्ट्रियल सर्विसेज इंडिया; प्रवीण गोयल, सीईओ, डीबी आरआरटीएस; माइकल कोर्टम, सीओओ, डीबी आरआरटीएस और अनिल कुमार अग्रवाल, सीएमओ, डीबी आरआरटीएस सहित डीबी आरआरटीएस और Wrth के अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

डीबी आरआरटीएस के बारे में

डीबी आरआरटीएस दिल्ली, गाजियाबाद और मेरठ के बीच नमो भारत सेमी-हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर के लिए एनसीआरटीसी द्वारा लागू की जा रही परियोजना के संचालन और रखरखाव पार्टनर है। DB IO की सहायक कंपनी के रूप में, यह संचालन, एसेट मैनेजमेंट और सुरक्षित, टिकाऊ परिवहन में अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञता लाती है।

फतेहपुर मक़बरा विवाद: पीस पार्टी ने प्रधानमंत्री को सौंपा ज्ञापन, कार्रवाई की मांग

शम्स आगाज

नई दिल्ली: फतेहपुर मक़बरा विवाद से उपजे तनाव के बीच पीस पार्टी ने प्रधानमंत्री को संबोधित एक ज्ञापन सौंपा और मामले पर मीडिया से बातचीत की। पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता हाफ़िज़ गुलाम सरवर ने कहा कि भारत संविधान और लोकतांत्रिक व्यवस्था पर आधारित देश है, जहां प्रशासन को पूरी तरह निष्पक्ष रहना चाहिए।

उन्होंने आरोप लगाया कि फतेहपुर में एक ऐतिहासिक स्थल पर प्रशासन की मौजूदगी में कानून को हाथ में लिया गया, हमला किया गया और एक धर्म विशेष को अपमानजनक शब्द कहे गए। सरवर ने प्रधानमंत्री से सवाल किया कि क्या उन्होंने वह दृश्य नहीं देखा जिसमें उत्तर प्रदेश पुलिस मूकदर्शक बनी रही और कथित तौर पर धर्म के नाम पर कानून का उल्लंघन किया गया। उन्होंने पूछा कि क्या उन सैकड़ों उपद्रवियों पर कार्रवाई होगी या पिछली घटनाओं की तरह उन्हें खुला छोड़ दिया जाएगा, जिससे ऐसे मामलों की पुनरावृत्ति हो सकती है।

पीस पार्टी ने मांग की कि फतेहपुर के एसपी को तत्काल निलंबित किया जाए और सभी उपद्रवियों पर कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए, ताकि ₹सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' का नारा सार्थक हो सके।

इस मौके पर पीस पार्टी के नेता मोहम्मद समीर सैफी, नदीम अहमद कुरैशी और अन्य भी मौजूद रहे।

खुलेआम शांतिप्रिय देश में वोट चोरी हो रही हैं और ये विदेशी गुलाम ऊछल-कूद के, हंस-हंस के, ताली बजा बजा के, अपने बंग्लादेशी घुसपैथियों को सपोर्ट कर रहें

आगरा, संजय साग़र सिंह। आज हर घर तिरंगा यात्रा के बाद बंगलादेशी घुसपैथियों द्वारा की जारही वोट चोरी की चर्चा में दलित मजदूर वर्ग के वोटरों ने बताया कि अबैध शरणार्थीयों एवं बांग्लादेशी घुसपैठियों और फर्जी तत्वों के द्वारा कमजोर, ग़रीब दलित वर्ग के वोट चोरी की सच्चाई सबके सामने आ गई है, और ये सभी ऊछल-कूद के हंस-हंस के ताली बजा के घुसपैथियों को सपोर्ट कर रहें हैं। घुसपैठियों और फर्जी तत्वों के लिए इनके दर्द को देखकर लगता हैं कि ये इनके गुलाम है, और इनके लिए घुसपैठिये कितने ज़रूरी हैं, लगता है, इनका पूरा चुनावी गणित एवं समीकरण इन्हीं पर टिका हुआ हैं, उनके वोटर लिस्ट से नाम हटने पर तभी इनको डर हो रहा हैं। लेक़नि ये अब देशहित में, बाबा साहब के बनाएं संविधान को बचाने की गंभीर लड़ाई है, क्युकी कमजोर ग़रीब वर्गों का खुलेआम वोट चुरा रहें अबैध शरणार्थीयों एवं बांग्लादेशी घुसपैठियों और फर्जी तत्वों के खिलाफ़ अपने हक़ और अधिकार बचाने एवं देश को सुरक्षित रखने की सीधी लड़ाई हैं। हम गरीबों के हक़, अधिकार और देश के संसाधनों को घुसपैथियों को चोरी नहीं करने देंगे। ये देश हमारा हैं, अपने देश को हम घुसपैथियों के लिए धर्मशाला नहीं बनने देंगे। अपने देश में घुसपैथियों द्वारा वोट चोरी नहीं होने देंगे। हमें साफ वोटर लिस्ट चाहिए। हमें घुसपैथियों को वोटर लिस्ट से हटाए जाने बाली साफ सुथरी वोटर लिस्ट चाहिए।

उन्होंने आगे बताया कि भारत देश के खिलाफ़ सांस लें रहें जिन गुलाम तत्वों को अपने प्रिय घुसपैथियों से प्रेम हैं, वो इन सभी को अपने घर लें जाएं खिलाएं पिलायें लेक़नि हमारे देश के कमजोर, गरीब लोगों को बेरोजगार ना बनाएं। ना नहीं, देश के संसाधनों एवं सरकारी सुबिधाओं की चोरी करबाएँ और ना नहीं, हमारे देश के गरीबों के हक़-अधिकार छीनबाएँ और ना ही वोट चोरी कराएं। देश में बंग्लादेशी घुसपैथियों द्वारा खुलेआम वोट चोरी हो रही हैं, और

बंग्लादेशी घुसपैथियों के गुलाम भी इस चोरी में शामिल हैं। देशहित में सरकार से हमारी अपील हैं कि इस चोरी को पुरे देश में तत्काल रोका जाएं। देश अब ये चोरी किसी भी हालत में बर्दास्त नहीं करेगा। इसलिए देशहित में पुरे देश में बंग्लादेशी घुसपैथियों और इनके गुलामों पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाएं तभी हमारा देश सुरक्षित रहेगा।

जिन विदेशी गुलामों को बंगलादेशी घुसपैठियों से लगाव है, तो उन्हें अपने घर क्यों नहीं लें जाते?

मजदूर दलित वर्ग के वोटरों ने भारत देश के खिलाफ़ सांस लें रहें गुलाम तत्वों पर घुसपैठियों को नयी पहचान देने की कोशिश करने का आरोप लगाया और कहा कि अगर बंगलादेशी घुसपैठियों के गुलाम नेताओं और पार्टी को अपने घुसपैठियों से इतना ही लगाव है, तो उन्हें अपने घर और पार्टी दफ्तर क्यों नहीं भेज देते और इनको अपने घर-परिवार में उन्हें जगह देनी चाहिए, क्योंकि हमारे देश में घुसपैठियों के लिए कोई जगह नहीं। उन्होंने यह भी बताया कि कही कही इनके कारण मूल निवासीयों के लिए पर्याप्त संसाधन या जगह नहीं है, तो नए घुसपैठियों को कैसे समायोजित किया जा सकता है। इनके कारण अब तो स्थिति ऐसी हैं कि कई जगह न तो जमीन है, न जगह, न घर, न रोज़गार हैं। जो सुबिधायें देश में रह रहें कमजोर ग़रीब वर्ग के लिए हैं, वो हम इनको पर्याप्त सुविधाएं नहीं दे सकते। ये संबिधान के खिलाफ़ हैं। ऐसे में हम इन बांग्लादेशी घुसपैथियों को ग़रीब कमजोर दलित वर्ग को दी जाने बाली ये सुविधाएं कैसे दे सकते हैं?

प्रेम पच्चीसा

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़
सेवानिवृत्त गेल अधीक्षक
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

भोपाल के न्यू मार्केट की भीड़भाड़ वाली गलियों में २४ वर्षीय दीपा, एक स्वतंत्र पत्रकार और २२ वर्षीय रोहन, एक उभरते हुए कवि, की मुलाकात होती है। दोनों की बातचीत कुछ कविताओं और अधूरी कहानियों से शुरू होती है जो धीरे-धीरे गहरे भावनात्मक बंधन में बदल जाती है। दीपा अपने पारिवारिक कलह, अतीत के दर्द और असफल प्रेम रिश्तों की छाया से जूझ रही है। जबकि रोहन अपनी ग़रीबी को हराने की कोशिश में अपनी कविताओं में खोया हुआ रहता है।

दोनों अक्सर एक-दूसरे में सांत्वना ढूंढते हैं लेकिन उनके बीच का प्रेम कभी पूर्णत: तक नहीं पहुँच पाता। दीपा और रोहन की मुलाकातें बढ़ती हैं। दोनों भोपाल की लालघाटी ,मानव संग्रहालय, भारत भवन ,रविन्द्र भवन,हिंदी भवन से भारत लेकर बिड़ला मंदिर, श्यामला हिल्स के पुरानी ह्वेलियों के साथ न्यू मार्केट कॉफी हाउस और बारिश की रातों में एक-दूसरे के साथ समय बिताते हैं।

रोशन की कविताएँ दीपा के लिए एक आश्रय बन दिली सुकून देती हैं, जबकि सीमा की कहानियाँ रोहन को अपने अंदर की सच्चाई से रुबरू करवाती हैं। फिर भी दोनों के बीच एक अनकही/ अदृश्य दीवार खड़ी है। दीपा का स्थाई डर है कि प्रेम हमेशा उसे छोड़कर चला जाता है और रोहन की असमर्थता कि वह अपनी ग़रीबी और अपने अतीत की प्रेमिका, माया, को भूल नहीं पाता, जिसने एक अधेड़ वर्दी वाले दरोगा से शादी करके रोहन का दिल ही नहीं तोड़ा बल्कि चुनौती दे दी थी कि प्रेम से बड़ी चीज़ पद और प्रतिष्ठा है।

दोनों का रिश्ता एक अधूरी किताब की तरह है। हर वाक्य, पैरा और पन्ना कुछ कहता है लेकिन अंत हमेशा अनिश्चित और अधूरा ही रहता है। दीपा चाहती है कि रोहन कविता के साथ ही की बड़ा अधिकारी / आदमी बने, क्योंकि साहित्य संतुष्टि तो देता है लेकिन पेट और पेट के नीचे की भूख पूरी नहीं करता।

रोहन की कविताओं में माया की छाया बार-बार उभरती है। एक रात, जब दीपा, रोहन से अपने दिल की बात कहने की कोशिश करती है, रोहन चुप रहता है। यह चुप्पी उनके बीच की दूरी को और गहरा देती है।

साल भर बाद कहानी नया मोड़ लेती है जब दीपा को सरकारी नौकरी मिल जाती है। विभागीय प्रशिक्षण के लिए उसे नौ माह, सागर जाना पड़ता है। सागर जाने से पहले रोहन समझाता है कि है, प्रशिक्षण के बाद वह दोनों शादी कर लेंगे। दूसरी तरफ दीपा अपनी भावनाओं और अधूरेपन से थक चुकी है रोहन से दु:खी मन से कहती है कि प्रशिक्षण के बाद सोचेंगे ? लेकिन इस बीच हम नहीं मिलेंगे और अलविदा कहकर चली जाती है। रोहन का दिल ही नहीं टूटता दिमाग़ का दही भी बन जाता है।

रोहन अपनी कविताओं में खोया एक अंतिम कविता दीपा के नाम लिखता है लेकिन उसे कभी भेज नहीं पाता। नौ माह बाद, दीपा भोपाल लौटती है, लेकिन अब वह पहले जैसी नहीं है। उसने अपने घरेलू उलाहने से बचने के लिए जिम्मेदारी को स्वीकार कर लिया है। पूरी शिद्दत के साथ अपनी नई नौकरी में खो जाती है।

रोहन अब भी भोपाल की गलियों में भटकता है अपनी अधूरी कविताओं के साथ अधूरी कहानी का अंत एक खुले सवाल के साथ होता है, क्या प्रेम का अधूरापन ही उसकी सुंदरता है या यह एक अभिशाप है जो हमेशा पीछा करता रहता है ? प्रेम का अधूरापन: प्रेम जो कभी पूर्ण नहीं हो पाता, फिर भी उसकी खोज और अनुभव जीवन को अर्थ देते हैं ।अतीत का बोझ: कैसे अतीत की यादें और दर्द नए रिश्तों को प्रभावित करते हैं।

स्वयं की खोज दीपा और रोहन दोनों अपने भीतर की सच्चाई और कमजोरियों का सामना करते हुए जीवन संघर्ष में आगे बढ़ते हैं।

(क्रमश:)

गीतों से मिलता है व्यक्तित्व के विकास और चरित्र के निर्माण में सहयोग - सुभाष

परिवहन विशेष न्यूज

रतलाम। शहर की धड़कन को बयान करने लगा अब गुलाब चक्कर। जिला पुरातत्व पर्यटन एवं संस्कृति परिषद रतलाम के मंच पर सावन के मधुर गीतों से झूम उठे श्रोतागण। रतलाम की पहचान बन चुके इस मंच पर सात अगस्त की शाम 'माही फाउंडेशन' द्वारा प्रायोजित एक कार्यक्रम संपन्न हुआ। जिसमें नगर के वरिष्ठ शिक्षाविद, समाज सेवी, फिल्म करों, स्वतंत्र लेखकों, गायकों व संगीतकारों के साथ बड़ी संख्या में संगीत प्रेमियों और श्रोताओं ने शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता भूतपूर्व जिला शिक्षा अधिकारी डॉक्टर सुलोचना शर्मा ने की। वरिष्ठ शिक्षाविद डॉक्टर गोपाल जोशी, रामकृष्ण विवेकानंद आश्रम के अध्यक्ष गोपाल सिंह तोमर, सहकारिता विभाग से विकास खराड़ी, स्वतंत्र पत्रकार रमेश सोनी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। आरंभिक उद्बोधन में माही के संस्थापक व स्कूल संचालक प्रवीण उपाध्याय और श्रीमाती कौशल्या त्रिवेदी ने अपने मालवा अंचल के विकास और यहां की प्रतिभाओं को निखारने के लिए 'माही फाउंडेशन' के गठन की भूमिका बताई। नगर की प्रतिभाओं ने कई मधुर गीत गए। सावन की थीम पर श्रोता झूम उठें और रतलाम में बनी फिल्म 'अहमियत' का पोस्टर लांच हुआ।

मध्यप्रदेश लेखक संघ के संरक्षक व प्रसिद्धि हास्य कवि जुझार सिंह भाटी, अखिल भारतीय साहित्य परिषद के जिला अध्यक्ष कैलाश वशिष्ठ, व्योम फिल्म कंपनी के फाउंडर मुकेश व्यास, राठोर फिल्म के निर्देशक राजेंद्र राठौर, उड़ान फिल्म के प्रोपराइटर कमलेश पाटीदार, रतलाम कला मंच के अध्यक्ष राजेंद्र चतुर्वेदी, सचिव शरद चतुर्वेदी, पतंजलि योग संस्थान के विशाल वर्मा, स्वर ताल संस्था के संचालक फेड्रिक लुइस बंटी भाई, स्वर संगम के विजेंद्र सिंहा सिसोदिया, किरण चौहान, स्पंदन संस्था के अध्यक्ष, लायंस क्लब अभिमा की अध्यक्ष श्रीमती सुनीता पाठक, श्रीमती भावना शर्मा, सीमा सुरोलिया, श्रीमती उमा देवी, श्रीमती सोनल पाठक, नरेंद्र जोशी, शैलेन्द्र तिवारी, नरेंद्र त्रिवेदी, विवेक शर्मा, हरीश चौहान, सुनील शर्मा, कमल बुंदेला एवं अन्य गणमान्य नागरिक इस कार्यक्रम में शामिल हुवे। नगर के होनहार गायकों ने यहां मनमोहक प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम का संचालन दुर्गेश सुरोलिया अनमोल ने किया।

मध्य प्रदेश लेखक संघ के जिला अध्यक्ष और चेरिटेबल संस्था मालवा अभ्युदय एंड ह्यूमन एक्सीलेसी एन्हांसमेंट फाउंडेशन (MAAHEE) 'माही' के फाउंडर प्रेसिडेंट सुभाष शर्मा ने मधु बन खुशबू देता है सागर सावन देता है गीत गाया। इस गीत ने लोगों को भाव विभोर किया। गीत गाते हुवे उन्होंने बताया की गीतों के प्रभाव से बढ़ते बच्चों का व्यक्तित्व और चरित्र आकार लेता है। हमारे बचपन में जो गीत हमने सुने है जैसे प्रीत जहां की रीत सदा मैं गीत वहां के गाता हूं, ये देश है वीर जवानों का, किसी की मुस्कुराहटों पर हो निसार, होंठों पर सच्चाई रहती है वहां दिल में सफ़ाई रहती है आदि इस प्रकार के कई प्रेरणा प्रद गानों का हमारे अवचेतन मन पर गहरा प्रभाव हुआ है और उस प्रभाव से हमारे चरित्र गठन व व्यक्तित्व निर्माण को सहारा मिला है। अभी जो पीढ़ी जवान हो रही है इनका बचपन बीता है चार बोतल वोदका मेरा काम रोज का, बीड़ी जलइले जिगर से पिया, सरकाई लो खटिया, हम करेंगे गंदी बात ना जाने इस तरह के कितने उल जलूल गानों ने बढ़ते बच्चों की मानसिकता दूषित हुई है। रतलाम की तहसील सैलाना के रहने वाले राजेंद्र सिंह राठौर जो अब मुंबई फिल्म इंडस्ट्रीज के अनुभवी फिल्म निर्देशक है उन्होंने फिल्मी गीतों और कहानियों के गिरते स्तर पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने माही फाउंडेशन के लिए मालवा की सांस्कृतिक धरोहर, जीवन शैली और रीति रिवाजों पर आधारित मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करने वाली फिल्में और वेब सीरीज बनाने की योजना में सहर्ष शामिल होना स्वीकर किया। कार्यक्रम की अध्यक्षा वरिष्ठ शिक्षाविद् पूर्व शिक्षा अधिकारी डॉक्टर सुलोचना शर्मा ने रतलाम के युवाओं द्वारा बनाई फिल्म एहमियत का पोस्टर लॉन्च करते हुवे बताया की फिल्मों का समाज पर सकारात्मक भी और नाकारात्मक भी दोनों तरह से प्रभाव होता है। फिल्म निर्माण में रचनात्मक योगदान के लिए क्षेत्रीय सिनेमा की भूमिका अब महत्वपूर्ण है।

रतलाम के कलाकारों द्वारा बनाई फिल्म 'अहमियत' का प्रीमियर माही फाउंडेशन के माध्यम से दिनांक 20 अगस्त को आयोजित करने की घोषणा फिल्म के निर्माता निर्देशक कमलेश पाटीदार ने की। फिल्म की रिलीज डेट 21 अगस्त बताई गई। अमन, सुखबिंदर कौर, दलजीत सिंह, अयूब खान, विजेंद्र सिसोदिया, अशफाक जावेद, इदरीस जावेदी, मनोहर, गीता बौरासी, सुनीता नागदे, जलज शर्मा, दुर्गेश सुरोलिया, सीमा सुरोलिया, रोहित सिंह राठौर, आदि ने अपनी गायिकी से कार्यक्रम में समा बंधा।

प्रकाश हेमावत रतलाम

घर में घुसकर लूटपाट के बाद महिला की गला काटकर हत्या...जानिये बदायूं में कहां हुई वारदात

विधवा थी महिला, पति की कैंसर से हो चुकी है मौत, बेटा हापुड़ पुलिस में दरोगा बताया जा रहा

बदायूं। इस्लामनगर क्षेत्र के एक गांव में बदमाशों ने घर में घुसकर महिला की किसी धारदार हथियार से गला काटकर हत्या कर दी और जेवर लूटकर ले गए। मृतक का बेटा दरोगा है और इस समय हापुड़ में उसकी तैनाती है।

घटना इस्लामनगर के गांव मौसमपुर की है। यहां करीब 65 वर्षीय विधवा रातरानी रहती थी। उनके पति कुबेर सिंह की कैंसर से मौत हो चुकी है। महिला का बेटा मनवीर हापुड़ पुलिस में दरोगा बताया जाता है। बताते हैं कि सोमवार रात किसी समय बदमाश महिला के घर में घुस आए और लूटपाट की कोशिश की। महिला ने विरोध किया तो बदमाशों ने किसी धारदार हथियार से उनके गले पर वार कर दिया। महिला तुरंत ही खून से लथपथ होकर गिर गईं और उनकी मौत हो गई। इसके बाद बदमाशों ने महिला के कान में से कुंडल और जंजीर तोड़ ली तथा बाकी सामान लूट लिया। मंगलवार सुबह लोगों को इसकी जानकारी हुई तो पुलिस को सूचना दी गई है। मौक पर पहुंची पुलिस जांच कर रही है।

वजीरगंज .. कस्बा मे आज हर घर तिरंगा यात्रा विश्वजीत गुप्ता के नेतृत्व में हुई

वजीरगंज .. कस्बा मे आज हर घर तिरंगा यात्रा विश्वजीत गुप्ता के नेतृत्व में कस्बा के सरस्वती शिशु मंदिर से तिरंगा यात्रा शुरू हुई।यात्रा ने पूरे नगर में भ्रमण किया यात्रा का समापन शाहिद गजराज सिंह स्मारक पर हुआ । यात्रा के दौरान नौजवान महिलाएं व बच्चे के हाथों में गर्व से लहराता तिरंगा ध्वज था देशभक्ति की धुन पर नौजवानों बच्चे थिरक रहे थे । जगह-जगह फूल बरसाए गए कई स्थानों पर जय घोष करते हुए हौसला बढ़ाया गया इस पर मौके पर मंडल अध्यक्ष राघव चौहान . जय पाल .कुंवर प्रताप सिंह. अनुज सक्सेना रिधि प्रताप सूरज पाल राहुल वार्ष्णेय. शरद भारद्वाज. राजू टाइगर. निक्की मेंबर नरेश गुर्जर, नितिन सिंह रामेंद्र शर्मा आदि सैकड़ो कार्यकर्ता मौजूद रहे ।

15 अगस्त को होगा श्रीविष्णुस्वामी जयंती व गोस्वामी रूपानन्द जन्मोत्सव का आयोजन

श्रीविष्णुस्वामी जयंती व श्रीरूपानंदजी महाराज के जन्मोत्सव पर सम्मानित होंगी कई विभूतियाँ

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। बिहारीपुरा स्थित श्रीहरिदासपीठ मंदिर में सुप्रसिद्ध सेवाभावी संस्था श्रीहरिदासबिहारी फाउंडेशन भारत ट्रस्ट के तत्वावधान में 15 अगस्त (भाद्रप्रद कृष्णा सप्तमी) को अनंतश्री विष्णुस्वामी जयंती एवं अमरशहीद पूज्य गोस्वामी श्रीरूपानन्दजी महाराज का 318 वाँ पावन जन्मोत्सव विभिन्न धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों के साथ मनाया जाएगा।

श्रीहरिदासपीठ मंदिर में सम्पन्न हुई आयोजन समिति की बैठक में जानकारी देते हुए फाउंडेशन के अध्यक्ष पवन अग्रवाल ने बताया कि संस्था द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी जन-जन के आराध्य भगवान श्रीबाँकेबिहारीजी महाराज को राजस्थान से वृन्दावन वापस लाने में शहीद हुए पूज्य गोस्वामी श्रीरूपानन्दजी महाराज का परम्परागत जन्मोत्सव समारोह अत्यंत भावपूर्ण स्वरूप में मनाया जाएगा। इस मौके पर अनेक धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

फाउंडेशन के निदेशक विजय कुमार गर्ग ने बताया कि ट्रस्ट संस्थापक इतिहासकार आचार्य प्रह्लाद बल्लभ गोस्वामी महाराज के सानिध्य में आयोजित महोत्सव के अंतर्गत श्रीविष्णुस्वामी महाराज की जयंती के साथ रसिकसम्राट श्रीस्वामीहरिदासजी महाराज के अनुज गोस्वामी श्रीजगन्नाथजी महाराज की वंश परम्परा के सप्तम आचार्य पूज्यगोस्वामी श्रीरूपानन्दजी महाराज का विशेष पूजन - अर्चन कर दिव्य भोगराग अर्पित किया जाएगा। संस्था के प्रधान संरक्षक गिरधारी लाल कानौडिया ने बताया कि महोत्सव में भावांजलि सभा का आयोजन होगा जिसमें वक्तागण अमर शहीद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालेंगे। इस अवसर पर सामाजिक विकास में उल्लेखनीय योगदान देने वाली कई विभूतियों को सम्मानित किया जाएगा। बैठक का संचालन मुख्य प्रवक्ता अनिल तायल ने किया।

सुप्रीम कोर्ट द्वारा आवारा कुत्तों पर स्वत:संज्ञान के 14 दिनों में सुप्रीम न्याय की ऐतिहासिक गूँज- कबूतरों को दाना खिलाने पर भी सुप्रीम निर्णय

सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्वत :संज्ञान लेने के 14 दिनों में निर्णय की फास्ट ट्रैक प्रवृत्ति जनहित की आपात समस्या निदान का सटीक उदाहरण सराहनीय -एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारतीय न्यायपालिका की प्रतिष्ठा पारदर्शिता व निष्पक्षता का गुणगान यूं ही नहीं किया जाता, यहां मानवीय संवेदनशीलता के साथ- साथ-साथ मूक बधिर जीवों की सुरक्षा करने के साथ साथ संवेदनशीलता, व उनकी हिंसा से मानवीय जीवो को बचाने उनकी सुरक्षा करने के लिए स्वतः संज्ञान भी लिया जाता है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि भारत माता की मिट्टी में पैदा हुए हर व्यक्ति में सृष्टि में पैदा हुए जीवों के प्रति गहरी संवेदनाओं संवेदनशीलता गुण हृदय में भरा रहता है जो किसी न किसी रूप में झलक जाता है, ऐसा ही हमने देखे कि आवारा कुत्तों के संबंध में स्वयंसेवी संगठन व माननीय न्यायालय तथा कबूतरों के संबंध में एक संगठन व माननीय न्यायालय क़े केस में माननीय सुप्रीम कोर्ट ने दिनांक 11 अगस्त 2025 को अहम्फैसला दिया है।एक बच्ची को आवारा कुत्तों द्वारा काटने पर उसकी मृत्यु हो गई इसके स्वतः संज्ञान पर बेंच नें लावारिस कुत्तों की समस्या से जूझ रहे दिल्ली को लेकर बड़ा आदेश दिया है। देश की सबसे बड़ी अदालत ने कहा है कि 8 सप्ताह के भीतर सभी लावारिस कुत्तों को पकड़कर 'डॉग शेल्टर' में शिफ्ट किया जाए व इन कुत्तों को वापस नहीं छोड़ा जाएगा। दिल्ली में रोहिणी के पास पूठ कलां में आवारा कुत्ते के काटने से रेबीज के कारण 6 साल की बच्ची की मौत के बाद 28 जुलाई 2025 को सुप्रीम कोर्ट ने इस समस्या का स्वतःसंज्ञान लिया था। सुप्रीम कोर्ट ने इसको लेकर प्रकाशित एक मीडिया रिपोर्ट का जिक्र करते हुए इसे 'बेहद परेशान करने वाला और चिंताजनक बताया था। अदालत ने कहा था कि शहर और उसके बाहरी इलाकों में हर दिन सैकड़ों कुत्तों के काटने की खबरें आ रही हैं। कुत्तों के काटने से रेबीज हो रहा है।आमतौर पर बच्चे और बुजुर्ग इसके शिकार हो रहे हैं।सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली, एमसीडी और एनडीएमसी को निर्देश दिया है कि वे तत्काल प्रभाव से आवारा कुत्तों को सभी इलाकों से पकड़ना शुरू करें,कोर्ट ने कहा कि यह कदम बच्चों और वरिष्ठ नागरिकों को सुरक्षित रखने के लिए जरूरी है, जिससे वे बिना किसी डर के पार्कों और सड़कों पर जा सकें,कोर्ट ने यह भी साफ किया है कि पकड़े गए कुत्तों को किसी भी परिस्थिति में वापस उन्हीं इलाकों में नहीं छोड़ा जाएगा ,इस आदेश का मकसद राष्ट्रीय राजधानी को आवारा कुत्तों से मुक्त करना है।सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार, एमसीडी और एनडीएमसी को 8 हफ्तों के अंदर करीब 5000 कुत्तों के लिए शेल्टर होम बनाने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने कहा कि इन शेल्टर्स में कुत्तों की नसबंदी और टीकाकरण के लिए पर्याप्त कर्मचारी होने चाहिए। कोर्ट ने अधिकारियों को इस बुनियादी ढांचे को तैयार करने और नियमित अंतराल पर इसकी संख्या बढ़ाने का आदेश दिया है। कोर्ट ने कहा कि यह कार्रवाई इसलिए जरूरी है क्योंकि जब तक शेल्टर बनते हैं, तब तक और लोग कुत्तों के काटने का शिकार हो सकते हैं। दूसरी ओर 11 अगस्त 2025 को ही मुंबई में कबूतरों को दाना खिलाने पर लगे प्रतिबंध के खिलाफ दायर याचिका पर सुनवाई करने से सुप्रीम कोर्ट ने इनकार कर दिया है और याचिकाकर्ताओं से हाईकोर्ट जाने को कहा है। इतना ही नहीं माननीय पीठ ने बॉम्बे हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ भीड़ द्वारा दादर कबूतरखाना को जबरदस्ती खोलने और कबूतरों को दाना डालने की घटना पर गुस्सा जाहिर करते हुए कहा है कि जो लोग भी, इस तरह कोर्ट के आदेश की अवहेलना कर रहे हैं, इन्हें गिरफ्तार किया जाए और उनके खिलाफ

आपराधिक मुकदमा दर्ज किया जाए।इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्वतः संज्ञान लेने के 14 दिनों के भीतर निर्णय की फास्ट ट्रैक प्रवृत्ति जनहित की आपात समस्या निदान का सटीक उदाहरण सराहनीय है।

साथियों बात अगर हम सुप्रीम कोर्ट द्वारा आवारा कुत्तों संबंधित स्वतः संज्ञान पर एक बेंच द्वारा दिए गए जजमेंट की करें तो, यह संज्ञान 28 जुलाई 2025 को लिया था। उस दिन कोर्ट ने टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रकाशित "सिटी होउंडेड बाय स्ट्रास, किड्स पे प्राइस " शीर्षक वाले समाचार लेख को आधार मानकर मामला अपने संज्ञान में लिया और इसे "सु मोटो रिट पेटिशन (सिविल) नों. 5/2025- 'सिटी होउंडेड बाय स्ट्रास, किड्स पे प्राइसस्के रूप में रजिस्टर्ड किया था। कोर्ट ने दिल्ली सरकार व नगर निकायों (एमसीडी) को 11 अगस्त 2025 तक जवाब दाखिल करने का निर्देश भी जारी किया था। जिसकी मुख्य बातें इस प्रकार है।(1) तत्काल कारवाई का आदेशसुप्रीम कोर्ट ने निर्देश दिया किदिल्ली-एनसीआर (दिल्ली-एनसीआर) सहित नोएडा,गुरुग्राम,और गाजियाबाद के सभी स्थानीय निकायों को आवारा कुत्तों को तुरंत पकड़कर शेल्टर में ले जाने की प्रक्रिया तुरंत प्रारंभ करनी चाहिए, चाहे वे नसबंद (स्टेरिलीज्ड) हों या नहीं। कोर्ट ने स्पष्ट निर्देश दिया कि *एक भी कुत्ता सार्वजनिक स्थानों पर वापस नहीं छोड़ा जाएगा।*(2)शेल्टर्स व संरचना की व्यवस्था-कोर्ट ने दिल्ली सरकार,एमसीड औरएनडीएमसी को निर्देशित किया कि वे आने वाले आठ सप्ताह के भीतर पर्याप्त कुत्ते शेल्टर तैयार करें, जहां नसबंदी,टीकाकरण, रखरखाव,और संरक्षित परिवेश सुनिश्चित किया जा सके। इन शेल्टरों में पिछले निर्णयों के विपरीत, सीसीटीवी लगाए जाएंगे और पर्याप्त कर्मचारी लगाए जाएंगे जिससे कोई कुत्ता बच न जाए।(3) अवरोध करने वालों के खिलाफ कार्रवाई-कोर्ट ने सख्त चेतावनी दी कि अगर कोई व्यक्ति या संगठन इस कार्य में बाधा डालता है-जैसे किशेल्टर स्थापित करने या कुत्ते पकड़ने में-तो उसके खिलाफ न्यायिक कार्रवाई (कानूनी कदम) की जाएगी। यह स्पष्ट किया गया कि यह आदेश सार्वजनिक हित (लार्जर पब्लिक इंटरेस्ट) में हैं, और"इनफाट्स एंड यंग चिल्ड्रन, नॉट एट एनी कॉस्ट, शुड fall प्रेय टू रबीज"यह संदेश पूरी सख्ती के साथ दिया गया।(4) हेल्पलाइन और टीकाकरण व्यवस्था-कोर्ट ने आदेश दिया कि एक डॉग-बाइट हेल्पलाइन एक सप्ताह के भीतर स्थापित की जाए, जिस पर लोग कुत्ते काटने की घटनाओं की सूचना दे सकें। इसके साथ ही, राज्य सरकार को टीकों की उपलब्धता, स्टॉक, और इससे संबंधित जानकारी नियमित रूप से उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया। (5) एबीसी रूल्स का विरोध-सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट आक्षेप जताया कि एनिमल बर्थ कंट्रोल (एबीसी) नियम, जो नसबंद और टीकाकृत कुत्तों को उनके पहले स्थान पर वापिस छोड़ने की परंपरा स्पष्ट रूप से "अबसूर्ड"और" अनरेसनेबल" है।अदालत ने कहा, "फॉरगेट द रूल्स एंड फेस रियलिटी", यह कहते हुए कि **समाज को आवारा कुत्तों से मुक्त होना चाहिए,चाहे वे नसबंद हों या नहीं।* (6) लोक–हित की प्राथमिकता- कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण अपनाया जिसमें लोकहित (पब्लिक इंटरेस्ट) को सर्वोच्चता दी गई। कोर्ट ने स्पष्ट रूप से एनीमल राइट्स पर आधारित संगठनात्मक हस्तक्षेप को अस्वीकार कर दिया और कहा कि इस विषय में केवल विशेषज्ञ सलाह (अमिकस कुरिए) और सरकारी पक्ष की सुनवाई की जाएगी-नॉट एनिमल एक्टिविस्ट्स ओर अदर पेटिशनर्स।(7) कानूनी स्थिति-आदेश स्पष्ट रूप से बताता है कि यह मामला एक सु मोटो रिट पेटिशन है, जिसका विषय बच्चों और बुजुर्गों पर आवारा कुत्तों का जानलेवा खतरा है, और टाइम्स ऑफ इंडिया की समाचार रिपोर्ट को आधार बनाकर अदालत ने इस मामले में हस्तक्षेप किया। यह निर्णय न्यायिक उत्सर्जन (जुडीशल इंटरवेंशन) का एक उदाहरण है, जिसमें उच्चतम न्यायालय ने समस्या की गम्भीरता को देखते हुए सक्रिय भूमिका निभाई।

साथियों बात अगर हम 11 अगस्त 2025 को ही सुप्रीम कोर्ट द्वारा कबूतरों को दान देने संबंधी जजमेंट की करें तो, सुप्रीम कोर्ट ने बॉम्बे हाईकोर्ट के उस आदेश में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया जिसमें कहा गया था कि कबूतरों को खाना खिलाने से गंभीर स्वास्थ्य संबंधी खतरे पैदा होते हैं। साथ ही, कोर्ट ने बृहन्मुंबई नगर निगम को उन लोगों के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज करने का निर्देश दिया जो निगम के निर्देशों का उल्लंघन करते हुए मुंबई के 'कबूतरखानों' में कबूतरों को खाना खिलाना जारी रखते हैं। माननीय दो जजों की पीठ ने कहा,₹इस न्यायालय द्वारा समानांतर हस्तक्षेप उचित नहीं है। याचिकाकर्ता आदेश में संशोधन के लिए हाईकोर्ट जा सकता है।पीठ ने बॉम्बे हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ भीड़ द्वारा दादर कबूतरखाना को जबरदस्ती खोलने और कबूतरों को दाना डालने की घटना पर गुस्सा जाहिर करते हुए कहा है कि जो लोग भी, इस तरह कोर्ट के आदेश की अवहेलना कर रहे हैं, इन्हें गिरफ्तार किया जाए और उनके खिलाफ आपराधिक मुकदमा दर्ज किया जाए।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा आवारा कुत्तों पर स्वतःसंज्ञान के 14 दिनों में सुप्रीम न्याय की ऐतिहासिक गूँज-कबूतरों को दाना खिलाने पर भी सुप्रीम निर्णय,सुप्रीम कोर्ट का संवेदनशील हस्तक्षेप-आवारा कुत्तों से सुरक्षा व कबूतरों पर अहम्जजमेंट,सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्वतःसंज्ञान लेने के 14 दिनों में निर्णय की फास्ट ट्रैक प्रवृत्ति जनहित की आपात समस्या निदान का सटीक उदाहरण सराहनीय।

निसान मैग्नाइट निसान लाया 10 साल की वारंटी, जानिए डिटेल्स!

निसान मोटर इंडिया नई Nissan Magnite के लिए 10 साल का एक्सटेंडेड वारंटी प्रोग्राम लेकर आई है जो 2 लाख किलोमीटर तक का कवरेज देता है। इस वारंटी में इंजन और ट्रांसमिशन की सुरक्षा भी शामिल है। ग्राहक 3+7 साल या 3+4 3+3 3+2 और 3+1 साल जैसे विकल्प चुन सकते हैं। यह योजना अक्टूबर 2024 से खरीदे गए मॉडलों पर ही लागू है।

नई दिल्ली। निसान मोटर इंडिया ने नई Nissan Magnite के लिए 10 साल का एक्सटेंडेड वारंटी प्रोग्राम लेकर आई है। इसके तहत नई Magnite के लिए कई तरह का कवरेज दिया जाएगा। निसान की यह एसयूवी ग्लोबल NCAP 5-स्टार रेटिंग हासिल करने के बाद B-SUV सेगमेंट में सबसे सुरक्षित मॉडलों में से एक है। आइए विस्तार में जानते हैं कि इसपर मिल रहे 10 साल के एक्सटेंडेड वारंटी में क्या-क्या दिया जा रहा है।

वारंटी में क्या-क्या मिल रहा?

नई Nissan Magnite के लिए लॉन्च किए गए 10 साल एक्सटेंडेड वारंटी में कई तरह की सुविधाएं दी जा रही है। यह प्रोग्राम मॉडल की मानक तीन साल की वारंटी को मिलाकर 10 साल या 2 लाख किलोमीटर तक का कवरेज बढ़ाता है। ग्राहक अपनी जरूरतों के अनुसार, 3+7 साल या 3+4, 3+3, 3+2 और 3+1 साल जैसे कई कॉन्फिगरेशन में से चुन सकते हैं। इस एक्सटेंडेड वारंटी प्रोग्राम को लेकर कंपनी का कहना है कि इस प्लान की कीमत 0.22 रुपये प्रति किलोमीटर या 12 रुपये प्रतिदिन के बराबर है।

वारंटी के फायदे और सर्विस

इस एक्सटेंडेड वारंटी प्रोग्राम के तहत पहले सात सालों के लिए कवरेज में कई तरह के कंपोनेंट और मरम्मत शामिल हैं, जबकि आठवें, नौवें और दसवें साल में इंजन और ट्रांसमिशन की सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस प्लान के तहत मरम्मत देश भर के किसी भी अधिकृत निसान सर्विस सेंटर पर की जा सकती है, जिसमें क्लेम की संख्या या मूल्य पर कोई प्रतिबंध नहीं है। इसमें असली निसान पार्ट्स और कैशलेस सर्विस ऑप्शन भी शामिल हैं।

कौन हैं इसके लिए योग्य?

यह योजना केवल अक्टूबर 2024 से खरीदे गए, निजी स्वामित्व वाले नए निसान मैग्नाइट मॉडलों तक सीमित है, जो सभी तीन साल की मानक वारंटी के साथ आते हैं। मालिकों को इस योजना का लाभ उठाने के लिए मानक वारंटी अवधि के भीतर होना चाहिए और यह प्लान पहले के मैग्नाइट वेरिएंट के लिए उपलब्ध नहीं है, जिनमें दो साल की मानक वारंटी थी।

एक्सटेंडेड वारंटी को एक नया वाहन खरीदते समय या बाद में मानक वारंटी अवधि के दौरान अधिकृत निसान डीलरशिप के माध्यम से खरीदा जा सकता है। खरीदारों के लिए प्रक्रिया को और अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए निसान फाइनेंस के माध्यम से फाइनेंसिंग विकल्प भी उपलब्ध हैं।

Nissan Magnite के फीचर्स

नई निसान मैग्नाइट, CMF-A+ प्लेटफॉर्म पर बनी है, जो 40 से अधिक मानक सुरक्षा सुविधाओं के साथ है, जिसमें छह एयरबैग, ABS के साथ EBD, इलेक्ट्रॉनिक स्थिरता नियंत्रण, ट्रैक्शन कंट्रोल, हिल स्टार्ट असिस्ट, टायर प्रेशर मॉनिटरिंग और एक हाई-टेन्साइल स्टील बॉडी स्ट्रक्चर शामिल है। यह मॉडल वर्तमान में 65 से अधिक देशों में बेचा जाता है।

ओणम पर टाटा कारें पर ₹2 लाख तक की छूट, हैरियर ई.वी और कर्वव ई.वी पर सबसे ज्यादा डिस्काउंट

परिवहन विशेष न्यूज

टाटा मोटर्स ओणम के त्योहार के लिए खास ऑफर लाया है जो 25 जुलाई से 30 सितंबर 2025 तक चलेगा। इस दौरान इलेक्ट्रिक और पेट्रोल-डीजल कारों पर भारी छूट मिल रही है। Harrier EV पर एक लाख रुपये तक का डिस्काउंट है।

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स ओणम त्योहार के लिए स्पेशल फेस्टिवल ऑफर लेकर आई है। यह डिस्काउंट ऑफर 25 जुलाई से 30 सितंबर 2025 रुपये तक रहने वाला है। इस ऑफर के तहत इलेक्ट्रिक कारों के साथ ही पेट्रोल-डीजल की गाड़ियों पर भी बंपर डिस्काउंट दिया जा रहा है। इस डिस्काउंट ऑफर में हाल ही में लॉन्च हुई Harrier EV भी शामिल है, जिसपर एक लाख रुपये तक का डिस्काउंट ऑफर दिया जा रहा है। आइए विस्तार में जानते हैं कि ओणम फेस्टिव डिस्काउंट ऑफर के तहत टाटा मोटर्स की किस गाड़ी पर कितना डिस्काउंट दिया जा रहा है।

मिल रहे ये ऑफर्स

टाटा मोटर्स ओणम फेस्टिव ऑफर के तहत आसान अपग्रेड के लिए कम शुरुआती EMI बैलून पेमेंट स्कीम्स, आय में वृद्धि के साथ बढ़ती हुई EMI स्टेप-अप स्कीम्स, पहले तीन महीनों के लिए प्रति लाख पर 100 रुपये तक की कम EMI कम EMI प्लान और EV एक्सेसरीज, एक्सटेंडेड वारंटी, AMC और सर्विसिंग के लिए 6 महीने की फाइनेंसिंग ऑफर्स दिए जा रहे हैं।

पेट्रोल-डीजल वाली गाड़ियों पर ऑफर

टाटा मोटर्स ओणम फेस्टिव ऑफर के तहत Tiago पर 60,000 रुपये, Tigor पर 60,000 रुपये, Altroz पर एक लाख रुपये, Punch पर 65,000 रुपये , Nexon पर 60,000 रुपये, Curvv पर 40,000 रुपये, Harrier पर 75,000 और Safari पर 75,000 रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है।

इलेक्ट्रिक कारों पर डिस्काउंट ऑफर

टाटा मोटर्स ओणम फेस्टिव ऑफर के तहत टाटा मोटर्स की इलेक्ट्रिक कारों पर भी डिस्काउंट ऑफर दिया जा रहा है। इस डिस्काउंट ऑफर के तहत Tiago EV पर एक लाख रुपये, Punch EV पर 85,000 रुपये, Nexon EV पर एक लाख रुपये, Curvv EV पर दो लाख रुपये और हाल में लॉन्च हुई Harrier EV पर एक लाख रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है।

15 अगस्त को लॉन्च होगी महिंद्रा विजन एस, नए टीजर में दिखी फ्रंट डिजाइन की झलक

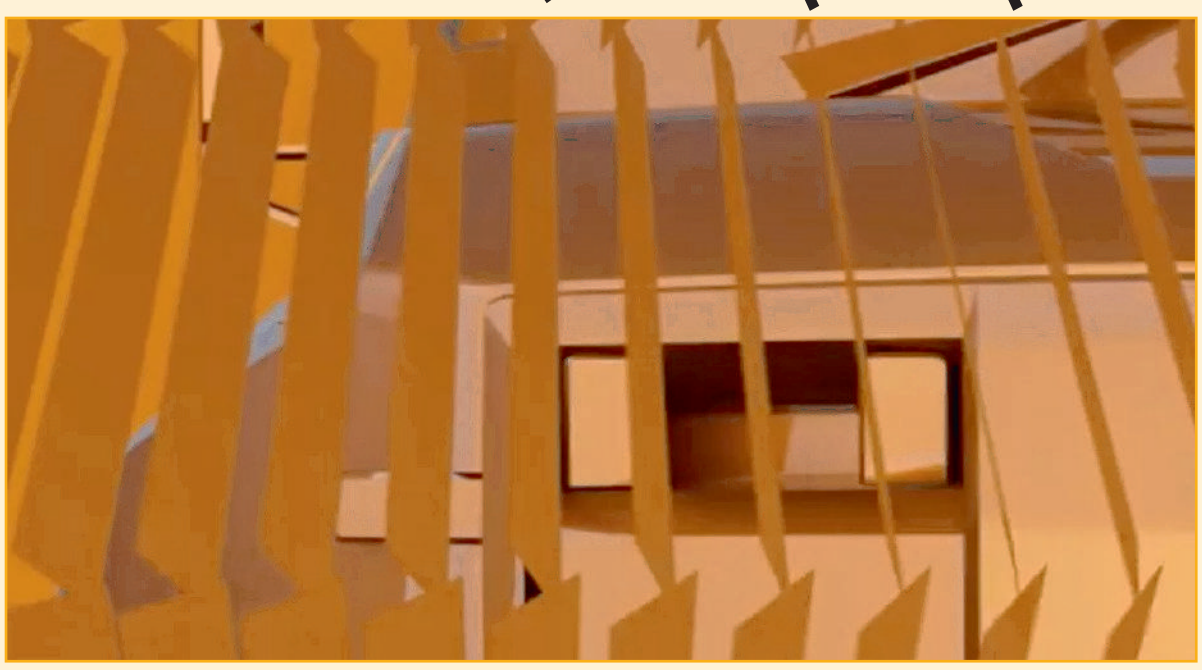

महिंद्रा विजन एस,कॉन्सेप्ट एसयूवी का नया टीजर जारी किया है जो 15 अगस्त को लॉन्च होने वाली है। यह स्कॉर्पियो ब्रांड पर आधारित है। टीजर में उल्टे L-आकार की हेडलाइट्स और सील्ड फ्रंट फेशिया दिखाई गई है। पहले के टीजर में बोनट और साइड प्रोफाइल दिखाई गई थी। डिजाइन में सीधा नोज फ्लेयर्ड व्हील आर्च और स्कूप्स शामिल हैं।

नई दिल्ली। Mahindra Vision S कॉन्सेप्ट एसयूवी का एक और टीजर इसके लॉन्च होने से पहले जारी किया गया है। इसे कंपनी 15 अगस्त को भारत में लॉन्च करने वाली है। इस कॉन्सेप्ट को महिंद्रा स्कॉर्पियो ब्रांड में Classic और Scorpio N के बेस्ड पर डेवलप किया गया है। आइए जानते हैं कि Vision S के नए टीजर में क्या-क्या देखने के लिए मिला है?

Mahindra Vision S के फ्रंट डिजाइन

इसके नए टीजर में उल्टे L-आकार की हेडलाइट्स और एक सील्ड-ऑफ फ्रंट फेशिया देखने के लिए मिला है। इसके पहले वाले टीजर में कॉन्सेप्ट एसयूवी के बोनट के ऊपरी हिस्से को दिखाया गया था और इसके बाद वाले टीजर में साइड प्रोफाइल देखने के लिए मिली थी। इसके डिजाइन में एक सीधा नोज, फ्लेयर्ड व्हील आर्च, बोनट के दोनों ओर स्कूप्स और एक हुडेड बोनट प्रोफाइल शामिल है। व्हील आर्च के लिए कोणीय क्लैडिंग और मोटे ऑफ-रोड-बायस्ड टायर भी देखने के लिए मिले हैं, जिसमें झुका हुआ फ्रंट विंडस्क्रीन भी है।

Mahindra Vision S का रियर डिजाइन

पहले जारी हुए इसके टीजर में इसके पीछे की तरफ लगेट डिज़ाइन, साइड-हिंग वाले दरवाजे के लिए ट्रेपोजॉइडल हैंडल और टेलगेट पर लगा एक स्पेयर व्हील देखने के लिए मिल चुका है। बाकी बॉडी क्लैडिंग के साथ भारी फ्लेयर्ड व्हील आर्च भी दिखाई दे चुका है। इसके रियर बम्पर पर लगी टेल-लाइट्स भी देखने के लिए मिल चुकी है।

15 अगस्त को चार गाड़ियां करेंगी डेब्यू

अभी तक Vision S के डिजाइन के अलावा बाकि फीचर्स के बारे में ज्यादा जानकारी देखने के लिए नहीं मिली है। इस 15 अगस्त को मुंबई में Vision S के साथ ही Vision T, Vision X और Vision SXT को भी भारतीय बाजार में डेब्यू किया जाएगा।

2025 येज़्दी रोडस्टर बाइक हुई लॉन्च, मिले 5 वेरिएंट और नए फीचर्स, जानें कितनी है कीमत

2025 येज़्दी रोडस्टर देश की प्रमुख दो पहिया वाहन निर्माताओं में शामिल यज़दी की ओर से भारतीय बाजार में नई रोडस्टर बाइक को लॉन्च कर दिया गया है। निर्माता की ओर से इस बाइक में क्या खासियत दी गई है। किस तरह के फीचर्स के साथ इसे लॉन्च किया गया है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख दो पहिया वाहन निर्माताओं में शामिल यज्दी की ओर से कई बाइक्स को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। निर्माता की ओर से 12 अगस्त को 2025 Yezdi Roadster बाइक को लॉन्च कर दिया है। इस बाइक में किस तरह की खासियत दी गई हैं। कितना दमदार इंजन दिया गया है। किस तरह के फीचर्स के साथ इसे किस कीमत पर खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

2025 Yezdi Roadster बाइक लॉन्च

यज्दी की ओर से 2025 रोडस्टर बाइक को भारत में लॉन्च कर दिया गया है। डिजाइन से लेकर फीचर्स तक में कई बदलाव किए गए हैं। जिसके बाद यह बाइक पहले से ज्यादा बेहतर हो गई है।

क्या है खासियत

निर्माता की ओर से इस बाइक में नए काउल के साथ गोल एलईडी हेडलाइट, पतली टेल लाइट्स, ड्यूल टोन कलर, नया पेट्रोल टैंक, रिमूवेबल पिलियन सीट, ट्यूबलैस टायर्स, दोनों पहियों में डिस्क ब्रेक, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट कलस्टर, यूएसबी चार्जिंग पोर्ट जैसे कई फीचर्स दिए गए हैं। इसके साथ ही इसमें 17 और 18 इंच टायर और 171 एमएम की ग्राउंड क्लियरेंस को दिया गया है।

कितना दमदार इंजन

यज्दी की ओर से बाइक में 334 सीसी की क्षमता का अल्फा 2 सिंगल सिलेंडर लिक्विड कूल्ड इंजन दिया गया है। जिससे इसे28.6 बीएचपी की पावर और 30 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसमें छह स्पीड ट्रांसमिशन दिया गया है।

कितनी है कीमत

यज्दी की नई रोडस्टर बाइक को पांच वेरिएंट में लॉन्च किया गया है। इसकी एक्स शोरूम कीमत 2.10 लाख रुपये रखी गई है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 2.26 लाख रुपये है। बाइक के लिए बुकिंग को शुरू कर दिया गया है और इसकी डिलीवरी भी जल्द शुरू कर दी जाएगी।

किनसे है मुकाबला

यज्दी की नई रोडस्टर बाइक को भारत में 350 सीसी क्षमता की रोडस्टर बाइक के तौर पर लॉन्च किया गया है। बाजार में इस बाइक का सीधा मुकाबला रॉयल एनफील्ड की मीटिऑर और होंडा सीबी 350 जैसी बाइक्स के साथ होगा।

फोर्स गोरखा के सभी वेरिएंट की कीमतें बढ़ीं, जानें अब क्या है नई रेंज

फोर्स मोटर्स ने अपनी पॉपुलर SUV Gurkha की कीमतों में बढ़ोतरी की है। तीन-डोर मॉडल की कीमत 3218 रुपये और पांच-डोर वर्जन की कीमत 41585 रुपये तक बढ़ाई गई है। अपडेट के बाद Gurkha की एक्स-शोरूम कीमत 16.78 लाख रुपये से 18.42 लाख रुपये तक है। इस SUV में 2.6-लीटर का डीजल इंजन है जो 140 PS की पावर जनरेट करता है और यह 4-व्हील ड्राइव के साथ आती है।

नई दिल्ली। Force Motors ने भारतीय बाजार के लिए अपनी पॉपुलर SUV, Gurkha की कीमतों को बढ़ा दिया है। इस अपडेट को तुरंत प्रभाव से लागू किया गया है। कंपनी ने इसके तीन और पांड डोर दोनों बॉडी स्टाइल के लिए कीमतों में बढ़ोतरी की है। आइए विस्तार में जानते हैं कि Force Gurkha की कीमतों में कितनी बढ़ोतरी की गई है और यह किन खास फीचर्स के साथ आती है?

कितनी बढ़ी कीमत?

तीन-डोर Force Gurkha की कीमत में 3,218 रुपये की बढ़ोतरी कर दी गई है। इसके पांच-डोर वर्जन की कीमत में पुरानी कीमतों की तुलना में 41,585 रुपये की बढ़ोतरी की गई है। इन कीमतों की बढ़ोतरी के बाद अब Gurkha की एक्स-शोरूम कीमत 16.78 लाख रुपये से लेकर 18.42 लाख रुपये तक पहुंच गई है।

Force Motors ने 2024 की शुरुआत में Gurkha को अपडेट किया था, जिसमें तीन-डोर वर्जन में अंदर और बाहर कई बदलाव किए गए थे, और साथ ही पांच-डोर डेरिवेटिव भी पेश किया गया था, जो सात-सीट कॉन्फिगरेशन के साथ आता है।

Force Gurkha के फीचर्स

इसमें 2.6-लीटर डीजल इंजन मिलता है, जो 140 PS की पावर और 320 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 5-स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ पेश किया जाता है। इसके तीन-डोर और पांच-डोर वर्जन को 4 व्हील ड्राइव के साथ ऑफर किया जाता है।

इसमें 9-इंच टचस्क्रीन सिस्टम, एक डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, चारों पावर विंडो और मैनुअल एसी समेत कई बेहतरीन फीचर्स के साथ पेश किया जाता है। इसे रेड, ग्रीन, व्हाइट और ब्लैक कलर ऑप्शन में पेश किया जाता है।

इसमें डीआरएल के साथ एलईडी हेडलैंप दिया जाता है। इसके साथ ही टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम में ब्लूटूथ, यूएसबी और ऑक्स सपोर्ट मिलता है। इसके अलावा, कॉर्नरिंग फॉग लैंप, स्किड प्लेट और एयर इंटेक स्नोर्कल भी दिए जाते हैं।

इसमें पैसेंजर्स की सेफ्टी के लिए कई बेहतरीन फीचर्स दिए जाते हैं, जिसमें दोहरे एयरबैग, एबीएस के साथ ईबीडी, उच्च-शक्ति बॉडी शेल, सीट बेल्ट रिमाइंडर शामिल है।

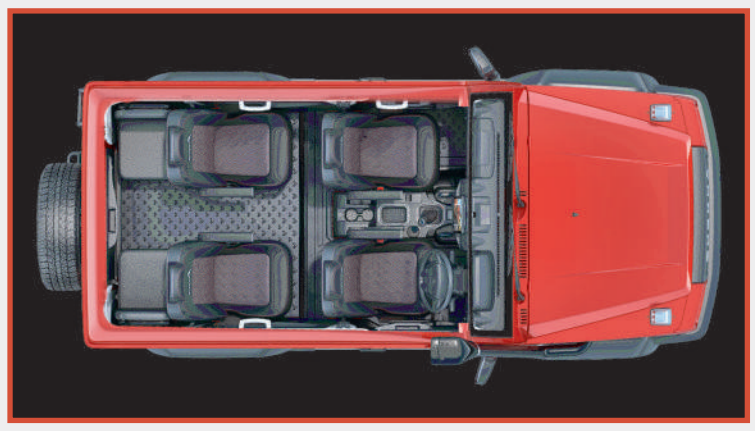

आजादी के बाद से भारतीय संगीत की 78 साल की यात्रा

विजय गर्ग

1947 में अपनी स्वतंत्रता के बाद से भारत के संगीत परिदृश्य में एक नाटकीय परिवर्तन आया है, जो अतीत की शास्त्रीय और लोक परंपराओं से एक भूमंडलीकृत, बहु-शैली पावरहाउस की ओर बढ़ रहा है। यह 78 साल की यात्रा राष्ट्र की अनुकूलनशीलता और रचनात्मकता का एक वसीयतनामा है, जिसमें संगीत अपने बदलते सांस्कृतिक और सामाजिक ताने-बाने के शक्तिशाली प्रतिबिंब के रूप में काम कर रहा है। यहाँ अपनी स्वतंत्रता के बाद से भारत में संगीत की उल्लेखनीय यात्रा पर एक नज़र हैः 1.। फिल्म संगीत का स्वर्ण युग (1940s-1960s):

लोकप्रिय संस्कृति का स्तंभः स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में, फिल्म संगीत जनता के लिए संगीत का सबसे प्रमुख और सुलभ रूप के रूप में उभरा। यह राष्ट्र-निर्माण और नौशाद, एसडी जैसे संगीत निर्देशकों का दौर था। बर्मन, और सी। रामचंद्र ने धुन तैयार की जिसने उस समय की भावना पर कब्जा कर लिया।

शास्त्रीय और लोक जड़ेंः जब ऑर्केस्ट्रेशन पश्चिमी संगीत से प्रभावित था, तो कई फिल्मी गीतों का मूल भारतीय शास्त्रीय रागों और लोक परंपराओं में गहराई से निहित था। इस संलयन ने एक अद्वितीय साउंडस्केप बनाया जिसने व्यापक दर्शकों से अपील की।

प्लेबैक सिंगर्स का उदयः इस युग में लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी और किशोर कुमार जैसे दिग्गज पार्श्व गायकों का उदय हुआ, जिनकी आवाज चांदी के पर्दे के सबसे बड़े सितारों का पर्याय बन गई। उनके गीतों ने भारत की सामूहिक सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा बनने के लिए सिनेमा की सीमाओं को पार किया। 2.। 1970 और 1980 के दशकः प्रयोग और आधुनिकीकरणः

नई आवाज़ और प्रभावः इस अवधि को अधिक प्रयोग द्वारा चिह्नित किया गया था, संगीत निर्देशकों जैसे आर.डी. बर्मन ने नई लय और इलेक्ट्रॉनिक बीट्स शुरू की। पश्चिम से चट्टान, जैज़ और डिस्को का प्रभाव अधिक स्पष्ट हो गया, जिससे अधिक उत्साहित और अपरंपरागत ध्वनि बढ़ गई।

डिस्को का उदयः बॉलीवुड में डिस्को युग, वैश्विक रुझानों से बहुत प्रभावित था, पिछले दशकों की शास्त्रीय-आधारित धुनों से एक महत्वपूर्ण प्रस्थान था।

शास्त्रीय संगीत का अस्तित्वः फिल्म संगीत के उदय के बावजूद, शास्त्रीय परंपराएं लगातार बढ़ती रहीं। ऑल इंडिया रेडियो ने हिंदुस्तानी और कर्नाटक शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें वाद्य और गायक को एक मंच दिया गया। 3। 1990 के दशकः एक नए युग की सुबहः

उदारीकरण और वैश्वीकरणः 1990 के दशक के आर्थिक उदारीकरण का संगीत उद्योग पर गहरा प्रभाव पड़ा। अंतरराष्ट्रीय संगीत और तकनीक की आमद ने भारतीय कलाकारों के लिए नए रास्ते खोल दिए।

पॉप और इंडी म्यूजिक का उद्भवः इस दशक में एक समानांतर, गैर-फिल्म संगीत दृश्य का उदय हुआ। अलीशा चिनाई, दलेर मेहंदी और लकी अली जैसे कलाकार घरेलू नाम बन गए, एक अलग तरह का संगीत दिखाते हुए जो फिल्म उद्योग से बंधा नहीं था।

तकनीकी प्रगतिः एमटीवी और चैनल वी जैसे संगीत कैसेट, सीडी और संगीत टेलीविजन चैनलों की शुरूआत ने क्रांति ला दी कि संगीत का उपभोग और प्रचार कैसे किया गया।

4। 21 वीं सदीः डिजिटल युग और वैश्विक संलयनः

डिजिटल क्रांतिः नई सहस्राब्दी डिजिटल क्रांति के बारे में लाया। इंटरनेट, स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया ने संगीत के उत्पादन, वितरित और उपभोग करने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया। स्वतंत्र कलाकारों को अब वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने के लिए एक बड़े लेबल की आवश्यकता नहीं थी।

ग्लोबल फ्यूजनः भारतीय संगीत एक वैश्विक घटना बन गया, जिसमें कलाकारों ने अंतरराष्ट्रीय संगीतकारों के साथ सहयोग किया और इलेक्ट्रॉनिक नृत्य संगीत (ईडीएम), हिप-हॉप और रॉक जैसी शैलियों के साथ प्रयोग किया। एआर उदाहरण के लिए, रहमान एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त व्यक्ति बन गया, जो आधुनिक ध्वनियों के साथ पारंपरिक भारतीय धुनों का सम्मिश्रण था।

क्षेत्रीय संगीत का उदयः डिजिटल युग ने क्षेत्रीय संगीत को भी बढ़ावा दिया, जिसमें भारत के विभिन्न हिस्सों के कलाकारों को व्यापक मान्यता मिली।

फिल्म संगीत का निरंतर विकासः बॉलीवुड संगीत विकसित करना जारी रखता है, संगीतकार लगातार नई ध्वनियों और तकनीकों के साथ प्रयोग करते हैं, लेकिन अब यह एक जीवंत और विविध स्वतंत्र संगीत दृश्य के साथ सह-मौजूद है। संक्षेप में, स्वतंत्रता के बाद से भारतीय संगीत की 78 साल की यात्रा निरंतर विकास की कहानी है, शास्त्रीय-प्रभावित धुनों के सुनहरे युग से लेकर प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण के आकार के जीवंत, बहुआयामी परिदृश्य तक। यह एक यात्रा है जो एक ऐसे राष्ट्र की गतिशीलता को दर्शाती है जिसने आधुनिक दुनिया की लय के अनुकूल होने के साथ-साथ अपनी समृद्ध संगीत विरासत को अपनाया है।

डिग्री से लेकर कौशल तकः भविष्य में तैयार कार्यबल को चलाने के लिए भारत के युवाओं को व्यावहारिक कौशल की आवश्यकता क्यों है

विजय गर्ग

भारत की बढ़ती युवा आबादी देश के आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करती है। हालांकि, एक लगातार चुनौती पारंपरिक शैक्षणिक डिग्री और आधुनिक कार्यबल द्वारा आवश्यक व्यावहारिक कौशल के बीच डिस्कनेक्ट है। जबकि हर साल लाखों युवा स्नातक होते हैं, उनमें से एक पर्याप्त हिस्से को समस्या-समाधान, संचार और महत्वपूर्ण सोच जैसे लागू कौशल की कमी के कारण ₹रोजगार योग्य₹ नहीं माना जाता है। यह कौशल अंतर एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जिसे यह सुनिश्चित करने के लिए संबोधित किया जाना चाहिए कि भारत के युवा भविष्य के लिए तैयार कार्यबल को चला सकते हैं। व्यावहारिक कौशल आवश्यक होने के कारणों पर एक गहरी नज़र डालें और वे भारत में काम के भविष्य को कैसे आकार दे रहे हैंः 1.। विकसित जॉब मार्केट और ₹फ्यूचर-रेडी₹ कौशल का उदय कार्यस्थल प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), स्वचालन और डिजिटल उपकरणों द्वारा संचालित एक तेजी से परिवर्तन से गुजर रहा है। इससे नियोक्ताओं के मूल्य वाले कौशल में बदलाव आया है। जबकि तकनीकी ज्ञान अभी भी महत्वपूर्ण है, ₹मानव केंद्रित₹ कौशल की बढ़ती मांग है जिसे एआई आसानी से दोहरा नहीं सकता है। इनमें शामिल हैंः

समस्या-समाधानः जटिल मुद्दों का विश्लेषण करने, समाधानों का मूल्यांकन करने और सूचित निर्णय लेने की क्षमता।

महत्वपूर्ण सोचः निर्णय लेने के लिए तार्किक और तर्कसंगत रूप से सोचने की क्षमता।

अनुकूलनशीलता और लचीलापनः परिवर्तन के लिए खुला होने की इच्छा, नई स्थितियों के लिए समायोजित, और एक सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ चुनौतियों को गले लगाओ ।

संचारः विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने, सक्रिय रूप से सुनने और दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से सहयोग करने की क्षमता।

डिजिटल साक्षरताः उत्पादकता बढ़ाने के लिए एआई सहित डिजिटल उपकरणों और प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने में प्रवीणता।2.।व्यावसायिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से गैप को पाटना पारंपरिक डिग्री-आधारित शिक्षा अक्सर सैद्धांतिक ज्ञान पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करती है, जिससे स्नातक नौकरी की व्यावहारिक मांगों के लिए तैयार नहीं होते हैं। इसे संबोधित करने के लिए, व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रमों पर जोर दिया जा रहा है। सरकार ने उद्योग-प्रासंगिक कौशल वाले युवाओं को सशक्त बनाने के लिए कौशल भारत मिशन और प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) जैसी पहल भी शुरू की है। ये कार्यक्रम कई लाभ प्रदान करते हैंः

कार्यबल में तेजी से प्रवेशः व्यावसायिक पाठ्यक्रम अक्सर पारंपरिक डिग्री की तुलना में छोटे और अधिक केंद्रित होते हैं, जिससे युवा लोग नौकरी के लिए तैयार कौशल प्राप्त कर सकते हैं और जल्द ही अपना करियर शुरू कर सकते हैं।

उद्योग-विशिष्ट विशेषज्ञताः व्यावसायिक प्रशिक्षण स्वास्थ्य देखभाल, प्रौद्योगिकी, कुशल ट्रेडों और विनिर्माण जैसे उच्च मांग वाले क्षेत्रों के लिए विशिष्ट अनुभव और तकनीकी क्षमता प्रदान करता है।

बढ़ी हुई रोजगारः व्यावहारिक प्रशिक्षण और ऑन-द-जॉब अनुभव प्रदान करके, ये कार्यक्रम किसी व्यक्ति की नौकरी हासिल करने की संभावना को काफी बढ़ाते हैं।

उद्यमिता को सशक्त बनानाः व्यावसायिक प्रशिक्षण व्यक्तियों को अपने स्वयं के व्यवसाय शुरू करने, स्वरोजगार और रोजगार सृजन को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करता है। 3। एक कुशल कार्यबल को बढ़ावा देने में सरकार और उद्योग की भूमिका सरकार और निजी क्षेत्र दोनों ही कौशल-आधारित पारिस्थितिकी तंत्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हाल के सरकारी सुधारों और पहलों में शामिल हैंः

व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरणः राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क का उपयोग व्यावसायिक सीखने के लिए ऋण प्रदान करने के लिए किया जा रहा है, जबकि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (यूपी बोर्ड) जैसे बोर्ड व्यावसायिक विषयों और स्कूल पाठ्यक्रम में अनिवार्य इंटर्नशिप को एकीकृत कर रहे हैं ताकि छात्रों को व्यावहारिक लाभ मिल सके। कम उम्र से।

सार्वजनिक-निजी भागीदारीः सरकार बाजार की जरूरतों के साथ प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को संरेखित करने के लिए निजी क्षेत्र के साथ काम कर रही है और यह सुनिश्चित करती है कि सीखे गए कौशल सीधे उपलब्ध नौकरियों पर लागू हों।

कौशल को अवसरों से जोड़नाः कौशल भारत डिजिटल हब और रोज़गार मेलों जैसी घटनाओं जैसे प्लेटफार्मों का उपयोग कुशल उम्मीदवारों को नियोक्ताओं और प्रशिक्षुता के अवसरों से जोड़ने के लिए किया जा रहा है। डिग्री-केंद्रित से कौशल-आधारित दृष्टिकोण में संक्रमण भारत के लिए अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने और नवाचार और आर्थिक विकास को चलाने में सक्षम भविष्य के लिए तैयार कार्यबल का निर्माण करने के लिए महत्वपूर्ण है।

रजिस्टर्ड पोस्ट का अंतः भरोसे की वह मुहर अब नहीं रहेगी

विजय गर्ग

डाकिए की साइकिल की घंटी, थैले से झाँकते पत्रों की उत्सुक प्रतीक्षा, और रजिस्टर्ड डाक की पावती पर हस्ताक्षर का रोमांच - ये पल भारतीयों के दिलों में एक युग की तरह अमर हैं। लेकिन अब यह युग समाप्त होने जा रहा है। भारतीय डाक विभाग ने 1 सितंबर, 2025 से अपनी 50 साल पुरानी रजिस्टर्ड पोस्ट सेवा को बंद करने क ऐलान किया है, जिसे अब स्पीड पोस्ट में समाहित कर दिया जाएगा। यह निर्णय केवल एक सेव का अंत नहीं, बल्कि लाखों लोगों की भावनाओं, यादों, और विश्वास से जुड़े एक इतिहास क समापन है। रजिस्टर्ड पोस्ट, जो कभी नौकरी के नियुक्ति पत्र, कानूनी नोटिस, या प्रियजनो के बधाई संदेशों का वाहक थी, अब केवल स्मृतियों में सिमट जाएगी। यह सेवा न केवल दस्तावेजों को जोड़ती थी, बल्कि यह भारत के ग्रामीण और शहरी जीवन की धड़कन थी, जो अब हमेशा के लिए थम जाएगी।

रजिस्टर्ड पोस्ट का इतिहास ब्रिटिश काल से शुरू होता है, जब इसे औपनिवेशिक शासन ने महत्वपूर्ण दस्तावेजों की सुरक्षित डिलीवरी के लिए शुरू किया था। यह सेवा अपन विश्वसनीयता और कानूनी मान्यता के लिए जानी जाती थी । अदालतों में इसके जरिए भेजे गए दस्तावेज साक्ष्य के रूप में स्वीकार किए जाते थे, और सरकारी विभागों, बैंकों, और शैक्षणिक संस्थानों ने इसका भरपूर उपयोग किया। 2024-25 की भारतीय डाक विभाग की रिपोर्ट के अनुसार, देश भर में लगभग 9.8 करोड़ रजिस्टर्ड डाक आइटम भेजे गए, जो इस सेवा की व्यापक लोकप्रियता को दर्शाता है। पावती सहित डाक (ऐकनॉलेजमेंट ड्यू) की सुविधा ने इसे और भी भरोसेमंद बनाया, क्योंकि प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर डिलीवरी की पुष्टि करते थे। यह सेवा उन दिनों की याद दिलाती है, जब डाकिया किसी संदेशवाहक से कम नहीं था, जो खुशी, उम्मीद, और कभी- कभी उदासी के पत्र लेकर घर-घर पहुंचता था ।

डिजिटल युग के आगमन और निजी कूरियर सेवाओं के बढ़ते दबदबे ने डाक विभाग को अपने परिचालन को पुनर्गठित करने के लिए प्रेरित किया है। सरकार का तर्क है कि रजिस्टर्ड पोस्ट को स्पीड पोस्ट में मिलाने से परिचालन अधिक कुशल होगा, ट्रैकिंग प्रणाली बेहतर होगी, और ग्राहकों को तेज सेवा मिलेगी। स्पीड पोस्ट, जो 1986 में शुरू हुई थी, अपनी त्वरित डिलीवरी और उन्नत

ट्रैकिंग के लिए पहले ही प्रसिद्ध है। भारतीय डाक विभाग के 2025 के आंकड़ों के अनुसार, स्पीड पोस्ट की ट्रैकिंग प्रणाली 99.97त्न सटीक है, और यह सेवा 230 से अधिक देशों में अंतरराष्ट्रीय डिलीवरी प्रदान करती है। इसके विपरीत, रजिस्टर्ड पोस्ट की ट्रैकिंग सुविधा अपेक्षाकृत सीमित थी और यह मुख्य रूप से घरेलू डिलीवरी तक ही प्रभावी थी। डाक विभाग का दावा है कि इस एकीकरण से वार्षिक परिचालन लागत में 12न की कमी आएगी, जिससे संसाधनों का बेहतर उपयोग हो सकेगा।

निश्चित रूप से, इस बदलाव का आर्थिक असर आम आदमी पर पड़ना अवश्यंभावी है। रजिस्टर्ड पोस्ट, अपनी किफायती दरों के लिए लोकप्रिय, अब चुनौती बन सकती है। इसकी शुरुआती फीस 25.96 रुपये है, जिसमें प्रति 20 ग्राम या उसके हिस्से पर 5 रुपये अतिरिक्त लगते हैं। दूसरी ओर, स्पीड पोस्ट की शुरुआत 50 ग्राम तक के लिए 41 रुपये से होती है, जो दूरी और वजन के साथ बढ़ती जाती है - यह रजिस्टर्ड पोस्ट से 20-25 महंगी है। ग्रामीण भारत, जहां 1.56 लाख डाकघरों में से 89न (भारतीय डाक विभाग, 2025 वार्षिक रिपोर्ट) संचार का प्रमुख साधन हैं, वहां यह बदलाव छोटे व्यापारियों, किसानों और

आम नागरिकों के लिए भारी पड़ सकता है। रजिस्टर्ड पोस्ट की सस्ती दरें लाखों लोगों के लिए वरदान थीं, लेकिन अब स्पीडपोस्ट की बढ़ी लागत ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर नया बोझ डाल सकती है ।

इस निर्णय का भावनात्मक पहलू भी गहरा है। आज की पीढ़ी, जो ऐप आधारित कूरियर सेवाओं और डिजिटल संचार की आदी है, शायद इस बदलाव को सामान्य माने। लेकिन पुरानी पीढ़ी के लिए रजिस्टर्ड पोस्ट केवल एक सेवा नहीं थी, बल्कि उनके जीवन की कहानियों का हिस्सा थी। डाकिए की वह साइकिल, जिसकी घंटी सुनकर बच्चे और बड़े उत्साह से दरवाजे की ओर दौड़ते थे, वह लाल डाक पेटी, जो प्रेम पत्रों से लेकर सरकारी सूचनाओं तक का गवाह थी, और वह पावती, जो विश्वास की मुहर थी — ये सभी अब केवल स्मृतियों में रह जाएंगे ।रजिस्टर्ड पोस्ट ने न केवल दस्तावेज पहुंचाए, बल्कि यह उन पलों को भी जीवंत किया, जब लोग अपने प्रियजनों के पत्रों का इंतजार करते थे। यह सेवा उस समय की याद दिलाती है, जब संचार का मतलब केवल सूचना का आदान- प्रदान नहीं, बल्कि भावनाओं का एक सेतु था।

यह बदलाव भारतीय डाक विभाग की आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है, लेकिन यह एक ऐसी विरासत का अंत भी है, जो ब्रिटिश काल से लेकर स्वतंत्र भारत तक लोगों के जीवन का हिस्सा रही। रजिस्टर्ड पोस्ट का नाम अब डाक विभाग के रिकॉर्ड और लोगों की स्मृतियों में ही बचेगा। इस बदलाव के दीर्घकालिक प्रभाव अभी देखने बाकी हैं। क्या स्पीड पोस्ट रजिस्टर्ड पोस्ट की विश्वसनीयता और किफायती दरों को पूरी तरह प्रतिस्थापित कर पाएगी ? क्या ग्रामीण भारत, जहां डिजिटल पहुंच अभी भी सीमित है, इस बदलाव को सहजता से स्वीकार कर पाएगा ?

ये सवाल समय के साथ जवाब पाएंगे। लेकिन एक बात निश्चित है- रजिस्टर्ड पोस्ट का अंत केवल एक डाक सेवा का बंद होना नहीं है, बल्कि यह उस विश्वास, उन यादों, और उस युग का समापन है, जो भारतीय डाक विभाग की आत्मा में बसा था। यह बदलाव हमें यह भी सिखाता है कि प्रगति की राह में हमें अपनी कीमती परंपराओं को अलविदा कहना पड़ता है, भले ही वह कितना ही कष्टकारी क्यों न हो

स्वतंत्रता के बाद से देश में पर्यावरण विज्ञान की यात्रा

विजय गर्ग

स्वतंत्रता के बाद से भारत में पर्यावरण विज्ञान की यात्रा तेजी से विकास, प्राचीन पारिस्थितिक ज्ञान और पर्यावरण क्षरण की बढ़ती चेतना के जटिल परस्पर क्रिया से जूझ रहे राष्ट्र की एक आकर्षक कहानी है। इस यात्रा को मोटे तौर पर कई चरणों में विभाजित किया जा सकता है, प्रत्येक पर्यावरणीय मुद्दों के लिए एक अलग दृष्टिकोण की विशेषता है।1.। प्रारंभिक वर्ष (1947 - 1970): पर्यावरण पर विकास तत्काल स्वतंत्रता के बाद के युग में, सरकार का प्राथमिक ध्यान आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन पर था। प्रचलित दर्शन यह था कि अक्सर पर्यावरण की कीमत पर विकास राष्ट्रीय प्रगति के लिए आवश्यक था। पर्यावरणीय चिंताएं नीति प्रवचन का एक प्रमुख हिस्सा नहीं थीं। कानूनी ढांचा काफी हद तक ब्रिटिश औपनिवेशिक युग से एक कैरी-ओवर था, जिसमें 1927 के भारतीय वन अधिनियम जैसे कार्य थे।2.। टर्निंग प्वाइंटः 1970 के दशक और पर्यावरण जागरूकता का उदय 1970 के दशक में भारत के पर्यावरण प्रक्षेपवक्र में एक महत्वपूर्ण बदलाव हुआ। इस दशक में कई प्रमुख घटनाओं और घटनाक्रमों का संगम देखा गयाः

वैश्विक प्रभावः स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण पर 1972 का संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन एक वाटरशेड क्षण था। इसने अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय एजेंडा में पर्यावरणीय मुद्दों को सबसे आगे बढ़ाया। भारत एक भागीदार था और सम्मेलन ने सरकार को राष्ट्रीय पर्यावरण नीति और योजना परिषद की स्थापना के लिए प्रेरित किया। प्रमुख पर्यावरणीय आंदोलनः 1970 के दशक में शक्तिशाली जमीनी आंदोलनों का उद्भव हुआ जिसने पर्यावरण के मुद्दों को जनता के ध्यान में लाया।

चिपको आंदोलन (1973): उत्तराखंड के हिमालयी क्षेत्र में उत्पन्न, इस आंदोलन ने ग्रामीणों, विशेष रूप से महिलाओं, पेड़ों को गले लगाते हुए देखा ताकि उन्हें वाणिज्यिक यात्रियों द्वारा गिर जाने से रोका जा सके। यह समुदाय के नेतृत्व वाले वन संरक्षण का एक शक्तिशाली प्रतीक बन गया।

द साइलेंट वैली मूवमेंट (1970 के दशक के अंत में): इस आंदोलन ने केरल की साइलेंट वैली में एक पनबिजली परियोजना का सफलतापूर्वक विरोध किया, जिसमें नाजुक पारिस्थितिक तंत्र और जैव विविधता के संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

विधायी परिवर्तनः इस नई जागरूकता ने विधायी गतिविधि की झड़ी लगा दी। 1972 का वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम कानून का एक ऐतिहासिक टुकड़ा था जो जंगली जानवरों, पक्षियों और पौधों की सुरक्षा के लिए प्रदान किया गया था। इसके बाद 1974 का जल (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, जो प्रदूषण को दूर करने वाला पहला व्यापक कानून था। 3। पर्यावरण शासन का संस्थागत रूपः 1980 का दशक 1980 के दशक में पर्यावरण ढांचे को और अधिक संस्थागत बनाने और मजबूत करने की अवधि थी।

भोपाल गैस त्रासदी (1984): इस औद्योगिक आपदा ने सख्त पर्यावरणीय नियमों और एक मजबूत प्रवर्तन तंत्र की तत्काल आवश्यकता के गंभीर अनुस्मारक के रूप में कार्य किया। इसने सरकार को और निर्णायक कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया।

पर्यावरण और वन मंत्रालय (1985): राष्ट्रीय पर्यावरण नीति और योजना परिषद को एक पूर्ण मंत्रालय, (अब पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय) में अपग्रेड किया गया था। इसने पर्यावरण संरक्षण को विनियमित करने और सुनिश्चित करने के लिए एक समर्पित प्रशासनिक निकाय की स्थापना की।

पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986: यह अधिनियम भोपाल त्रासदी का सीधा जवाब था। यह एक व्यापक कानून था जिसने केंद्र सरकार को पर्यावरण की रक्षा और सुधार करने और प्रदूषण को नियंत्रित करने और रोकने के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान किया।

संवैधानिक संशोधनः पर्यावरण संबंधी चिंताओं को 42 वें संशोधन (1976) के साथ संवैधानिक मंजूरी दी गई, जिसमें अनुच्छेद 48 ए (राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत) और अनुच्छेद 51-ए (जी) (मौलिक कर्तव्य) को जोड़ा गया, जिससे यह राज्य और पर्यावरण की रक्षा और सुधार के लिए प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य बन गया।4। सतत विकास और सार्वजनिक भागीदारी का युगः 1990 और परे 1990 के दशक और नई सहस्राब्दी में, सतत विकास की अवधारणा के साथ पर्यावरणीय चिंताओं को एकीकृत करने की दिशा में ध्यान केंद्रित किया गया।

न्यायिक सक्रियताः न्यायपालिका ने पर्यावरण शासन में सक्रिय भूमिका निभानी शुरू की। एक महत्वपूर्ण क्षण 1991 में सुप्रीम कोर्ट का निर्देश था जिसने पर्यावरण अध्ययन को शिक्षा के सभी स्तरों पर एक अनिवार्य विषय बना दिया। यह निर्णय पर्यावरण वकील एम.सी. द्वारा जनहित याचिका (पीआईएल) का परिणाम था। मेहता।

नया विधानः 2000 के दशक में कई महत्वपूर्ण कानूनों को पारित किया गया, जिनमें शामिल हैंः

** जैविक विविधता अधिनियम, 2002: जैव विविधता के संरक्षण के लिए, इसके घटकों के स्थायी उपयोग को बढ़ावा देना, और जैविक संसाधनों के उपयोग से उत्पन्न होने वाले लाभों का उचित और न्यायसंगत साझाकरण सुनिश्चित करना।

अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006: वन-निवास समुदायों के अधिकारों और वन संरक्षण में उनकी भूमिका को स्वीकार किया।

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) (2010): एनजीटी को पर्यावरण संरक्षण और वनों और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से संबंधित मामलों को संभालने के लिए एक विशेष न्यायिक निकाय के रूप में स्थापित किया गया था। यह पर्यावरणीय मुद्दों के लिए त्वरित और प्रभावी न्याय प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 5.। वर्तमान-दिन चुनौतियां और भविष्य की दिशा आज, देश में पर्यावरण विज्ञान और नीति विकसित होती रहती है। भारत सक्रिय रूप से वैश्विक जलवायु परिवर्तन पहल में लगा हुआ है और महत्वाकांक्षी नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों के लिए प्रतिबद्ध है। हालांकि, महत्वपूर्ण चुनौतियां बनी हुई हैं, जिनमें शामिल हैंः

वायु और जल प्रदूषणः शहरी और औद्योगिक प्रदूषण प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंताएं हैं।

जैव विविधता हानि और आवास क्षरणः तेजी से शहरीकरण और बुनियादी ढांचे के विकास से भारत की समृद्ध जैव विविधता को खतरा है।

अपशिष्ट प्रबंधनः ठोस, प्लास्टिक और इलेक्ट्रॉनिक कचरे का प्रबंधन एक बढ़ती चुनौती है।

जलवायु परिवर्तन प्रभावः देश जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, जैसे कि चरम मौसम की घटनाएं, समुद्र-स्तर में वृद्धि और खाद्य सुरक्षा मुद्दे। स्वतंत्रता के बाद से भारत में पर्यावरण विज्ञान की यात्रा एक गैर-मुद्दे से राष्ट्रीय नीति के केंद्रीय स्तंभ में बदल गई है, जो सार्वजनिक आंदोलनों, विधायी कार्रवाई और न्यायिक हस्तक्षेप के संयोजन से प्रेरित है। आगे के मार्ग के लिए अभिनव समाधान, सार्वजनिक जागरूकता और राष्ट्रीय विकास के सभी पहलुओं में पर्यावरणीय चिंताओं के एकीकरण पर निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है।

"आखिर कितना उपयोगी साबित होगा ओपन बुक असेसमेंट ?"

सुनील कुमार महला

आज हम इक्कीसवीं सदी में सांस ले रहे हैं और इस सदी की आवश्यकताओं के मद्देनजर हमारे देश में नई शिक्षा नीति-2025 भी लागू की गई है, जो कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का ही एक उन्नत रूप या संस्करण है, लेकिन इसमें भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, लचीला और कौशल आधारित(स्किल बेस्ड) बनाने पर जोर दिया गया है ।नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2025 की प्रमुख विशेषताओं की यदि हम यहां पर बात करें तो इसमें क्रमशः संरचनात्मक बदलाव(5+3+3+4 मॉडल) किया गया है। वहीं पर दूसरी ओर इसमें कक्षा 5 तक की शिक्षा मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में दिए जाने, व्यावसायिक व कौशल शिक्षा(आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, संचार और सहयोग जैसे कौशल), बहु-विषयक शिक्षा जैसे कि विज्ञान, कला, वाणिज्य के पारंपरिक सीमाओं से हटकर, छात्र अपने रुचि के अनुसार विषय चुनना (उदाहरण के तौर पर गणित के साथ संगीत, भौतिकी के साथ इतिहास आदि), परीक्षा और मूल्यांकन प्रणाली में सुधार, डिजिटल और तकनीकी शिक्षा, उच्च शिक्षा में सुधार (विश्वविद्यालयों को स्वायत्तता, अधिक अनुसंधान और वैश्विक सहयोग का अवसर प्रदान करना), तथा समावेशी और समरस शिक्षा को भी शामिल किया गया है ।इसी क्रम में हाल ही में, सीबीएसई ने एक साहसिक निर्णय लिया है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार अगले शैक्षणिक सत्र 2026-27 से कक्षा 9 के विद्यार्थियों को 'ओपन बुक असेसमेंट' (ओबीए) के तहत प्रमुख विषयों में खुली किताब लेकर परीक्षा देने की अनुमति होगी। दूसरे शब्दों में कहें तो साल में दो बार परीक्षा के साथ-साथ अब 9वीं की परीक्षा को ओपन बुक कर दिया गया है ।राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के अनुसार, ओपन बुक असेसमेंट वह परीक्षा है जिसमें छात्र प्रश्नों के उत्तर देते समय पाठ्यपुस्तक, कक्षा नोट्स, पुस्तकालय की पुस्तकें जैसी संदर्भ सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। वास्तव में सीबीएसई इस पहल का मुख्य उद्देश्य छात्रों में रटने की प्रवृत्ति को कम करना(टू रिड्यूस टेंडेंसी आफ क्रेमिंग इन स्टूडेंट्स) और योग्यता-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना है। दरअसल, इस संबंध में बोर्ड का यह मानना है कि इससे बच्चों में परीक्षा के प्रति तनाव घटेगा, छात्रों की वैचारिक समझ मजबूत होगी और ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग बढ़ेगा। यहां पाठकों को बताता चलूं कि यह प्रस्ताव दिसंबर 2023 में स्वीकृत एक पायलट प्रोजेक्ट के बाद आया है, जिसमें कक्षा 9 से 12 तक ओपन-बुक परीक्षाओं का परीक्षण किया गया था, जिसमें छात्रों का प्रदर्शन 12 प्रतिशत से 47 प्रतिशत के बीच रहा। वास्तव में यह संसाधनों के प्रभावी उपयोग और विषय अवधारणाओं को समझने में चुनौतियों का संकेत देता है। गौरतलब है कि सीबीएसई का यह ओपन-बुक असेसमेंट फॉर्मेट भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे मुख्य विषयों को कवर करेगा। एग्जाम के दौरान छात्र टेक्स्ट बुक, क्लास नोट्स और अन्य स्वीकृत रिसोर्सेज का संदर्भ ले सकते हैं। सीबीएसई ने कहा है कि ये स्कूलों पर निर्भर करता है कि इस फॉर्मेट को अपनाना है नहीं, ये बिल्कुल ऑप्शन होगा ।असेसमेंट हर शैक्षणिक सत्र में होने वाली तीन पेन-पेपर टेस्ट का हिस्सा होगा ।इस संबंध में सीबीएसई ने बताया है कि ये परीक्षा दूसरी बार वाली परीक्षा स्टूडेंट्स के लिए ऑप्शनल होगी। दूसरे चरण की परीक्षाएं विशेष रूप से सुधार के लिए होंगी। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि सीबीएसई के इस फैसले के दूरगामी प्रभावों पर शिक्षा जगत में एक गंभीर बहस छिड़ गई है। सवाल यह उठता है कि क्या सीबीएसई यह प्रयोग वास्तव में हमारे बच्चों को सशक्त बनाएगा या उन्हें आत्मनिर्भरता और स्मरण शक्ति से दूर ले जाएगा ? हाल फिलहाल, सीबीएसई का यह मानना है कि यह बदलाव छात्रों के मानसिक दबाव को कम करेगा, खासकर उन विषयों में जहां तथ्यों की मात्रा या संख्या अधिक है। सीबीएसई के इस बदलाव से छात्रों में समस्या समाधान कौशल विकसित हो सकेगा। बोर्ड का यह दावा है कि सैंपल पेपर और प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से छात्रों को संदर्भ सामग्री का सही उपयोग सिखाया जाएगा। साथ ही, स्कूलों को इस पद्धति को लागू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा, हालांकि इसे अनिवार्य नहीं किया गया है, जैसा कि इस संदर्भ में ऊपर जानकारी दी जा चुकी है ।हाल फिलहाल, देखा जाए तो इस पद्धति के खतरे भी कुछ कम नहीं हैं। इससे आत्मनिर्भरता में कमी आएगी। कहना ग़लत नहीं होगा कि नौवीं कक्षा वह आधारभूत स्तर है, जहां छात्रों को विषयों की गहराई में जाने, तथ्यों को याद रखने और तर्कशक्ति विकसित करने की आदत डाली जानी चाहिए। यह नई व्यवस्था बोर्ड परीक्षा की तैयारी पर अवश्य ही असर डालेगी, जैसा कि कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में यह सुविधा उपलब्ध नहीं होगी। कहना ग़लत नहीं होगा कि सीबीएसई के कक्षा नौवीं में इस बदलाव से छात्र 'ओपन बुक असेसमेंट'(ओबीए) के आदी हो जाएंगे और अगली कक्षा यानी कि बोर्ड की दसवीं की परीक्षा में कहीं न कहीं कठिनाइयों को महसूस करेंगे। शिक्षा की गुणवत्ता पर भी इससे व्यापक असर पड़ेगा। परिणामस्वरूप, बोर्ड परीक्षाओं का औसत परिणाम गिर सकता है, जो सीधे देश की शिक्षा गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव डालेगा। यहां पाठकों को बताता चलूं कि अमेरिका और यूरोप के कुछ हिस्सों में ओपन बुक परीक्षा पद्धति पहले से प्रचलित है, लेकिन वहां यह केवल उच्च शिक्षा स्तर (कॉलेज और यूनिवर्सिटी) में ही लागू होती है, जहां छात्र परिपक्व, शोधोन्मुख और विश्लेषणात्मक सोच में दक्ष होते हैं। नीदरलैंड की ज्यादातर यूनिवर्सिटीज, सिंगापुर और हांगकांग के कई संस्थान, और कनाडा के कुछ राज्यों में हाईस्कूल स्तर तक यह सिस्टम अपनाया जाता रहा है ।कहना ग़लत नहीं होगा कि स्कूली स्तर पर, खासकर 14-15 साल के किशोरों में, यह पद्धति(ओबीए) अनुशासन और स्मरण शक्ति के विकास में बाधा डाल सकती है। यह ठीक है कि आज भारत में स्कूली स्तर पर बच्चों में रटने की प्रवृत्ति कहीं अधिक है लेकिन इस प्रवृत्ति को कम करने के लिए समझ पर ध्यान केंद्रित करना, विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करना, और एक संरचित अध्ययन कार्यक्रम बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। यदि वास्तव में सीबीएसई का उद्देश्य रटने की प्रवृत्ति को कम करना है, तो इसे धीरे-धीरे और वैकल्पिक रूप में लागू किया जाना चाहिए। अमेरिका और यूरोप की भांति इसे देश में पहले उच्च कक्षाओं में प्रयोगात्मक तौर पर शुरू किया जाए ।कक्षा 9 में ओबीए के बजाय प्रोजेक्ट-आधारित मूल्यांकन, केस स्टडी और मौखिक परीक्षा जैसे तरीकों को बढ़ावा दिया जा सकता है ।सच तो यह है कि व्यावहारिक गतिविधियाँ, समस्या-समाधान अभ्यास, और इंटरैक्टिव शिक्षण अनुभव, 9 वीं कक्षा के छात्रों के उपयोगी और महत्वपूर्ण साबित हो सकते हैं। वास्तव में, आज जरूरत इस बात की है कि हम छात्रों में संदर्भ सामग्री का सही इस्तेमाल सिखाने के साथ-साथ बिना किताब के उत्तर देने की क्षमताएं भी विकसित करें। सच तो यह है कि छात्र-छात्राएं मानसिक रूप से सशक्त होने चाहिए। शिक्षा की गुणवत्ता और स्तर को बनाए रखने के लिए संतुलित, चरणबद्ध और परीक्षण-आधारित दृष्टिकोण को अपनाया जाना बहुत ही महत्वपूर्ण और आवश्यक है। बहरहाल, पाठकों को यहां बताता चलूं कि परीक्षा प्रणाली में ऐसा नवाचार सीबीएसई ने पहली बार नहीं किया है। करीब आठ-दस साल पहले भी ओपन टेक्स्ट बेस्ड असेसमेंट (ओटीबीए) भी कमोबेश इसी तरह का था, जिसमें नौवीं व ग्यारहवीं कक्षा के कुछ विषयों में विद्यार्थियों को संदर्भ सामग्री चार माह पहले ही दे दी जाती थी। लेकिन, दो-तीन साल बाद ही इसे हटा दिया गया था। ओपन बुक असेसमेंट का नुक़सान यह है कि बिना तैयारी के किताब साथ होने का कोई फायदा नहीं है। साथ ही, किताब से जवाब ढूंढना और फिर समझकर लिखना काफी समय ले सकता है। इतना ही नहीं, अलग-अलग छात्रों की भाषा और प्रस्तुति अलग होगी, जिससे मार्किंग में भी चुनौती आ सकती है। वास्तव में, ओपन बुक परीक्षा को एक के बाद आगे की दूसरी कक्षा में साल-दर-साल लागू किया जाना चाहिए। होना तो यह भी चाहिए कि भले ही शिक्षा प्रणाली में कोई भी प्रकार की व्यवस्थाएं की जाएं, लेकिन उनको लागू करने से पहले उस प्रणाली के गुण-दोषों के बारे में भली प्रकार आकलन करके ही उन्हें लागू किया जाना चाहिए देश की शिक्षा के नीति नियंताओं को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि ओपन बुक एसेसमेंट का नवाचार पुराने कई प्रयोगों की तरह फाइलों में बंद होकर नहीं रह जाए। सीबीएसई ही नहीं, राज्यों के शैक्षिक मंडलों के भी कई प्रयोग विफल हुए हैं। कभी पांचवी आठवीं में परीक्षा बोर्ड बन जाता है, तो कभी हट जाता है। ऐसी चिंता व विफलता की आशंका नए मॉडल में न रहे, यह सुनिश्चित करना होगा।

फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

एक 'हां' से बदल सकती हैं अनगिनत जिंदगियां

[विश्व अंगदान दिवस: मृत्यु के बाद भी जीवन देने का संकल्प]

जीवन का सबसे अनमोल उपहार क्या हो सकता है ? वह क्षण, जब एक इंसान अपनी मृत्यु के बाद भी किसी के चेहरे पर मुस्कान बिखेर दे, किसी की धड़कनों को नया राग दे दे, किसी की आंखों में फिर से दुनिया की रंगत लौटा दे। विश्व अंगदान दिवस, जो हर साल 13 अगस्त को मनाया जाता है, हमें यही सिखाता है—करुणा, त्याग और मानवता की वह शक्ति, जो सीमाओं को तोड़कर जीवन को अमर बना देती है। यह दिन केवल एक तारीख़ नहीं, बल्कि एक आह्वान है—एक ऐसी पुकार, जो हमें याद दिलाती है कि हमारी एक छोटी-सी हां, किसी की जिंदगी को हमेशा के लिए बदल सकती है। भारत जैसे देश में, जहां लाखों लोग अंग प्रत्यारोपण की प्रतीक्षा में सांसें गिन रहे हैं, यह दिवस हमें एकजुट होकर मिथकों को तोड़ने, जागरूकता फैलाने और मानवता के लिए एक कदम आगे बढ़ाने की प्रेरणा देता है।

अंगदान एक ऐसा नेक कार्य है, जो न केवल किसी की जान बचाता है, बल्कि मानवता के प्रति विश्वास को भी मजबूत करता है। यह वह पुल है, जो अनजान दिलों को जोड़ता है, जो मृत्यु को जीवन में बदल देता है। फिर भी, भारत में अंगदान की स्थिति चिंताजनक है। नेशनल ऑर्गन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑर्गनाइजेशन (एनओटीटीओ) के अनुसार, हर साल करीब 1.8 लाख लोग गुर्दे की विफलता, 80,000 लोग यकृत की विफलता और 50,000 लोग हृदय रोगों के कारण प्रत्यारोपण की प्रतीक्षा में हैं। इसके बावजूद, भारत में अंगदान की दर प्रति दस लाख लोगों पर केवल 0.86 दाता है, जो वैश्विक औसत से कहीं कम है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के आंकड़े बताते हैं कि अंगों की कमी के कारण हर साल लाखों लोग असमय काल के गाल में समा जाते हैं। यह आंकड़ा न केवल एक सांख्यिकी है, बल्कि उन अनगिनत परिवारों की त्रासदी है, जो अपने प्रियजनों को खो देते हैं, सिर्फ इसलिए कि समय पर अंग उपलब्ध नहीं हो सका।

भारत में अंगदान को लेकर सबसे बड़ी बाधा है जागरूकता की कमी और गलत धारणाएं। कई लोग मानते हैं कि अंगदान उनकी धार्मिक मान्यताओं के खिलाफ है, जबकि हिंदू, इस्लाम, ईसाई, सिख और जैन जैसे सभी प्रमुख धर्म मानवता की सेवा को सर्वोच्च मानते हैं। उदाहरण के लिए, हिंदू धर्म में दान को परम पुण्य माना जाता है, और अंगदान को जीवन रक्षक दान के रूप में देखा जा सकता है। फिर भी, मिथक जैसे कि अंगदान से शरीर का अपमान होता है या यह अगले जन्म को प्रभावित करता है, लोगों को इस निर्णय से रोकते हैं। इसके अलावा, मृत्यु के बाद अंगदान के लिए परिवार की सहमति अनिवार्य है, और अक्सर भावनात्मक या सामाजिक दबाव के कारण परिवार इसकी अनुमति देने से हिचकते हैं। विश्व अंगदान दिवस का उद्देश्य इन मिथकों को तोड़ना और एक ऐसी संस्कृति विकसित करना है, जहां अंगदान को सम्मान और गर्व का प्रतीक माना जाए।

अंगदान की प्रक्रिया को समझना भी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जीवित अंगदान में व्यक्ति अपने गुर्दे या यकृत का हिस्सा दान कर सकता है, क्योंकि ये अंग पुनर्जनन की क्षमता रखते हैं। मृत्यु के बाद अंगदान में हृदय, फेफड़े, यकृत, गुर्दे, अग्न्याशय और आंखों जैसे अंग दान किए जा सकते हैं। मस्तिष्क मृत्यु (ब्रेन डेथ) के बाद अंगदान की प्रक्रिया सख्त चिकित्सकीय और कानूनी प्रोटोकॉल के तहत होती है, जो नैतिकता और पारदर्शिता सुनिश्चित करती है। भारत में ट्रांसप्लांट ऑफ ह्यूमन ऑर्गन्स एक्ट, 1994 इस प्रक्रिया को नियंत्रित करता है, और एनओटीटीओ जैसे संगठन अंग आवंटन को निष्पक्ष बनाते हैं। फिर भी, इस प्रक्रिया को और सरल करने की जरूरत है। यदि ऑनलाइन पंजीकरण को प्रोत्साहित किया जाए और परिवारों को पहले से इस निर्णय के बारे में जागरूक किया जाए, तो अंगदान की दर में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है।

विश्व अंगदान दिवस उन प्रेरणादायक कहानियों को भी सामने लाता है, जो मानवता की ताकत को दर्शाती हैं। 2020 में, चेन्नई के एक युवक ने मस्तिष्क मृत्यु के बाद और महिदपुर, उज्जैन के विश्वास जवाहर डोसी ने अपने अंग दान किए, जिससे कई लोगों को नया जीवन मिला। ऐसी कहानियां हमें यह विश्वास दिलाती हैं कि एक व्यक्ति का निर्णय कई जिंदगियों को रोशन कर सकता है। फिर भी, भारत में अंगदान की कमी का एक बड़ा कारण है संगठित प्रणाली का अभाव। कई अस्पतालों में प्रत्यारोपण की सुविधाएं सीमित हैं, और ग्रामीण क्षेत्रों में तो यह लगभग न के बराबर है। इसके अलावा, प्रशिक्षित चिकित्सकों और तकनीकी संसाधनों की कमी भी एक चुनौती है। यदि सरकार और गैर-सरकारी संगठन मिलकर काम करें, तो इस कमी को दूर किया जा सकता है।

भारत में अंगदान बढ़ाने के लिए स्पेन की ऑप्ट-आउट प्रणाली से प्रेरणा ली जा सकती है, जहां हर व्यक्ति स्वतः अंगदाता माना जाता है। भारत में यह लागू करना चुनौतीपूर्ण है, लेकिन मध्यप्रदेश सरकार का 1 जुलाई 2025 से अंगदाताओं के पार्थिव शरीर को गार्ड ऑफ ऑनर देने का आदेश एक प्रेरक कदम है। युवाओं को स्कूल, कॉलेज और सोशल मीडिया के जरिए जागरूक किया जा सकता है। प्रभावशाली हस्तियां, धार्मिक नेता और सामुदायिक संगठन इस मुहिम को गति दे सकते हैं। सरकार को अंगदाताओं के परिवारों को आर्थिक सहायता और सार्वजनिक सम्मान जैसे प्रोत्साहन देना चाहिए, ताकि यह नेक कार्य सामाजिक गौरव का विषय बने और अधिक लोग आगे आएं।

विश्व अंगदान दिवस हमें यह सिखाता है कि जीवन का असली अर्थ है दूसरों के लिए जीना। यह वह दिन है, जब हम अपने डर और संकोच को पीछे छोड़कर मानवता के लिए एक साहसिक कदम उठा सकते हैं। प्रत्येक अंगदाता एक अनाम नायक है, जो अपनी मृत्यु के बाद भी दूसरों के जीवन में उजाला बिखेरता है। भारत, जहां करुणा और सेवा की परंपरा गहरी जड़ों में बसी है, वहां अंगदान को एक सामाजिक आंदोलन का रूप देना समय की मांग है। यदि हम एकजुट होकर इस दिशा में काम करें, तो वह दिन दूर नहीं जब हर जरूरतमंद को नया जीवन मिलेगा। यह दिवस केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि एक संकल्प है—एक ऐसा संकल्प, जो हमें जीवन की कीमत समझाता है और हमें दूसरों के लिए जीने की प्रेरणा देता है। इस विश्व अंगदान दिवस पर हम यह प्रतिज्ञा लें कि हम न केवल अपने लिए, बल्कि दूसरों के लिए भी जिएंगे, और एक ऐसी दुनिया बनाएंगे, जहां हर धड़कन में मानवता की गूंज हो।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

1 अप्रैल 2026 से बदल जाएगी टैक्स फाइलिंग की प्रक्रिया

--- संजय अग्रवाला, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल

भारत की कर प्रणाली में एक बड़ा बदलाव आने वाला है, क्योंकि लोकसभा द्वारा पारित आयकर [सं. 2] संशोधन विधेयक 2025 को अगले वित्तीय वर्ष यानी 1 अप्रैल 2026 से लागू करने की तैयारी है। यह विधेयक न केवल छह दशक पुराने आयकर अधिनियम, 1961 को सरल बनाने का प्रयास है, बल्कि इसमें कई ऐसे प्रावधान शामिल हैं जो प्रत्यक्ष रूप से करदाताओं के लिए लाभकारी हो सकते हैं। सरकार ने इसे "S.I.M.P.L.E." यानी आसान और स्पष्ट कानून बनाने का दावा किया है, ताकि टैक्स फाइलिंग की प्रक्रिया सहज हो और अनावश्यक जटिलताओं से बचा जा सके।

नए बिल का सबसे अहम पहलू यह है कि मौजूदा आयकर अधिनियम के आकार और जटिलता को काफी हद तक घटा दिया गया है। अब पहले की तुलना में अध्याय और धाराओं की संख्या कम हो जाएगी, जिससे करदाताओं और टैक्स पेशेवरों को कानून समझने और लागू करने में आसानी होगी। शब्दों की संख्या लगभग आधी कर दी गई है, जिससे कानूनी भाषा अधिक स्पष्ट और संक्षिप्त हो गई है।

एक महत्वपूर्ण बदलाव यह है कि अगर कोई व्यक्ति समयसीमा से देर से रिटर्न फाइल करता है, तो भी वह बिना किसी पेनाल्टी के टीडीएस रिफंड का दावा कर सकेगा। पहले, देरी से रिटर्न भरने पर यह सुविधा उपलब्ध नहीं होती थी, लेकिन अब क्लॉज 263(1)(ix) को हटाकर इस नियम को लचीला बना दिया गया है। यह बदलाव विशेष रूप से उन लोगों के लिए राहतकारी है, जो अनजाने में समयसीमा चूक जाते हैं।

विधेयक में यूनिफाइड पेंशन स्कीम के सब्सक्राइबरों को टैक्स छूट का प्रावधान भी शामिल है। इसके अलावा, एलआईसी पेंशन फंड जैसी अनुमोदित पेंशन योजनाओं से मिलने वाले पूरी तरह कम्यूटेड पेंशन पर अब पूर्ण कर छूट दी जाएगी, चाहे प्राप्तकर्ता किसी भी प्रकार की नौकरी में हो या न हो। यह वरिष्ठ नागरिकों और सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए एक बड़ी राहत है।

एक और बड़ा बदलाव यह है कि अब "आकलन वर्ष" और "पिछला वर्ष" जैसी पारंपरिक लेकिन जटिल शब्दावली को हटाकर केवल "टैक्स ईयर" का इस्तेमाल किया जाएगा। यह शब्दावली न केवल सरल है बल्कि आम करदाता के लिए समझने में भी आसान होगी।

शिक्षा के लिए लिबरलाइज्ड रेमिटेंस स्कीम के तहत विदेश भेजी जाने वाली रकम पर, अगर यह किसी वित्तीय संस्था से वित्तपोषित है, तो अब 'शून्य' टीसीएस लगेगा। पहले इस तरह के ट्रांजैक्शनों पर टीसीएस का बोझ होता था, जो छात्रों और अभिभावकों के लिए आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण था।

हानि को आगे ले जाने और समायोजित करने के प्रावधानों में भी संशोधन किया गया है और "लाभकारी स्वामी" का संदर्भ हटा दिया गया है, जिससे इसे मौजूदा सेक्शन 79 के अनुरूप लाया जा सके।

हालांकि, खोज और जब्ती से जुड़े प्रावधानों में विशेष बदलाव नहीं हुए हैं, लेकिन डिजिटल सिस्टम तक पहुंच को लेकर स्पष्ट प्रावधान दिए गए हैं। टैक्स अधिकारी अब जरूरत पड़ने पर कंप्यूटर सिस्टम के एक्सेस कोड को ओवरराइड कर सकेंगे। हालांकि 'डिजिटल स्पेस' शब्द का सीधा उल्लेख क्लॉज में नहीं है, लेकिन इसकी परिभाषा कंप्यूटर सिस्टम में सम्मिलित की गई है।

रिटर्न फाइल करने की अंतिम तिथियों में भी बदलाव किया गया है। अब 31 जुलाई को सभी व्यक्तिगत करदाता और अन्य असेसी, 31 अक्टूबर को कंपनियां और ऑडिट की आवश्यकता वाले करदाता, और 30 नवंबर को वे करदाता जिनको धारा 172 के तहत रिपोर्ट देनी है, रिटर्न भर सकेंगे।

नया कानून यह भी स्पष्ट करता है कि इनकम टैक्स रिफंड का दावा केवल रिटर्न फाइल करके ही किया जा सकता है। क्लॉज 433 में कहा गया है कि हर रिफंड क्लेम आय विवरणी भरकर ही किया जाएगा।

कुल मिलाकर, आयकर [सं. 2] संशोधन विधेयक 2025 भारत की कर प्रणाली को सरल, पारदर्शी और करदाताओं के अनुकूल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे न केवल प्रक्रियात्मक बोझ घटेगा, बल्कि टैक्सपेयर्स को अधिक लचीलापन और न्यायसंगत व्यवहार मिलेगा। सरकार का उद्देश्य है कि टैक्स फाइलिंग एक सहज प्रक्रिया बने, जहां आम नागरिक बिना जटिल कानूनी भाषा में उलझे अपने कर दायित्वों का निर्वहन कर सके। इस बिल के लागू होने के बाद 2026-27 के टैक्स ईयर से देश में एक नई और सरल कर व्यवस्था की शुरुआत होने की उम्मीद है।

श्री आईजी गौशाला में जन्माष्टमी महोत्सव 16 को

हैदराबाद, कापरा बालाजी नगर स्थित श्री आईजी गौशाला में जन्माष्टमी महोत्सव कार्यक्रम 16 अगस्त को मनाया जाएगा इस अवसर पर श्री आईजी गौशाला में रात्रि 12.05 बजे कृष्ण भगवान जन्म उत्सव मनाया जाएगा। रात्रि 8.15 बजे से आईमाता जी मण्डली बालाजी नगर द्वारा भजन प्रस्तुत किया जाएगा। सभी धर्मप्रेमियो से अपील की गई है कि जन्माष्टमी के उत्सव व जागरण में पहुंच कर दर्शन, प्रसाद व गौमाता की सेवार्थ दानपुण्य का लाभ लें।

स्वतंत्रता दिवस को मद्देनज़र रखते हुए, पुलिस कमिश्नर अमृतसर द्वारा रेलवे स्टेशन पर सर्च के दौरान सुरक्षा प्रबंधों का लिया गया जायज़ा

शहर में विभिन्न नाका प्वाइंट्स पर स्पेशल नाकाबंदी की गई और काले शीशे/काली जालियां, हूटर/सायरन लगे वाहनों, मोटरसाइकिल पर ट्रिपल राइडिंग तथा संदिग्ध व्यक्तियों की जांच कर उनके विवरण नोट किए गए।

अमृतसर 12 अगस्त (साहिल बेरी)

आगामी स्वतंत्रता दिवस को ध्यान में रखते हुए, आज दिनांक 12-08-2025 को श्री गुरप्रीत सिंह भुल्लर, आईपीएस, पुलिस कमिश्नर, अमृतसर द्वारा रेलवे स्टेशन पर चल रहे सर्च ऑपरेशन और सुरक्षा प्रबंधों का जायज़ा लिया गया।

इस सर्च अभियान के दौरान श्री आलम विजय सिंह की देखरेख में, श्री हरपाल सिंह, एडीसीपी सिटी-2, अमृतसर, श्री ऋषभ भोला, एसीपी नॉर्थ, थाना सिविल लाइन अमृतसर के प्रभारी अधिकारी, जीआरपी, आरपीएफ, एसओजी और एआरपी सहित पुलिस बल की विभिन्न टीमों को बनाकर रेलवे स्टेशन की घेराबंदी की गई। स्टेशन के आने-जाने वाले सभी रास्तों और भीतर की पूरी तरह जांच की गई।

सर्च के दौरान स्निफर डॉग और एंटी-सैबोटेज पुलिस टीमों ने स्टेशन के हर कोने को बारीकी से जांचा। स्टेशन पर लगे सीसीटीवी कैमरों की कंट्रोल रूम से जांच की गई, यात्रियों के बैग आदि की चेकिंग हुई, संदिग्ध व्यक्तियों से गहन पूछताछ की गई और स्टेशन के आसपास तथा पार्किंग में खड़े वाहनों की वाहन ऐप के जरिए मालिकाना जांच की गई।

इसके अलावा कमिश्नरेट पुलिस, अमृतसर द्वारा शहर के एंट्री/एग्जिट और आंतरिक क्षेत्रों में 24 घंटे की शिफ्ट में नाकाबंदी की गई है। नाइट डॉमिनेशन बढ़ाकर, आने-जाने वाले सभी वाहनों की बारीकी से जांच और संदिग्ध व्यक्तियों से गहन पूछताछ कर उनकी पूरी जानकारी लेकर रिकॉर्ड किया जा रहा है। शहर की चारदीवारी के भीतर भीड़-भाड़ वाले बाज़ारों में पुलिस पार्टियों द्वारा पैदल गश्त सख्ती से की जा रही है और QRT व SWAT टीमों की संख्या बढ़ाकर उन्हें आधुनिक हथियारों से लैस कर संवेदनशील स्थानों पर तैनात किया गया है।

शहर में विभिन्न नाका प्वाइंट्स पर काले शीशे/काली जालियां, हूटर/सायरन लगे वाहनों को रोककर जांच की जा रही है। इनके चालान किए गए और वाहन चालकों को निर्देश दिया गया कि भविष्य में उल्लंघन होने पर उनके वाहन जब्त कर लिए जाएंगे। टू-व्हीलर/मोटरसाइकिल पर साइलेंसर में बदलाव कर तेज़ आवाज़ और पटाखे जैसी आवाज़ करने वाले मोटरसाइकिल, ट्रिपल राइडिंग तथा बिना हेलमेट टू-व्हीलर चलाने वालों के भी चालान किए गए।

कमिश्नरेट पुलिस, अमृतसर, सौहार्द, अमन-शांति और कानून-व्यवस्था को बनाए रखने के लिए दिन-रात मेहनत से ड्यूटी निभाकर जनता की सुरक्षा के लिए तत्पर है।

स्वास्थ्य विभाग द्वारा एच.आई.वी./एड्स जागरूकता अभियान की शुरुआत जागरूकता रैली निकालकर की गई

अमृतसर, 12 अगस्त (साहिल बेरी)

पंजाब सरकार के आदेशानुसार सिविल सर्जन डॉ. किरणदीप कौर की अगुवाई में सिविल सर्जन कार्यालय से एच.आई.वी./एड्स जागरूकता अभियान की शुरुआत जिला स्तरीय रैली निकालकर की गई। इस अवसर पर सिविल सर्जन अमृतसर डॉ. किरणदीप कौर ने बताया कि यह अभियान 12 अगस्त से 12 अक्टूबर तक 60 दिनों तक चलाया जाएगा। इस दौरान जिले के विभिन्न इलाकों में नुक्कड़ नाटकों, बैठकों और सेमिनारों के माध्यम से आम लोगों को जागरूक किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि एच.आई.वी./एड्स से बचाव के लिए जागरूकता और सावधानी ही इसका इलाज है। यदि किसी व्यक्ति में इसके लक्षण दिखाई दें तो वह तुरंत नजदीकी सरकारी अस्पताल या आई.सी.टी.सी. सेंटर पर जाकर जांच करवाए और ए.आर.टी. सेंटर से अपना इलाज शुरू कर सकता है। इन केंद्रों में मुफ्त जांच, इलाज और काउंसलिंग की सुविधा उपलब्ध है और मरीज का नाम, पता और रिकॉर्ड गोपनीय रखा जाता है।

डॉ. किरणदीप कौर ने कहा कि एड्स के मरीजों के साथ बिना किसी भेदभाव के व्यवहार करना चाहिए और उनके इलाज में सहयोग करना चाहिए। इस मौके पर जिला एड्स नियंत्रण अधिकारी डॉ. विजय गोतवाल ने लोगों को एड्स के कारण, लक्षण और बचाव के संबंध में विशेष जानकारी दी। इस अवसर पर जिला परिवार कल्याण अधिकारी डॉ. नीलम भगत, जिला एम.ई.आई.ओ. अमरदीप सिंह, डैपको स्टाफ की मैडम शिखा, मैडम अंजू तथा समूचा आई.सी.टी.सी. और ए.आर.टी. स्टाफ मौजूद रहा।

मेरी पहली मुहब्बत,एक अधूरी दास्तान।

वो चेहरा उसको पहले तो यहाँ कभी नहीं देखा था, लेकिन जिस दिन पहली बार नज़र आई, मेरी रग-ओ-पुख़्तगी जैसे थम गई। मेरी इस डायरी के पन्नों में अगर तुम अपने आपको तलाश करोगे, तो तुम्हें ये मेरी नहीं बल्कि कहीं न कहीं अपनी ही मोहब्बत की दास्तान लगेगी, क्योंकि इश्क़, मोहब्बत और प्यार, चाहे नाम कुछ भी हो, असल में एक ही जज़्बा है। उसका अंजाम कभी खुशी है तो कभी ग़म, और ये ग़म-ओ-सुख़न इंसान के इख़्तियार में नहीं। जिस्म की हद तक हम आज़ाद हैं, मगर दिल के मुसाफ़िर अपने मुक़द्दर के ग़ुलाम होते हैं। मोहब्बत की कहानी अक्सर वहीं जाकर टूट जाती है, जहाँ हम सोचना भी नहीं चाहते। ज़्यादातर दिल जो इश्क़ कर बैठते हैं, बाद में टूटकर बिखर जाते हैं, जैसे हवा के झोंके में सूखा पत्ता।मेरा प्यार भी अधूरा रहा, लेकिन मैं जानता हूँ कि सच्ची मोहब्बत न वक्त की मोहताज होती है, न ज़ात-पात की, न उम्र की, न दिन-रात की। दुनियावी रस्में और सरहदें उसे बांध नहीं सकतीं। तवारीख़ गवाही देती हैं कि कई मोहब्बतें जुदाई में भी मुकम्मल रही हैं। मगर इस सिलसिले में मेरी किस्मत बहुत तल्ख़ निकली। मैंने कई रातें और कई दिन ख्वाबों के महल बनाने में बिताए, लेकिन जब वो ख्वाब हक़ीक़त के संगरेज़ों से टकराए, तो मेरा वजूद भी बिखर गया। लोगों की ज़ुबान ने मुझे पागल कह दिया।वक्त के मरहम ने ज़ख्मों के ऊपरी निशान को तो भर दिया, मगर मोहब्बत के वो निशान अब भी ज़िंदा हैं। कभी-कभी उनका एहसास मुझे पकड़कर माज़ी में ले जाता है, उस जगह जहाँ मैंने उसे पहली बार देखा था। अल्लाह गवाह है, वो पहली नज़र कैसी बला थी वो लम्हा मोहब्बत के दरीचे में से छनकर आया, जिसमें सुकून भी था और दर्द भी, बहार भी और पतझड़ का अहसास भी।वो सर्दियों के दिन थे, जब गलियों में ठंडी हवाएं बेफिक्री से इठलाती फिरती थीं। उन दिनों मैं इस शहर के एक मुकामी स्कूल में मास्टर था। छुट्टी का वक्त करीब था कि अचानक मैंने खिड़की के बाहर से झांकता एक खूबसूरत चेहरा देखा, एक लड़की, जिसकी आँखों में अद्भुत चमक थी। मैंने सोचा ये कौन है, पहले तो इसे यहाँ कभी नहीं देखा। उसी पल उसकी नज़र मेरी नज़र से टकराई, और वो शरमाते हुए अपनी पलकें झुका गई, जैसे मेरी आँखों में उतर जाने से डर रही हो, या शायद इसीलिए उतर रही हो कि वहाँ हमेशा के लिए ठहर जाए।इतने में, मेरे साथ पढ़ाने वाले एक टीचर ,सलीम साहब, और उनकी बीवी, जो शहर के दूसरे स्कूल में अध्यापिका थीं, स्कूल की ओर आते दिखाई दिए। उनकी स्कूल का रास्ता मेरे स्कूल के सामने से ही होकर गुजरता था। उस ज़माने में सभी स्कूल तक पैदल ही जाया करते थे, बाइक का जमाना नहीं था,उस वक्त उनसे पूछना मुनासिब न समझा। छुट्टी का वक्त हो चुका था, बच्चे अपना बस्ता सँभाल रहे थे, और वो लड़की उन्हीं बच्चों के साथ खड़ी थी। मैंने सोचा शायद ये किसी के घर-बाहर से आई कोई मेहमान हो। बात आई-गई हो गई।

मगर अगले दिन, लगभग उसी वक्त, मैंने उसे फिर देखा। इस बार मैंने दिल की बेचैनी को दबा न सका और सलीम साहब से उसके बारे में पूछ ही लिया। वो मुस्कुराते हुए बोले, ₹अरे, ये तो मेरी बीवी की छोटी बहन है। हाल ही में यहाँ हिंदी गवर्नमेंट मिडिल स्कूल में दाख़िल हुई है, बहुत तेज़ है, हमारे शहर से आई है। और मैं सोच रहा था कि चूंकि तुम्हारा मैथ्स और साइंस का हाथ बहुत मजबूत है, तुम इसे पढ़ा दिया करो।₹

उस वक्त मेरे दिल में जैसे चुपके से एक सितारा गिरा हो, मगर होंठों पर बस इतना आया, ₹देखते हैं, वक्त मिला तो ज़रूर।₹ मैंने थोड़ा ना-नुकुर किया, मगर सलीम साहब ने इसरार किया, ₹भाई, ज़रा वक्त निकाल दो, अपने ही घर की बात है।₹ और मैंने हालात को गनीमत समझते हुए हामी भर दी।

शुरू में हमारी मुलाक़ातें सीमित थीं, सवाल-जवाब, गणित के फार्मूले, विज्ञान की बातें, मगर इन लफ्ज़ों के पीछे बहता था एक खामोश दरिया जो दोनों के दिलों तक पहुँचता था। वो पढ़ाई में तेज़ थी, मगर अकसर नज़रें झुका लेती। जब कभी मेरी ओर देखती, तो दिल में जैसे मौसम बदल जाता — कभी बसंत की नर्मी, कभी सावन की रिमझिम, कभी पतझड़ का सूना पन।

दिन गुजरते गए और हमारी मोहब्बत किताबों के पन्नों के बीच पलने लगी। अनकहे इकरार का आलम ये था कि एक सवाल पूछते वक्त उसका हाथ अचानक मेरे हाथ से छू जाए तो मेरी रूह में हलचल दौड़ जाती, और वो हलचल कई दिनों तक मेरे साथ रहती।

मगर मोहब्बत के आसमान पर बादल जमा होने लगे थे।एक दिन सलीम साहब की बीवी ने अनायास कहा, ₹हमने इसका रिश्ता अपने खानदान में तय कर दिया है, अगली बसंत में निकाह होगा।₹ उस लम्हे ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरी सांसें खींच ली हों, जैसे सारे ख्वाब किसी ने बेरहमी से तोड़कर रौंद दिए हों। वो चुप खड़ी थी, उसकी आँखों में एक सैलाब कैद था, मगर लब ख़ामोश थे।

निकाह से एक रोज़ पहले, वो आखिरी बार पढ़ाई के बहाने आई। हमने ज़्यादा कुछ नहीं कहा, बस निगाहें मिलीं और रूहों ने एक-दूसरे को ख़ामोशी से अलविदा कह दिया। मैंने अपनी डायरी से एक पन्ना निकालकर उसे दिया, जिस पर लिखा था।

₹अगर मोहब्बत सच्ची हो, तो जुदाई सिर्फ़ जिस्मों की होती है, रूहें हमेशा साथ रहती हैं...₹

और वो पन्ना उसने सीने से लगाकर रख लिया, फिर बिना पीछे मुड़े चली गई।

उसके बाद वक्त वक्त ने अपनी रफ्तार दिखा दी। तीस साल यूँ गुज़र गए जैसे हवा का झोंका। ज़िंदगी ने अनेक मोड़ दिए, लेकिन मेरे दिल का एक कोना हमेशा उसी लम्हे में ठहरा रहा, जहाँ पहली बार उसकी आँखों ने मेरा नाम लिखा था। अजीब इत्तिफ़ाक़ है कि आज भी मेरे पास उसका मोबाइल नंबर है। कई बार हिम्मत करके कॉल किया, मगर जैसे ही ₹Hello₹ की आवाज़ आई, दिल ने साथ छोड़ दिया और मैंने जल्दी से कह दिया, ₹गलत नंबर₹ — और फोन काट दिया।शायद डर था, कि कहीं मैं उसकी ज़िंदगी में एक अनचाही दस्तक न बन जाऊं, शायद ये भी कि मोहब्बत अगर पाक है, तो उसकी ख़ामोशी ही उसकी सबसे खूबसूरत शक्ल है। इन तीस वर्षों में, दिल में बस यही ख्वाहिश रही, एक बार उसे देख लेना, बस एक बार, न कोई शिकायत, न कोई सवाल, बस उसकी आँखों का वो सुकून फिर महसूस कर लेना।मैं आज भी कभी उसकी सहेलियों, कभी रिश्तेदारों से उसका हाल पूछ लेता हूँ। अगर कोई पुरानी तस्वीर मिल जाती है, तो दिन भर दिल जवान हो जाता है। शायद यही मोहब्बत का हासिल है, दिल जलता रहा, मगर रौशनी देता रहा। जुदाई सिर्फ़ जिस्मों की रही, रूह तो आज भी उसी की परिक्रमा करती है।और अब मेरी डायरी का ये आखिरी सफ़ा भी उसी के नाम है।

मेरी मोहब्बत, जो मुकद्दर में न थी, मगर हमेशा मेरी रही।अधूरी मोहब्बत,यादों की जंजीरों में क़ैद हो गई।मोहब्बत एक ऐसा जज़्बा है जो पूरा होने की शर्त पर नहीं, बल्कि सच्चे एहसास की गहराई पर ज़िंदा रहता है। कुछ मोहब्बतें मंज़िल तक नहीं पहुँच पातीं, फिर भी उनकी गूंज उम्र भर दिल और ज़हन में तैरती रहती है। वो वादे जो कभी पूरे न हो सके, वो ख्वाब जो आँखों में ही टूट गए, और वो लम्हे जो वक्त की रफ़्तार में पीछे छूट गए,दिल उन्हें भुलाने के बाद भी अपने अंदर सहेजे रखता है।

"वो मोहब्बतें जो मिल न सकीं, इश्क़ अधूरा ही रहा", इन अल्फ़ाज़ में वो दर्द दबा है जो वक्त बीत जाने के बाद भी कम होने का नाम नहीं लेता। शायद तक़दीर ने साथ न दिया, हालात ने राहें बदल दीं, मगर दिल वहीं ठहर गया, जहाँ कभी चाहत ने जन्म लिया था।

कसमें, वादे और ख्वाब , सब बेमानी लगने लगे जब मंज़िल न मिल सकी। वो हर लम्हा जो कभी दो दिलों के बीच पिरोया गया था, अब सिर्फ़ यादों की तस्वीर बनकर रह गया। फिर भी क्यों वो चेहरे, वो आवाज़ें, वो लम्हे ज़ेहन से मिटते नहीं? क्यों हर रात चाँद को देखकर दिल ये चाहता है कि वो उनका पैगाम पहुँचा दे— जैसे कोई चकोर चाँद के दीदार का प्यासा हो।जब मोहब्बत अधूरी रह जाए, तो वो एक रोग बन जाती है, न जीने देती है, न मरने।ज़िंदगी अपनी रफ़्तार से चलती रहती है, मगर दिल के किसी ख़ामोश कोने में वही नापाई मोहब्बत सांस लेती रहती है।शायद इसी लिए कहा जाता है, ₹कुछ यादें उम्र की क़ैद होती हैं, और कुछ चेहरे वक्त की धूल में भी नहीं मिटते।₹चाहे वो मोहब्बत कभी मुकम्मल न हुई हो, लेकिन उसकी पवित्रता और बेनियाज़ी आज भी रूह को छू जाती है। यह इश्क़ की नाकामी नहीं, बल्कि उसकी शिद्दत की जीत है कि वो आज भी दिल में जिंदा है।

— डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह "सहज़"

सीरवी समाज ट्रस्ट बालाजी नगर का सम्मेलन 24 अगस्त से

परिवहन विशेष न्यूज

हैदराबाद, बालाजी नगर,सीरवी समाज ट्रस्ट बालाजी नगर स्थित सीरवी समाज की आस्था का केन्द्र श्री आई माता मंदिर में समाज बन्धुओं के सानिध्य में श्री आई माताजी के 610वें अवतरण दिवस व 9 वां वार्षिक सम्मेलन पर दो दिवसीय कार्यक्रम 24 व 25 अगस्त को आयोजित किया जाएगा। इसके तहत भादवा सुदी एकम रविवार 24 अगस्त को रात्रि जागरण होगा। भादवा सुदी बीज (दूज) सोमवार 25 अगस्त को प्रातः वेला में पूजा-अर्चना व महा प्रसादी कार्यक्रम भव्य रूप से आयोजित किया जायेगा।

आज यहां जारी प्रेस विज्ञप्ति में अध्यक्ष जयराम पंवार, सचिव हीरालाल चोयल ने संयुक्त रूप से बताया कि हर वर्ष की भांति समाज बन्धुओं के सानिध्य में दो दिवसीय भादवा सुदी बीज महोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। रविवार 24 अगस्त को प्रातः वेला में श्री आई माता मंदिर को विशेष फूलों व लाइटिंग से सजाकर आई मां का विशेष श्रृंगार किया जाएगा। रात्रि 9.15 बजे से जागरण आयोजित किया जाएगा। इसमें भजन गायक हजारीनाथ एण्ड पार्टी पाली राजस्थान से माई के चरणों में भजनों के पुष्प अर्पित करेंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम दोपहर 11.15 बजे से 5 बजे तक महिला मंडल द्वारा होगा । इसमें भाग लेने वाले अपना नाम 18 अगस्त 2025 तक सचिव के पास दे सकते हैं। सोमवार 25 अगस्त को प्रातः 9.15 बजे ज्योत प्रज्वलित कर पूजा अर्चना, स्वागत का कार्यक्रम होगा। समाज बन्धुओं द्वारा आई मां के चरणों में श्रीफल भेंटकर परिवार के सुख-समृद्धि की कामना की जाएगी। समाज के बाल कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए जायेंगे। प्रातः 10 बजे से धर्मसभा का आयोजन कर अध्यक्ष जयराम पंवार की अध्यक्षता में मुख्य अतिथियों, पधारे मेहमानों का स्वागत होगा। कोषाध्यक्ष नरेश कुमार

सोलंकी द्वारा आय-व्यय का विवरण दिया जाएगा। पदाधिकारियों के सम्मान, विचार व्यक्त करने, सचिव हीरालाल चोयल द्वारा समाज में किये गये विकासशील कार्यों का विवरण देने के बाद समाज बन्धुओं व भक्तों के लिए भोजन प्रसादी की व्यवस्था मंदिर प्रांगण में रहेगी। बीज महोत्सव कार्यक्रम में पदाधिकारी व कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्य पधारे भक्तों की सेवार्थ उपस्थित रहेंगे। समाज बन्धुओं से निवेदन है कि बीज महोत्सव पर अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर सपरिवार कार्यक्रम में भाग लें। अध्यक्ष के सम्बोधन, धन्यवाद प्रस्ताव, महाआरती के पश्चात कार्यक्रम का समापन होगा।

झारखंड में जेलों के 81% खाली पदों को 31 सितंबर तक भरें : हाईकोर्ट

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

हाईकोर्ट का मुख्य सचिव को सख्त निर्देश,अगली तिथी 7 अक्तूबर को स्टेट्स रिपोर्ट पेश करें

रांची, झारखंड हाईकोर्ट ने राज्य में जेलों की व्यवस्था में सुधार और मॉडल जेल मैनुअल को लेकर स्वतः संज्ञान से दर्ज जनहित याचिका पर सुनवाई की. चीफ जस्टिस तरलोक सिंह चौहान और जस्टिस राजेश शंकर की खंडपीठ ने मामले की सुनवाई के दौरान एमीकस क्यूरी और राज्य सरकार का पक्ष सुना. खंडपीठ ने राज्य की जेलों में 81 प्रतिशत से अधिक पद खाली रहने को गंभीरता से लिया और मुख्य सचिव को सख्त निर्देश दिया. खंडपीठ ने मुख्य सचिव को निर्देश दिया कि जेलों में रिक्त सभी पदों को 30 सितंबर तक भरा जाये. इसके साथ ही अगली सुनवाई में स्टेटस रिपोर्ट दायर किया जाए. इस मामले की अगली सुनवाई के लिए खंडपीठ ने सात अक्तूबर की तिथि निर्धारित की.इससे पूर्व मामले के एमीकस क्यूरी अधिवक्ता मनोज टंडन ने पक्ष रखते हुए झारखंड हाईकोर्ट की खंडपीठ को बताया कि लंबे समय से जेल सुधार को लेकर सुनवाई हो रही है. जुलाई 2023 में यह बात सामने आयी थी कि राज्य की जेलों में 81 प्रतिशत पद खाली हैं. कोर्ट ने रिक्त पदों को भरने का आदेश दिया था, लेकिन कोई कार्रवाई सरकार के स्तर से नहीं हो रही है।

जेल सुधार और मॉडल जेल मैनुअल के मामले में झारखंड हाईकोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया था. पिछली सुनवाई में कोर्ट ने सरकार से पूछा था कि मॉडल जेल मैनुअल के मामले में क्या कार्रवाई हुई है? सुप्रीम कोर्ट के आदेश के तहत जेल की व्यवस्था में सुधार तथा मॉडल जेल मैनुअल बनाया जाना है. सरकार ने कोर्ट के निर्देश के बाद जेल मैनुअल बना दिया ।

'थार' चालक का लाइसेंस होगा रद्द: परिवहन विभाग करेगा सख्त कार्रवाई

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : भुवनेश्वर थार हिट एंड रन मामला, थार चालक का लाइसेंस रद्द होगा। परिवहन विभाग उठाएगा सख्त कदम। RTO-2 ने लाइसेंस रद्द करने की जानकारी दी।हिट एंड रन मामले में शामिल थार वाहन की पहचान जटनी इलाके से हुई है। कल थार की टक्कर में दो लोगों की मौत हो गई थी।आठ साल की बच्ची की मौत के बाद उसकी माँ को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अस्पताल में इलाज के दौरान उसकी भी मौत हो गई। इस घटना को लेकर तनाव बढ़ गया था। कल मृतका के परिजनों ने टायर जलाकर और विरोध प्रदर्शन कर सड़क जाम कर दी थी।

पुलिस प्रशासन के बीच समझौता होने के बाद सड़क खुल गई। और उसी थार गाड़ी के चालक के बारे में और जानकारी मिली है। हालाँकि जानकारी मिली है कि जिस थार से हादसा हुआ वह जटनी इलाके की थी, लेकिन आरोपी अभी भी फरार है।

मतदाता सूची गहन पुनरीक्षण(एस आई आर) को भाकपा माले ने झारखंड में किया विरोध

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

मुख्य निर्वाचन अधिकारी से मिले प्रतिनिधि

रांची , बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) का बिहार से टूटकर बना झारखंड में विरोध शुरू हो गया है. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) लिबरेशन ने सोमवार (11 अगस्त) को राजधानी रांची में इस प्रक्रिया को वापस लेने, डिजिटल मतदाता सूची को सार्वजनिक करने और मतदान के सीसीटीवी फुटेज को सुरक्षित रखने की 45 दिन की सीमा को हटाने की मांग की.

भाकपा (माले) लिबरेशन के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) के रवि कुमार से मुलाकात की और उन्हें एक ज्ञापन सौंपा. पार्टी के झारखंड राज्य सचिव मनोज भक्त ने कहा, 'बिहार में चुनाव से कुछ महीने पहले एसआईआर प्रक्रिया के दौरान मतदाता सूची से 65 लाख नामों का हटाया जाना संदेह पैदा करता है. हटाये गये नामों और इसके कारणों को सार्वजनिक किया जाना चाहिए.'

उन्होंने कहा, 'निर्वाचन आयोग पर निष्पक्ष चुनाव कराने और इस संस्था में जनता का विश्वास बहाल करने की दोहरी जिम्मेदारी है.' संसद के दोनों सदनों में एसआईआर के खिलाफ विपक्ष विरोध प्रदर्शन कर रहा है और आरोप लगा रहा है कि निर्वाचन आयोग की इस कवायद का उद्देश्य इस साल के अंत में होने वाले बिहार विधानसभा चुनावों से पहले मतदाताओं को मताधिकार से वंचित करना

रेलवे की गैरजिम्मेदारी: लोहे का खंभा गिरने से छात्र की मौत

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : रेलवे की लापरवाही के कारण संबलपुर बुधराजा उच्च प्राथमिक विद्यालय के एक मासूम छात्र दीपू यादव (12) की अकारण ही जान चली गई। इस घटना को लेकर आज संबलपुर जिला मुख्य चिकित्सालय परिसर में अकारण ही उत्तेजना का माहौल रहा। वर्तमान में संबलपुर फाटक-खेतराजपुर रेलवे लाइन पर विकास कार्य चल रहा है।बुधराजा हायर सेकेंडरी स्कूल रेलवे लाइन के किनारे स्थित है। स्कूल और रेलवे के बीच केवल स्कूल की दीवार है। सोमवार दोपहर 3:45 बजे रेलवे स्कूल के पास एक बड़े लोहे के खंभे को गैस कटर से काट रहा था। हालाँकि, इसके लिए कोई सुरक्षा उपाय नहीं किए गए थे। लोहे का खंभा कटने के बाद, वह टूट गया और कक्षा छह के छात्र दीपू यादव पर गिर गया, जो स्कूल की दीवार के अंदर पेशाब करने आया था। लोहे का टुकड़ा दीपू के पैर पर लगने से वह नीचे गिर गया और उसके सिर में गंभीर चोटें आईं। उस समय पास में मौजूद कान्हू यादव ने तुरंत स्कूल के अधिकारियों को सूचित किया। दीपू को गंभीर हालत में बचाया गया और जिला मुख्यालय अस्पताल ले जाया गया, जहाँ डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। प्रत्यक्षदर्शी कान्हू यादव ने कहा, ₹रेलवे द्वारा नियोजित दो कर्मचारी इस लोहे के खंभे को काट रहे थे। उन्होंने सुरक्षा के लिए कोई कदम नहीं उठाया। लोहे के खंभे से कोई रस्सी नहीं बंधी थी।₹ स्कूल की शिक्षिका प्रज्ञा प्रधान ने कहा, दीपू पेशाब करने के लिए कक्षा से दीवार पर आया था। लेकिन, रेलवे के लोग दीवार पर काम कर रहे थे और उन्होंने हमें इसकी सूचना नहीं दी। इसीलिए आज इतना बड़ा हादसा हुआ, उन्होंने कहा। स्कूल ने रेलवे के खिलाफ अईंठापाली थाने में शिकायत दर्ज कराई है। उधर, घटना की जानकारी मिलने पर दीपू के पिता देवकुमार यादव समेत बिहारीपाड़ा के कई लोग जिला मुख्यालय अस्पताल पहुंचे। घटना को लेकर अस्पताल परिसर में काफी उत्साह का माहौल रहा। पूर्वी तट रेलवे के संबलपुर मंडल के अतिरिक्त मंडल रेल प्रबंधक (एडीआरएम) ने पहुंचकर परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की। स्थानीय लोग परिवार के एक सदस्य के लिए रेलवे में नौकरी और 30 लाख रुपये मुआवजे की मांग कर रहे थे। लोगों का कहना था कि जब तक लिखित आश्वासन नहीं मिलता, वे शव परीक्षण नहीं होने देंगे। विस्तृत रिपोर्ट के अनुसार, रेलवे ने मृतक छात्र के परिवार को संविदा पर नियुक्ति के साथ 10 लाख रुपये की अनुकंपा सहायता देने का वादा किया है। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने छात्र की मौत पर गहरा दुख व्यक्त किया और मुख्यमंत्री राहत कोष से 4 लाख रुपये की सहायता देने की घोषणा की। इसी तरह, केंद्रीय शिक्षा मंत्री और संबलपुर के सांसद धर्मेंद्र प्रधान ने शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की और प्रार्थना की कि मां उन्हें धैर्य और साहस प्रदान करें।

कोल्हान कमिश्नरी में परिवहन विभाग की नियम तोड़ने वालों के साथ सलाह- मशविरा ,शपथ

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

पश्चिमी सिंहभूम जिला मुख्यालय ताम्बों चौक पर जिला परिवहन पदाधिकारी श्री गौतम कुमार के नेतृत्व में सड़क सुरक्षा के निमित्त, नियम तोड़ने वालों का काउंसलिंग किया गया और भविष्य में यातायात नियमों का अनुपालन करने का शपथ भी दिलाई गयी । इस दौरान जिला परिवहन पदाधिकारी के द्वारा वाहन चालकों को संबोधित करते हुए कहा गया कि सड़क सुरक्षा तथा यातायात नियमों का अनुपालन नहीं करने की वजह से दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती है।

जिला परिवहन पदाधिकारी ने कहा कि जिले में होने वाले दुर्घटनाओं में सर्वाधिक दुर्घटना दो पहिया वाहनों का होता है और हेलमेट न पहनने की वजह से चालक/सवार की जान भी चली जाती है। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन सड़क दुर्घटना पर अंकुश लगाने के लिए लगातार प्रयासरत और इसी कड़ी में आज यातायात नियमों का अनुपालन नहीं करने वाले वाहन चालकों का काउंसलिंग किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भविष्य में अगर इनके द्वारा यातायात नियमों का उल्लंघन अथवा बिना हेलमेट के दो पहिया वाहन का परिचालन किया जाता है, तो ऐसे में संबंधित व्यक्ति पर कड़ाई के साथ दंडात्मक कार्रवाई भी सुनिश्चित की जाएगी। मौके पर यातायात प्रभारी श्री संतोष कुमार के द्वारा सुरक्षित आवागमन के लिए सभी चालकों से यातायात नियमों का पालन करने तथा नशे के हालत में वाहन नहीं चलाने का अपील किया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023